NEET Bulletin Helpline No.
8800265682
Completely NEET Counselling Guidance specially for
MBBS BDS BAMS BHMS BUMS
B.Sc Nursing GNM D.| B. Pharma
BPT MPT D|BMLT D.Optometry
OT Technician Clinical Research
B.Sc Ag. Micro Bio Bio Chem
Bio tech. BNYS etc.

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक
विजडम इंडिया
निर्भीक और बेबाक अभिव्यक्ति
EMAIL: sheelshukla100@gmail.com
R.N.I.NO.-UPHIN/2011/41608
लखनऊ से प्रकाशित

वर्ष: 14 अंक: 122 लखनऊ, बुधवार 18 दिसंबर 2024 मूल्य: 02 रुपये पृष्ठ- 08

उत्तर प्रदेश के संभल में बिजली चोरी पर योगी सरकार की कार्रवाई, 1,250 मामले दर्ज, 5.2 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया गया

अधिकारियों ने सोमवार को बताया कि पिछले तीन महीनों में संभल जिले में उत्तर प्रदेश पुलिस ने बिजली चोरी से संबंधित 1,250 एफआईआर दर्ज की हैं, जिनमें 5.2 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया गया है।

संभल (एजेंसी) संभल में बिजली चोरीरू अधिकारियों ने सोमवार को बताया कि पिछले तीन महीनों में संभल जिले में उत्तर प्रदेश पुलिस ने बिजली चोरी से संबंधित 1,250 एफआईआर दर्ज की हैं, जिनमें 5.2 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया गया है। पिछले दो दिनों में ही अधिकारियों ने बिजली चोरी के मामलों में 90 एफआईआर दर्ज की हैं, जिसमें चार मस्जिदों और एक मदरसे में हुई घटनाएं शामिल हैं। इस दौरान लगाया गया कुल जुर्माना लगभग 1.75 करोड़ रुपये है।

इससे पहले, संभल के मस्जिदों, मदरसों और रिहायशी इलाकों में बड़े पैमाने पर बिजली चोरी का खुलासा हुआ था, जिसके बाद अधिकारियों ने अपनी कार्रवाई तेज कर दी थी। जिला मजिस्ट्रेट (डीएम) और पुलिस अधीक्षक (एसपी) ने सुबह 5 बजे संभल सदर के नखासा और दीपासराय इलाकों में छापेमारी की। कार्रवाई के दौरान एक मस्जिद से बिजली चोरी में इस्तेमाल होने वाले उपकरण बरामद हुए।

छापेमारी के बाद डीएम डॉ. राजेंद्र पेंसिया ने कहा था कि बिजली चोरी के खिलाफ इस तरह का अभियान चलाया जाएगा और एक भी घर में बिजली चोरी नहीं होने दी जाएगी। डीएम ने कहा था, ष्करीब 150–200 घरों में बिजली चोरी पकड़ी गई है। मस्जिद, मदरसे और घरों में बिजली चोरी पकड़ी गई है। बिजली चोरी करने वालों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई जाएगी और उनसे वसूली भी की जाएगी। डीएम ने कहा था कि वह सुबह 5 बजे लाउडस्पीकर चेक करने पहुंचे थे। उन्होंने देखा कि इलाके में बड़े पैमाने पर अवैध कनेक्शन लगे हुए थे। उन्होंने कहा, ष्जांच के दौरान बड़े पैमाने पर बिजली चोरी पकड़ी गई। हमने करीब 150–200 घरों और उसके आसपास की 5–6 मस्जिदों की जांच की है। बिजली चोरी पकड़ी गई है। प्रशासन को एक मस्जिद से बड़ी मात्रा में बिजली के तार और अन्य उपकरण मिले हैं। इससे आसपास के इलाके में बिजली चोरी की जा रही थी। इस बीच, नगर हिंदू सभा के संरक्षक विष्णु शरण रस्तोगी के अनुसार, संभल के खग्गू सराय इलाके में भगवान शिव का मंदिर, जो कथित तौर पर 1978 से बंद था, हाल ही में फिर से खोला गया।अतिरिक्त एसपी श्रीश चंद्र ने कहा, ष्जांच के दौरान पाया गया कि कुछ लोगों ने मंदिर पर मकान बनाकर अतिक्रमण कर लिया था...मंदिर की सफाई कर दी गई है और मंदिर पर अतिक्रमण करने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी. ..मंदिर में भगवान शिव और भगवान हनुमान की मूर्तियां हैं.

पीएम मोदी ने श्रीलंका के राष्ट्रपति संग की प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता

दिल्ली हवाई अड्डे पर केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री एल मुरुगन ने दिसानायके का स्वागत किया। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि दिसानायके की यात्रा भारत-श्रीलंका संबंधों को और गहरा करने तथा जन-केंद्रित साझेदारी को गति देने का एक अवसर होगी।

नई दिल्ली (एजेंसी) श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमार दिसानायके सितंबर में शीर्ष पद संभालने के बाद अपनी पहली विदेश यात्रा पर रविवार को तीन दिवसीय दौरे पर भारत पहुंचे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमारा डिसनायके ने दिल्ली के हैदराबाद हाउस में मुलाकात की। जिसके बाद प्रधानमंत्री मोदी ने श्रीलंकाई राष्ट्रपति के साथ प्रतिनिधिमंडल स्तर की वार्ता की। दिल्ली हवाई अड्डे पर केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण राज्य मंत्री एल मुरुगन ने दिसानायके का स्वागत किया। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि दिसानायके की यात्रा भारत–श्रीलंका संबंधों को और गहरा करने तथा जन–केंद्रित साझेदारी को गति देने का एक अवसर होगी। उन्होंने केंद्रीय मंत्री द्वारा दिसानायके का स्वागत करने की तस्वीरें साझा करते हुए कहा, गर्मजोशी भरा और विशेष स्वागत! भारत की उनकी राजकीय यात्रा का दूसरा दिन। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रपति भवन में श्रीलंकाई राष्ट्रपति दिसानायके का स्वागत किया। 15 दिसंबर से 17 दिसंबर तक भारत की अपनी पहली राजकीय यात्रा पर, श्रीलंकाई राष्ट्रपति ने संयुक्त रक्षा सेवाओं द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर का भी निरीक्षण किया।इस अवसर पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिसानायके ने अपने–अपने मंत्रियों, राजनयिकों और अधिकारियों से एक–दूसरे का परिचय कराया। जयशंकर ने श्रीलंकाई राष्ट्रपति के साथ अपनी बैठक में भारत की पड़ोसी प्रथम नीति के साथ–साथ सागर आउटलुक में द्वीप राष्ट्र की प्रमुख भूमिका को स्वीकार किया। विदेश मंत्री ने इस बात पर भी जोर दिया कि पीएम मोदी के साथ डिसनायके की बातचीत से दोनों देशों के बीच अधिक सहयोग को बढ़ावा मिलेगा।

राहुल गांधी ने विदेश मंत्री को लिखा पत्र, श्रीलंका की जेलों में बंद भारतीय मछुआरों की रिहाई का उठाया मुद्दा

नयी दिल्ली (एजेंसी) लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने विदेश मंत्री एस जयशंकर ने पत्र लिख कर श्रीलंका के जेल में बंद भारतीय मछुआरों की रिहाई का मुद्दा उठाया है। कांग्रेस सांसद ने अपने पत्र में लिखा, हम श्रीलंकाई राष्ट्रपति की भारत की पहली आधिकारिक यात्रा की मेजबानी करने की तैयारी कर रहे हैं, मैं भारत सरकार से अनुरोध करता हूं कि वह गलती से अंतर्राष्ट्रीय समुद्री सीमा (आईएमबीएल) पार करने वाले भारतीय मछुआरों के मुद्दे को उठाएं और उनकी जल्द रिहाई सुनिश्चित करें।

राहुल गांधी ने केंद्र से मछुआरों पर लगाए गए जुर्माने को माफ करने और जब्त की गई मछली पकड़ने वाली नौकाओं की रिहाई सुनिश्चित करने का भी आग्रह किया। ताकि कोलंबो के साथ लंबित मुद्दों को हल करने के लिए संयुक्त कार्य समूह जैसी अंतर–सरकारी व्यवस्थाओं की नियमित बैठक सुनिश्चित हो सकें। श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमार दिसानायके 15 से 17 दिसंबर तक तीन दिवसीय भारत यात्रा पर हैं। सितंबर में पदभार ग्रहण करने के बाद यह दिसानायके की पहली द्विपक्षीय भारत यात्रा है।

खाद के मुद्दे को लेकर कांग्रेस सदस्यों ने हंगामे के बाद किया बहिष्कार

भोपाल (एजेंसी) मध्यप्रदेश विधानसभा में आज मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस के सदस्यों ने राज्य में खाद संकट व्याप्त होने का आरोप लगाते हुए जमकर हंगामा किया और सदन की कार्यवाही का बहिष्कार किया। शून्यकाल के दौरान नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने राज्य में खाद संकट का मामला उठाया और कहा कि सरकार खाद की व्यवस्था नहीं कर रही है। किसान परेशान है और फसलों की बोनी भी नहीं हो पा रही है। विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि इस मामले में चर्चा प्रस्तावित है, इसलिए इस मुद्दे को लेकर तब बोला जा सकता है। लेकिन नेता प्रतिपक्ष खाद मामले पर अपनी बात बोलते रहे।इसी बीच संसदीय कार्य मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि आज ही के दिन बंगलादेश का उदय हुआ था और 93 हजार पाकिस्तानी सैनिकों ने भारतीय सेना के सामने समर्पण किया था, इसलिए वे भारतीय सेना को बधाई प्रेषित करने का प्रस्ताव रखते हैं। श्री सिंघार ने सत्तारूढ़ दल भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सदस्यों की ओर मुखातिब होते हुए कहा कि आप लोग बंगलादेश से अपने लोगों को तो बचा नहीं पा रहे हैं। आप लोगों को खाद संकट पर चर्चा करना चाहिए।इस बीच सत्तारूढ़ दल भाजपा और विपक्षी दल कांग्रेस के सदस्य एकसाथ बोलने लगे और सदन शोरगुल में डूब गया। कांग्रेस के सदस्य सरकार के खिलाफ नारेबाजी करने लगे, तो भाजपा के सदस्यों ने इसका प्रतिकार करने का प्रयास किया। अंततरू इस मामले को लेकर कांग्रेस के सदस्यों ने सदन की कार्यवाही का बहिष्कार कर दिया। इसके साथ ही सभी सदस्य नारेबाजी करते हुए सदन से बाहर चले गए। इसके उपरांत सदन की कार्यवाही आगे बढ़ी।विधानसभा का पांच दिवसीय शीतकालीन सत्र आज प्रारंभ हुआ है। विपक्षी दल कांग्रेस के तेवर आक्रामक दिखायी दे रहे हैं। कांग्रेस के नेता और कार्यकर्ता आज ही "विधानसभा घेराव" आंदोलन कर रहे हैं जिसके चलते यहां जवाहर चौक क्षेत्र में प्रदेश भर से पार्टी कार्यकर्ता और नेता पहुंचे हैं। सभा के बाद ये सभी विधानसभा की ओर कूच करेंगे। हालाकि पुलिस प्रशासन ने भी सुरक्षा संबंधी सभी उपाय किए हैं। इसके पहले सदन की कार्यवाही की शुरूआत में दिवंगत पूर्व सदस्यों और गणमान्य नागरिकों को सदन की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

भाजपा झुग्गी में रहने वालों को अछूत मानती है : आतिशी

नयी दिल्ली (एजेंसी) दिल्ली की मुख्यमंत्री आतिशी ने सोमवार को आरोप लगाया कि भाजपा झुग्गी वालों के साथ मजाक कर रही है। भाजपा झुग्गी वालों को अछूत मानती है। भाजपा वाले पहले झुग्गी में जाते हैं और बाद में उन्हीं झुग्गियों पर बुलडोजर चलवाते हैं। भाजपा वाले झुग्गियों में जाकर लोगों के नाम और नंबर लेकर आते हैं और उनका वोट कटवा देते हैं। मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया है कि कल पीएम मोदी पूसा इंस्टीट्यूट के दौरे पर गए थे। इस दौरान केंद्र सरकार ने रास्ते में पड़ने वाली झुग्गियों को कपड़े से छिपा दिया था। इससे पहले जी–20 के दौरान भी बीजेपी ने झुग्गियों को ढक दिया था और बाहर पुलिस तैनात कराई थी। उन्होंने झुग्गी वालों को सचेत करते हुए कहा कि वो बीजेपी से सावधान रहें। बीजेपी वाले आपको कपड़े और पैसे देंगे। लेकिन, आपका जीवन इससे नहीं चलेगा। आपका जीवन अरविंद केजरीवाल की फ्री बिजली–पानी, मोहल्ला क्लीनिक, सरकारी स्कूलों में अच्छी पढ़ाई, महिलाओं को मिलने वाले 2,100 रुपए से चलेगा। भाजपा वाले जिस झुग्गी बस्तियों में जा रहे हैं, वहां के लोग सावधान रहें क्योंकि, इससे पहले सुंदर नगरी की झुग्गी में बीजेपी नेता गए थे। वहां रुके थे। उनके साथ खाना खाया था। बच्चों के साथ गेम खेला। उसके तीन महीने बाद कोर्ट से ऑर्डर लेकर उस झुग्गी को तुड़वा दिया। उसके बाद बीजेपी वाले शाहदरा की अम्बेडकर झुग्गियों में गए, उनके नंबर लिए और उसके बाद उनके वोट कटवा दिए।आतिशी ने झुग्गी वालों को सर्तक करते हुए कहा है कि मैं झुग्गियों में रहने वाले भाई–बहनों से अपील करती हूं कि उनके बहकावे में ना आए। कल भी बीजेपी वालों ने एक झुग्गी बस्ती में सूट सलवार दिए। कुछ दिन बाद वह पैसे भी बांटेंगे। मैं इन लोगों से अपील करती हूं कि आप लोग इन लोगों से सबकुछ ले लो, लेकिन उनको वोट मत देना। झुग्गी–बस्ती में रहने वालों के साथ, दिल्ली के लोगों के लिए अगर किसी ने काम किया है तो वो है अरविंद केजरीवाल हैं। जब से दिल्ली में केजरीवाल की सरकार बनी है तब से वो झुग्गी बस्तियों में रहने वालों को परिवार का हिस्सा मानते हैं।

आरजी कर मामला: वरिष्ठ डाक्टरों ने कोलकाता में 10 दिवसीय प्रदर्शन की योजना बनाई

कोलकाता (एजेंसी) आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में महिला ट्रेनी डॉक्टर की रेप और हत्या मामले में दो आरोपियों को जमानत मिलने के बाद सियासत जारी है। इसी बीच, पश्चिम बंगाल संयुक्त चिकित्सक मंच, राज्य के वरिष्ठ डॉक्टरों के संगठन कोलकाता की एक विशेष अदालत द्वारा आरोपियों दी गई डिफॉल्ट जमानत की निंदा करने के लिए मंगलवार से 10 दिवसीय विरोध प्रदर्शन की योजना बना रहा है। दरअसल, संदीप घोष और अभिजीत मंडल पर एक ट्रेनी डॉक्टर के साथ हुए जघन्य बलात्कार और हत्या के मामले में सबूतों के साथ छेड़छाड़ करने का आरोप है। दोनों आरोपियों को जमानत मिल गई है क्योंकि सीबीआई उनकी गिरफ्तारी के दिन से 90 दिनों के भीतर उनके खिलाफ आरोप पत्र दायर करने में विफल रही। मध्य कोलकाता के डोरिना क्रॉसिंग पर यह विरोध–प्रदर्शन मंगलवार से शुरू होकर 26 दिसंबर तक जारी रहेगा। डॉक्टरों के संगठन ने पहले ही मध्य कोलकाता में विरोध प्रदर्शन के लिए मंच बनाने के लिए कोलकाता पुलिस से अनुमति मांगी है। एसोसिएशन के एक पदाधिकारी ने बताया कि पुलिस की अनुमति न मिलने की स्थिति में फोरम इसके लिए कलकत्ता उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाएगा। बता दें कि पिछले शुक्रवार को कोलकाता की विशेष अदालत ने आरजी कर के पूर्व और विवादास्पद प्रिंसिपल संदीप घोष और ताला पुलिस स्टेशन के पूर्व एसएचओ अभिजीत मंडल को सीबीआई द्वारा उनकी गिरफ्तारी के 90 दिनों के भीतर आरोप पत्र दाखिल करने में विफल रहने के बाद डिफॉल्ट जमानत दे दी। दोनों पर जांच को गुमराह करने और सबूतों के साथ छेड़छाड़ करने का आरोप लगाया गया था। सीबीआई ने अब तक इस मामले में केवल एक आरोप पत्र दायर किया है, जिसमें संजय रॉय को बलात्कार और हत्या के अपराध में एकमात्र मुख्य आरोपी के रूप में पहचाना गया है। जूनियर डॉक्टरों के एक निकाय, पश्चिम बंगाल जूनियर डॉक्टर्स फ्रंट ने पहले ही आम लोगों को शामिल करते हुए मामले में अपने आंदोलन की अगली पंक्ति की रूपरेखा तैयार कर ली है। उन्होंने पिछले शनिवार को कोलकाता के उत्तरी बाहरी इलाके में साल्ट लेक में सीबीआई की विशेष अपराध इकाई के कार्यालय में एक विरोध रैली का आयोजन किया था।

जब संविधान लागू हुआ तब आरएसएस ने किया था विरोध, ऐसे लोग आज हमें पाठ पढ़ा रहे हैं : मल्लिकार्जुन खरगे

नयी दिल्ली (एजेंसी) भारतीय संविधान को अपनाने की 75वीं वर्षगांठ पर राज्यसभा में बोलते हुए कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि जो लोग राष्ट्रीय ध्वज और संविधान का अपमान करते हैं, वो हमें संविधान का पाठ पढ़ा रहे हैं। राज्यसभा नेता प्रतिपक्ष खरगे ने अपने संबोधन में कहा, 1949 में आरएसएस नेताओं ने भारत के संविधान का विरोध किया क्योंकि यह मनुस्मृति पर आधारित नहीं था। न तो उन्होंने संविधान को स्वीकार किया और न ही तिरंगे को स्वीकार किया। 26 जनवरी 2002 को पहली बार मजबूरी में आरएसएस मुख्यालय पर तिरंगा फहराया गया था क्योंकि अदालत का आदेश था।उन्होंने कहा कि जो लोग राष्ट्रीय ध्वज का अपमान करते हैं, संविधान का अपमान करते हैं, जिस दिन संविधान लागू हुआ उस दिन इन्होंने महात्मा गांधी और भीमराव अंबेडकर का पुतला जलाया, अब वो लोग हमें संविधान का पाठ पढ़ा रहे हैं। जो देश के लिए लड़े नहीं, वो आजादी और संविधान का महत्व क्या समझेंगे। संविधान सभा की बहसों से यह स्पष्ट है कि आरएसएस के तत्कालीन नेता संविधान के खिलाफ थे। जो लोग झंडे, अशोक चक्र और संविधान से नफरत करते थे, वे आज हमें संविधान का पाठ पढ़ा रहे हैं। ऐसे लोग अब देश के लिए जान देने वालों के खिलाफ बोलते हैं। मल्लिकार्जुन खरगे ने बांग्लादेश की आजादी का जिक्र करते हुए इंदिरा गांधी को याद किया। उन्होंने कहा कि आज 16 दिसंबर है, जो बांग्लादेश का लिबरेशन डे है। हमारी बहादुर नेता इंदिरा गांधी ने पाकिस्तान के दो टुकड़े करके बांग्लादेश बनाया था और देश की शान पूरी दुनिया में बढ़ाई थी। आयरन लेडी रही इंदिरा गांधी ने ऐसा करके दिखा दिया था कि हमारे देश के नजदीक जो भी आएगा, उसकी खैर नहीं। लेकिन आज बांग्लादेश के जैसे हालात हैं, सरकार के लोग उसे आंख खोल कर देखें और वहां के अल्पसंख्यकों को बचाने का प्रयास करें। संविधान पर बहस के दौरान राज्यसभा में बोलते हुए खरगे ने जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी का नाम लेकर निर्मला सीतारमण और भाजपा नेताओं पर तंज कसा। उन्होंने कहा, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण काफी पढ़ी हैं, अर्थशास्त्र की अच्छी जानकार हैं क्योंकि वह जेएनयू से पढ़ी हैं। यहां से पढ़कर कई लोग प्रोग्रेसिव रहे और देश के विकास में अहम योगदान दिया है। मुझे उन्हें बताना है कि मुझे भी पढ़ना आता है। मैंने नगरपालिका के स्कूल में पढ़ाई की है, वहीं उन्होंने (निर्मला सीतारमण) जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में पढ़ाई की है, यह निश्चित है कि उनकी अंग्रेजी अच्छी होगी, उनकी हिंदी अच्छी होगी, लेकिन कर्म अच्छे नहीं हैं। खड़गे ने पीएम मोदी पर हमला बोलते हुए कहा कि झूठ बोलने से बेहतर है कि वह यह बताएं कि 11 साल में देश को और संविधान को मजबूत करने के लिए उन्होंने क्या किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अतीत में जीते हैं, वर्तमान में नहीं। ऐसा लगता है कि वर्तमान उनकी डिक्शनरी में नहीं है। बेहतर होता कि वह लोकतंत्र को मजबूत करने वाली वर्तमान उपलब्धियों को गिनाते। 11 साल में उन्होंने ऐसा कौन सा काम किया है, जिससे लोकतंत्र और संविधान मजबूत हुआ है। भाजपा देश के लोगों को मूर्ख बनाने के लिए जुमले दे रही है और हम पर आरोप लगा रही है।

आईएमए ने स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा को लिखा पत्र, नीट पीजी परीक्षा 2024 के लिए कट-आफ कम करने का किया अनुरोध

मुंबई इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) के जूनियर डॉक्टर ने केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा को पत्र लिखकर रिक्त स्नातकोत्तर सीटों को भरने के लिए नीट पीजी परीक्षा 2024 के लिए कट–ऑफ अंक कम करने का अनुरोध किया। पत्र में कहा गया, "शैक्षणिक वर्ष 2024 के लिए एनईईटी पीजी काउंसलिंग के समापन के बाद हम आपका ध्यान रिक्त स्नातकोत्तर सीटों के महत्वपूर्ण मुद्दे पर आकर्षित करना चाहते हैं। राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड (एनबीई) के प्रयासों के बावजूद देश भर में बड़ी संख्या में पीजी सीटें खाली हैं। यह स्थिति गंभीर चिंता का विषय है, क्योंकि ये रिक्तियां हमारी स्वास्थ्य शिक्षा प्रणाली में मूल्यवान संसाधनों के कम उपयोग में तब्दील हो जाती हैं और एक मजबूत चिकित्सा कार्यबल के विकास में बाधा बनती हैं।पत्र में आगे कहा गया,

विजडम इण्डिया
R.N.I.NO.-UPHIN/2011/41608
हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
लखनऊ, बुधवार 18 दिसंबर 2024
sheelshukla100@gmail.com

गोवंश हमारी संस्कृति और अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग है -अध्यक्ष गो सेवा आयोग

गो आधारित उत्पादों का ग्रामीण अर्थव्यवस्था में योगदान बढ़ाने एवं गोशालाओं को स्वावलंबी बनाने हेतु बैठक सम्पन्न

लखनऊ(संवाददाता)। गो सेवा आयोग के तत्वावधान में आज गो सेवा आयोग सभागार में एक महत्त्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी की अध्यक्षता गो सेवा आयोग के अध्यक्ष श्याम बिहारी गुप्त जी ने की, जिसमें उपाध्यक्ष महेश शुक्ल एवं सदस्यों राजेश सिंह सेंगर एवं रमाकांत उपाध्याय जी भी उपस्थित रहे। संगोष्ठी का विषय "गो आधारित उत्पादों का ग्रामीण अर्थव्यवस्था में योगदान अवसर एवं चुनौतियां" था। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य गोवंश आधारित उत्पादों एवं पंचगव्य के महत्व को समझना तथा इन उत्पादों की उपयोगिता को जनसाधारण तक पहुंचाना और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में इनकी भूमिका को मजबूत करनाथा।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुये अध्यक्ष,गो सेवा आयोग श्याम बिहारी गुप्त ने अपने उदबोधन में कहा कि गोवंश हमारी संस्कृति और अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग है। गो उत्पाद जैसे पंचगव्य, जैविक खाद, औषधियां, और स्वदेशी उत्पाद न केवल ग्रामीण क्षेत्र के लिए रोजगार के नए अवसर सृजित कर सकते हैं बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाने में भी सहायक हो सकते हैं। यह संगोष्ठी इस दिशा में सार्थक कदम साबित होगी। अध्यक्ष श्याम बिहारी गुप्त जी ने कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों और प्रतिभागियों को धन्यवाद दिया और कहा कि पंचगव्य आधारित उत्पाद गो आधारित प्राकृतिक कृषि के प्रशिक्षण केंद्र से समस्त गोशालाओं को बनाया जाएगा और उनको किसानों से जोड़ा जाएगा और युवाओं एवं एनआरएलएम की महिलाओं को स्किल डेवलपमेंट और स्टार्ट–अप से जोड़ा जाएगा। प्रदेश के 75 जिलों में पायलट प्रोजेक्ट के अंतर्गत गोशालाओं को आयोग द्वारा चिन्हित कर लिया गया है जहां पर प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया जाएगा। प्रशिक्षण के पश्चात उन व्यक्तियों द्वारा गो आधारित उत्पादों एवं पंचगव्य औषधियों के उत्पादन हेतु जगह जगह जाकर प्रशिक्षण दिया जाएगा। श्याम बिहारी जी ने बताया की जल्द ही प्रति 100 गोवंशों पर 15 एकड़ गोचर भूमि उपलब्ध कराकर उस पर एक दलीय एवं दो दलीय हरा चारा पैदा किया जाएगा।

डॉ. कमल टावरी (पूर्व आईएएस अधिकारी) ने कहा कि गो आधारित उत्पादों का सही तरीके से प्रचार और प्रसार होने से ग्रामीण विकास के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिलेगा। यह समय की मांग है कि हम गो आधारित उत्पादों के व्यापक उत्पादन और उपभोग को प्रोत्साहित करें। जिससे गोशालाएँ स्वावलंबी हो सकेंगी एवं अनुदान पर आश्रित नहीं रहेंगी। निरंजन गुरु जी (कुलपति, पंचगव्य विद्यापीठम विश्वविद्यालय, चेन्नई) ने पंचगव्य के औषधीय गुणों और इसके आर्थिक महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि गो आधारित उत्पाद केवल धार्मिक या सांस्कृतिक दृष्टिकोण तक सीमित नहीं हैं अपितु ये हमारे स्वास्थ्य और कृषि क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकते हैं। पंचगव्य चिकित्सा पद्धति आने वाले समय में प्रदेश के स्वास्थ्य सेक्टर के बजट को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। उन्होंने पंचगव्य चिकित्सा के माध्यम से अत्यंत जटिल बीमारियों के इलाज पर भी प्रकाश डाला। पंचगव्य चिकित्सा, जो गाय के पांच उत्पादों दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोबर से तैयार औषधियों पर आधारित है, आयुर्वेद का एक महत्वपूर्ण भाग है। इस पद्धति का उपयोग प्राचीन काल से विभिन्न शारीरिक और मानसिक रोगों के उपचार में किया जा रहा है। पी. एस. ओझा (पूर्व सलाहकार, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश एवं पूर्व मेम्बर, उत्तर प्रदेश जैव ऊर्जा विकास बोर्ड) ने किसानों के लिए जैविक खेती में गो आधारित खाद और कीटनाशकों की भूमिका पर जोर दिया तथा अध्यक्ष, गो सेवा आयोग से मनरेगा वित्त सहायित बायोगैस गोशाला परियोजना का प्रस्ताव बनाकर उनसे जल्द से जल्द पूरे प्रदेश में क्रियान्वित किये जाने की अपेक्षा की। डॉ. एस. के. सिंह (पूर्व निदेशक, फिशरीज विभाग) ने कृषि, पशुपालन एवं मत्स्य आधारित योजनाओं में गो आधारित पंचगव्य उत्पादों के उपयोग की अपार संभावनाओं को रेखांकित किया।

संशोधनों में यूपीनेडा के अलावा अन्य आपूर्तिकर्ताओं से भी सोलर प्लांट लगवाने की सुविधा और 1 किलोवाट क्षमता वाले प्लांट पर वित्तीय सहायता मिलेगी

लखनऊ(संवाददाता)। प्रदेश के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम, खादी एवं ग्रामोद्योग, रेशम उद्योग, हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग मंत्री राकेश सचान की अध्यक्षता में लखनऊ के खादी भवन में मुख्यमंत्री बुनकर सौर ऊर्जा योजना के दिशा–निर्देशों में संशोधन को लेकर बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में योजना के तहत पावरलूम बुनकरों को सौर ऊर्जा का लाभ प्रदान करने और उनके समक्ष आ रही समस्याओं का समाधान करने के लिए विस्तार से चर्चा हुई। बैठक में योजना को अधिक प्रभावी और उपयोगी बनाने हेतु कई महत्वपूर्ण संशोधन प्रस्ताव रखे गए।मुख्यमंत्री बुनकर सौर ऊर्जा योजना का उद्देश्य पावरलूम बुनकरों को परंपरागत ऊर्जा स्रोत, विशेषकर विद्युत पर निर्भरता को कम करके सौर ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देना है। इस योजना के तहत बुनकरों को सब्सिडी पर सोलर पावर प्लांट प्रदान किए जाएंगे, जिससे उनकी लागत में कमी आएगी और वे अधिक प्रतिस्पर्धात्मक बन सकेंगे।योजना के दिशा–निर्देशों में प्रस्तावित संशोधन के अनुसार, पावरलूम बुनकर अब यूपीनेडा के माध्यम से या यूपीनेडा में पंजीकृत किसी अन्य आपूर्तिकर्ता से सोलर पावर प्लांट स्थापित करवा सकते हैं। शर्त यह है कि बुनकर द्वारा चयनित संस्था की दर यूपीनेडा की तुलना में कम होनी चाहिए। यदि दोनों की दर समान है, तो बुनकर को यूपीनेडा का ही चयन करना होगा। इससे बुनकरों को अधिक लचीलापन मिलेगा और उन्हें सस्ती दरों पर सोलर पावर प्लांट उपलब्ध हो सकेगा। पहले केवल 5 किलोवाट या उससे अधिक के सोलर संयंत्रों पर ही वित्तीय सहायता उपलब्ध थी। अब संशोधन के तहत 1 किलोवाट क्षमता के सोलर संयंत्र पर भी वित्तीय सहायता देने का प्रस्ताव रखा गया है। इस कदम से छोटे बुनकर भी योजना का लाभ उठा सकेंगे, और अधिक से अधिक बुनकर समुदाय को योजना के दायरे में लाया जा सकेगा।मुख्यमंत्री बुनकर सौर ऊर्जा योजना का प्रारंभिक क्रियान्वयन चार जोनों में पायलट प्रोग्राम के रूप में किया जाएगा। इस पायलट प्रोग्राम के तहत योजना की सफलता और प्रभावशीलता का आकलन किया जाएगा, ताकि भविष्य में इसे पूरे प्रदेश में लागू किया जा सके। बैठक में मंत्री राकेश सचान ने बुनकर समुदाय से अपील की कि वे इस योजना का अधिकाधिक लाभ उठाएं। उन्होंने कहा कि सौर ऊर्जा संयंत्र से न केवल उनकी उत्पादन लागत कम होगी, बल्कि वे पर्यावरण संरक्षण में भी योगदान दे सकेंगे। इसके अलावा, बुनकर ओटीएस योजना का लाभ उठाकर अपने बकाया बिजली बिलों का समाधान करें और आर्थिक रूप से सशक्त बनें। मुख्यमंत्री बुनकर सौर ऊर्जा योजना में संशोधन बुनकरों की समस्याओं के समाधान और उनकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है

सभी धर्मों के अल्पसंख्यकों को एकजुट होकर अपनी लड़ाई लड़नी होगी – अनीस मंसूरी ,पूर्व मंत्री

लखनऊ। पसमांदा मुस्लिम समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व मंत्री अनीस मंसूरी ने मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन और पारसी समुदायों के अल्पसंख्यकों को एकजुट होने का आवाहन किया है। उन्होंने कहा कि सभी अल्पसंख्यकों को एक मंच पर आकर अपने अधिकारों के लिए खुद संघर्ष करना होगा, क्योंकि वर्तमान सरकारें उनके हितों की अनदेखी कर रही हैं।अनीस मंसूरी ने आरोप लगाया कि उत्तर प्रदेश सरकार ने एक विशेष जाति के लोगों को लाभ पहुंचाने के अलावा अन्य अल्पसंख्यक वर्गों के लिए कोई ठोस कार्य नहीं किया है। उन्होंने कहा कि बाबा साहब डॉ. भीमराव आंबेडकर ने संविधान में सभी धर्मों के अल्पसंख्यकों को विशेष अधिकार दिए थे ताकि वे सामाजिक और आर्थिक न्याय प्राप्त कर सकें। लेकिन आज हालात यह हैं कि केंद्र और राज्य सरकारें संविधान की अनदेखी कर मनमाने तरीके से शासन चला रही हैं।अनीस मंसूरी ने कहा कि देश के सबसे बड़े अल्पसंख्यक समुदाय, मुसलमानों में 80 प्रतिशत आबादी पसमांदा बिरादरी की है, लेकिन यह समाज आज भी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से सबसे अधिक पिछड़ा हुआ है। उन्होंने कहा कि इस मुद्दे को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले तीन वर्षों में कई मंचों से स्वीकार किया है कि पसमांदा मुसलमानों की स्थिति दयनीय है।हालांकि, उन्होंने अफसोस जताया कि प्रधानमंत्री द्वारा बार–बार यह बात कहे जाने के बावजूद पसमांदा समाज के उत्थान के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए हैं। मंसूरी ने कहा कि पसमांदा समाज के लोग अभी भी सरकारी योजनाओं और सुविधाओं से वंचित हैं, जिससे उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति लगातार बदतर होती जा रही है। मंसूरी ने कहा कि केंद्र की मोदी सरकार और उत्तर प्रदेश की योगी सरकार केवल दिखावटी घोषणाएं कर रही हैं, जबकि जमीनी स्तर पर अल्पसंख्यकों के लिए कुछ भी नहीं किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि अल्पसंख्यकों में आने वाले सभी धर्मों – मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन और पारसी समुदाय – के लोगों को मिलकर संविधान प्रदत्त अधिकारों के लिए संघर्ष करना होगा।अनीस मंसूरी ने जोर देकर कहा कि अगर सभी अल्पसंख्यक समाज एक मंच पर आकर संगठित संघर्ष करेंगे तो उन्हें उनके अधिकार अवश्य मिलेंगे। उन्होंने कहा कि यह समय है जब पसमांदा मुसलमानों सहित सभी अल्पसंख्यक समुदायों को अपनी आवाज बुलंद करनी होगी और सरकारों की नीतियों का सामना करना होगा।उन्होने मांग की और सुझाव दिया की पसमांदा मुसलमानों के लिए विशेष योजनाओं की घोषणा की जाए।और अन्य अल्पसंख्यक समुदायों के विकास के लिए ठोस कार्य किए जाएं।

विधानमंडल से ही प्रारंभ होता है विकास, सुरक्षा, समृद्धि का रास्ता-मुख्यमंत्री

लखनऊ,16 दिसंबर 2024 (यूएनएस)। विधानमंडल का शीतकालीन सत्र शुरू होने से पहले मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मीडिया को संबोधित किया। उन्होंने कहा सत्र अत्यंत गौरव का क्षण है। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी के विकसित भारत अभियान के साथ यूपी पूरी जी जान से जुड़ा है। विकसित भारत बनाने में यूपी अहम भूमिका निभा रहा है। आजादी के आंदोलन से लेकर आज तक यूपी देश को आगे बढ़ाने में सहयोगी है।यूपी विकास में निरंतर वृद्धि कर रहा है। विकास, सुरक्षा, समृद्धि ही नहीं आस्था और आधुनिकता का भी संगम आज उत्तर प्रदेश में देखने को मिल रहा है। इसका रास्ता हमारे विधानमंडल से ही प्रारंभ होता है। सत्र के दौरान सरकार विधायी कार्य के साथ–साथ अनुपूरक बजट भी विधानमंडल के सामने आएगा।इसके अलावा सदस्यों के पास जनता और विकास से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दे और सुझाव रखने का समय है।

यूपी धानसभा सत्र से पहले सपा का प्रदर्शन, सीएम योगी की अपील सुगमता से चले सदन

लखनऊ,16 दिसंबर 2024 (यूएनएस)। उत्तर प्रदेश विधानसभा के शीतकालीन सत्र की शुरुआत हुई। इससे पहले समाजवादी पार्टी ने जमकर प्रदर्शन किया। सरकार की नीतियों को लेकर समाजवादी पार्टी के विधायक लामबंद हुए। उन्होंने आरोप लगाए कि सरकार किसानों का हक मार रही है। उन्होंने कहा कि योगी सरकार का कार्यकाल पूरा है लेकिन किसानों की एमएसपी का वादा अधूरा है। कहा कि उत्तर प्रदेश दंगों से दहल गया है और भाजपा सरकार पूरी तरह फेल है। सत्र से पहले समाजवादी पार्टी के विधायकों ने हाथों में तख्ती लेकर सरकार को घेरा।

भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी के जन्म दिवस पर विशेष कार्यक्रम होंगे आयोजित

लखनऊ(संवाददाता)। माध्यमिक शिक्षा निदेशक डॉ. महेंद्र देव ने भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी के जन्म दिवस (25 दिसंबर) के उपलक्ष्य में 18 दिसंबर से 25 दिसंबर 2024 तक विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजन हेतु प्रदेश के सभी जिला विद्यालय निरीक्षकों को विस्तृत निर्देश जारी किए हैं। इन निर्देशों के तहत विद्यार्थियों में अटल जी के जीवन मूल्यों, उनके योगदान और सुशासन की भावना को बढ़ावा देने के लिए अनेक प्रतियोगिताओं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा।डॉ. महेंद्र देव ने बताया कि प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में मुख्य रूप से निबंध लेखन, एकल काव्य पाठ, भाषण प्रतियोगिता और क्विज प्रतियोगिताएं शामिल होंगी। निबंध लेखन प्रतियोगिता का विषय 'अटल जी और सुशासन' होगा, जिसमें कक्षा 8 से 12 तक के विद्यार्थी प्रतिभाग करेंगे। इसके अतिरिक्त, 'भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी के जीवन और उनकी कविताओं पर आधारित एकल काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन भी किया जाएगा।जिला स्तर पर आयोजित इन प्रतियोगिताओं के लिए जिलाधिकारी संबंधित जिलों में विश्वविद्यालय अथवा महाविद्यालय के उपयुक्त स्थलों का चयन करेंगे। प्रत्येक प्रतियोगिता के प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को क्रमशः 5,000 रूपए, 3,000 रूपए और 2,000 रूपए की पुरस्कार राशि निबंध प्रतियोगिता में, तथा 10,000 रूपए, 5,000 रूपए और 2,500 रूपए की पुरस्कार राशि काव्य पाठ प्रतियोगिता में प्रदान की जाएगी। इन पुरस्कारों के साथ प्रमाण–पत्र भी दिए जाएंगे। कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए जनपदों में मुख्य विकास अधिकारी को नोडल अधिकारी नामित किया गया है। जिलाधिकारी की अध्यक्षता में बैठक आयोजित कर कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की जाएगी। इसके अलावा, जिला विद्यालय निरीक्षक और उच्च शिक्षा विभाग के नोडल अधिकारी प्रतियोगिताओं में छात्रों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करेंगे। इन जनपद स्तरीय तीनों प्रतियोगिताओं का आयोजन 18 दिसंबर से 22 दिसंबर के बीच संपन्न होगा। 25 दिसंबर को आयोजित मुख्य कार्यक्रमों में इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को जिला स्तर पर आयोजित समारोहों में माननीय जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में सम्मानित किया जाएगा। इसी दिन लखनऊ स्थित लोक भवन के सभागार में मुख्यमंत्री की उपस्थिति में मुख्य कार्यक्रम आयोजित होगा, जिसका सजीव प्रसारण प्रदेश के अन्य जिलों में किया जाएगा। इसके साथ ही, संस्कृति विभाग के तत्वावधान में उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी में 25 दिसंबर की शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा, जिसमें लखनऊ जनपद के काव्य पाठ प्रतियोगिता के विजेता अपनी प्रस्तुतियां देंगे। इसके अलावा, 19 दिसंबर से 25 दिसंबर तक उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी में 'भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी' पर आधारित एक विशेष प्रदर्शनी का आयोजन भी किया जाएगा।

उत्तर प्रदेश का पहला स्टार्टअप फाउंडर्स राउंडटेबल

लखनऊ(संवाददाता)। उत्तर प्रदेश के आईटी एवं इलेक्ट्रॉनिक्स कैबिनेट मंत्री सुनील कुमार शर्मा के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश का पहला स्टार्टअप फाउंडर्स राउंडटेबल आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम 16 दिसंबर, 2024 को बापू भवन, लखनऊ में आयोजित हुआ। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य प्रदेश में स्टार्टअप्स को प्रोत्साहन देना और नवाचार के माध्यम से उत्तर प्रदेश को एक मजबूत आर्थिक और तकनीकी हब के रूप में विकसित करना था।बैठक में विभिन्न क्षेत्रों के स्टार्टअप्स ने भाग लिया और अपनी परियोजनाएँ प्रस्तुत कीं। इनमें स्पोर्ट्स स्टार्टअप ने बच्चों को खेलों के प्रति प्रोत्साहित करने पर जोर दिया, जबकि बायोडीजल जनरेशन स्टार्टअप ने वेस्ट ऑयल से बायोडीजल उत्पादन कर स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देने की पहल की। स्किल डेवलपमेंट स्टार्टअप ने गैर–तकनीकी उम्मीदवारों को प्रशिक्षण देकर उन्हें तकनीकी क्षेत्र में कुशल और रोजगार योग्य बनाने पर ध्यान केंद्रित किया। इसके अलावा, वेस्ट मैनेजमेंट स्टार्टअप ने स्मार्ट पोर्टल के माध्यम से कचरे के स्मार्ट पृथक्करण और पुनर्चक्रण की आधुनिक व्यवस्था प्रस्तुत की। ऑगमेंटेड रियलिटी और वर्चुअल रियलिटी स्टार्टअप्स ने तकनीकी नवाचारों को प्रदर्शित किया और सोलर मैन्युफैक्चरिंग स्टार्टअप ने नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में नई संभावनाओं को सामने रखा।बैठक को संबोधित करते हुए माननीय मंत्री सुनील कुमार शर्मा ने 'विकसित भारत' के निर्माण में स्टार्टअप्स की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि स्टार्टअप्स के लिए फंडिंग की प्रक्रिया को पारदर्शी और त्वरित बनाना जरूरी है ताकि उन्हें किसी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि कृषि के बिना देश की अर्थव्यवस्था मजबूत नहीं हो सकती और "विकसित भारत तभी बनेगा जब गांवों से पलायन रुकेगा।" उन्होंने स्टार्टअप्स के लिए एक त्वरित 'हेल्प डेस्क' स्थापित करने की आवश्यकता पर जोर दिया ताकि उनकी समस्याओं का समाधान शीघ्रता से किया जा सके और प्रदेश में एक मजबूत स्टार्टअप इकोसिस्टम का निर्माण हो।माननीय मंत्री ने सभी स्टार्टअप्स से संवाद और सुझाव आमंत्रित करते हुए कहा कि वे अपनी समस्याएँ और विचार पदविध्पजचवसपबलनचण्हवअण्पद पर साझा कर सकते हैं। यह बैठक उत्तर प्रदेश में नवाचार और उद्यमशीलता को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगी और राज्य के आर्थिक और सामाजिक विकास में योगदान देगी। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री के आर्थिक सलाहकार प्रो. के. वी. राजू ने स्टार्टअप्स के विकास के लिए स्पष्ट रणनीति की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि स्टार्टअप्स को प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाने के लिए एक मजबूत और पारदर्शी चयन प्रक्रिया, कार्य की निगरानी तथा समय–समय पर मूल्यांकन की व्यवस्था होनी चाहिए।कार्यक्रम में मुख्यमंत्री के सलाहकार अवनीश कुमार अवस्थी ने कहा कि सरकार और स्टार्टअप्स के बीच एक मजबूत साझेदारी बनाना जरूरी है ताकि समाज के व्यापक विकास में इसका लाभ उठाया जा सके। कार्यक्रम के अंत में मंत्री सुनील कुमार शर्मा ने सभी उपस्थित स्टार्टअप संस्थापकों का आभार व्यक्त किया और उनकी मेहनत और विचारों की सराहना की। उन्होंने कहा कि उनके प्रयास और नवाचार विकसित भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। मंत्री जी ने स्टार्टअप्स को हर संभव सहयोग का आश्वासन देते हुए प्रदेश में स्टार्टअप्स के अनुकूल वातावरण विकसित करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

मौलाना खालिद रशीद फिरंगी महली ने किया होम्योपैथिक चौरिटेबल क्लिनिक का उद्घाटन

लखनऊ।उम्मीद एक कदम फाउंडेशन के तत्वाधान में इमामे ईदगाह खालिद रशीद फिरंगी महली की सरपरस्ती एवं श्रीमती फराह रिजवी, अंबर फाउंडेशन के अध्यक्ष वफा अब्बास,उत्तर प्रदेश जिला मान्यता प्राप्त पत्रकार एसोसिएशन के महामंत्री अब्दुल वहीद,वरिष्ठ साहित्यकार एवं अटल बिहारी वाजपेई सम्मान से सम्मानित श्रीमती मंगेशलता श्रीवास्तव लताश्री,वरिष्ठ समाजसेवी शहाबुद्दीन कुरैशी, वरिष्ठ पत्रकार हिमांशु दीक्षित,वरिष्ठ फोटो जर्नलिस्ट आरिफ मुकीम की मौजूदगी में उम्मीद एक कदम फाउंडेशन के तत्वाधान में लखनऊ के भदेवां क्षेत्र में उम्मीद होम्योपैथिक चौरिटेबल क्लिनिक का उद्घाटन किया गया।कार्यक्रम की संकल्पना एनउद्दीन अहमद ने तैयार की उम्मीद एक कदम फाउंडेशन के संस्थापकध्अध्यक्ष उबैद अली के संयोजन में कार्यक्रम को किया गया कार्यक्रम के माध्यम से शहर और प्रदेश की जनता को यह संदेश देने का प्रयास किया गया कि हम सबको मिलकर अपने आसपास के गरीब और जरूरतमंद लोगों की मदद के लिए आगे आना चाहिए और अपनी क्षमता के अनुसार लोगों की मदद करना चाहिए,इस मौके पर इमाम ए ईदगाह खालिद रशीद फिरंगी महली ने सभी मौजूद लोगों को संबोधित करते हुए यह संदेश दिया कि इबादत दो तरह की होती हैं एक अपने ईश्वर को खुश करने के लिए उसकी पूजा अर्चना नमाज रोजा करके उसके आगे सर झुका कर और उसके बनाए हुए इंसानों की तकलीफों को दूर करना और गरीब बेसहारों का सहारा बनना यह भी एक इबादत है आगे बोलते हुए उन्होंने कहा कि ऐनुद्दीनअहमद जी ने हमारी बहुत मदद की है इस क्लिनिक को खुलवाने और लोगों तक मदद पहुंचाने के लिए साथी साथ वरिष्ठ समाज सेवीका फराह रिजवी जी, उत्तर प्रदेश जिला मान्यता प्राप्त पत्रकार एसोसिएशन के महामंत्री अब्दुल वहीद साहब, वरिष्ठ होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ आसिफ लोहानी, वरिष्ठ पत्रकार हिमांशु दीक्षित, डॉ सलमान अहमद, वरिष्ठ समाजसेवी परवेज अख्तर, सुधीर मिश्र,वरिष्ठ समाजसेवी राजेंद्र प्रसाद भोयी, शरीफ अहमद, अतहर सिद्दीकी,का शुक्रिया अदा करना चाहता हूं कि उन्होंने हमें हौसला दिया इस काम को करने के लिए उम्मीद एकदम फाउंडेशन के माध्यम से हमारी टीम गरीब जरूरतमंद लोगों तक पहुंच कर बिना किसी भेदभाव के उनकी मदद करने का कार्य करेगी तथा सरकार की योजनाओं से आमजन को जोड़ने की कोशिश करेगी तथा उसका लाभ उन तक पहुंचाने का अथक प्रयास करेगी ।

सी.एम.एस. छात्रों ने जीते तीन गोल्ड मेडल

लखनऊ, 17 दिसम्बर। सिटी मोन्टेसरी स्कूल, स्टेशन रोड कैम्पस के तीन मेधावी छात्रों हर्ष अग्निहोत्री, आराध्या त्रिवेदी एवं अनुभव कुमार शर्मा ने राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित अन्तर–विद्यालयी ब्रेनोब्रेन वन्डरकिड प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल जीतकर लखनऊ का गौरव सारे देश में बढ़ाया है। यह प्रतियोगिता शैक्षिक संस्था ब्रेनोब्रेन किड्स एकेडमी के तत्वावधान में आयोजित हुई। सी.एम.एस. प्रबन्धक प्रो. गीता गाँधी किंगडन ने इन मेधावी छात्रों के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए विद्यालय के शिक्षकों व प्रधानाचार्या के प्रति आभार व्यक्त किया है। इस प्रतियोगिता में देश भर के अनेक प्रतिष्ठित विद्यालयों के छात्रों ने प्रतिभाग किया जिसमें सी.एम.एस. स्टेशन रोड कैम्पस के इन प्रतिभाशाली छात्रों ने मेन्टल मैथ्स, लॉजिकल एबिलिटी, जनरल नॉलेज एवं स्पीड टाइपिंग में अपनी दक्षता का प्रदर्शन कर गोल्ड मेडल अर्जित किया। प्रतियोगिता के आयोजकों ने इन प्रतिभाशाली छात्रों की बहुमुखी प्रतिभा की भूरि–भूरि प्रशंसा करते हुए मेडल व प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। यह प्रतियोगिता छात्रों को बौद्धिक क्षमता पर ध्यान केन्द्रित करने तथा त्वरित गति से समाधान ढूढने एवं सीखने की क्षमता का विकास करने के उद्देश्य से आयोजित की गई थी। सी.एम.एस. अपने छात्रों को देश–विदेश में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग हेतु लगातार प्रोत्साहित करता रहता है। यही कारण है कि सी.एम.एस. छात्र सदैव ही विभिन्न रचनात्मक एवं सृजनात्मक प्रतियोगिताओं में अपनी बहुमुखी प्रतिभा की छाप छोड़कर विद्यालय का गौरव बढ़ा रहे हैं।

जमीन दिलाने के नाम पर भाजपा नेता ने हड़पे 1.16 करोड़ रुपए

न्यायालय के आदेश पर भाजपा नेता और उसके भाई के खिलाफ अभियोग दर्ज,पुलिस जाँच में जुटी

(मथुरा)मथुरा–वृंदावन में जमीनी कारोबार दिन प्रतिदिन सातवें आसमान पर पहुंच रहा है वहीं कुछ सत्ताधारी भाजपा नेता जमीन की खरीद फरोख्त में सौदागरों से जमीन के नाम पर करोड़ों को हजम कर जा रहे फिर इन बड़े–बडे जमीनों के सौदागरों में पैसे के लेनदेन को लेकर तमाम अभियोग दर्ज होते हे।दर्ज अभियोग में क्षेत्रीय पुलिस को विवेचना में कड़ी मशक्कत करनी पड़ती हे।जनपद में जमीनों का कारोबार बड़े ही वृहद स्तर पर संचालित है उससे ही ज्यादा बड़े स्तर पर जमीनी विवाद पुलिस के लिए कड़ी मशक्कत पैदा कर रहे हैं। अधिकांश विवादों में लाखों नहीं करोड़ों रुपयों के लेन देन के विवाद हैं।वहीं थाना हाइवे क्षेत्र में सत्ताधारी भाजपा नेता राजपाल और उसके भाई वीरपाल पर दर्ज अलग अलग अभियोगों में जमीन खरीद फरोख्त में एक करोड़ से ज्यादा रुपए हड़पने का आरोप लगाया हैं।जिसमें यश अग्रवाल पुत्र राधा किशन अग्रवाल ने प्राथमिकी दर्ज कराते हुए बताया हैं कि राजपाल व वीरपाल ने विश्वास में लेकर जमीन दिलाने के नाम पर लगभग तेईस लाख उनसठ हजार रुपए और वही सुरेश कुमार पुत्र तुलाराम ने बताया कि पंद्रह लाख तिरेपन हजार रुपए और सोनू पुत्र हरिप्रसाद ने इकतालीस लाख तिहतर हजार पांच सौ इक्यावन रुपए व नरेंद्र कुमार पुत्र अजय पाल ने पैंतीस लाख निन्यानबे हजार रुपए जमीन दिलाने के नाम पर भाजपा नेता राजपाल और वीरपाल नेधोखाधड़ी की हैं न ही जमीन दी और न ही पैसे वापस करते हैं। इन भाजपा नेताओं ने बड़ी बड़ी पंचायतों में रुपयों का लेनदेन स्वीकार कर देने की बात कही लेकिन सत्ताधारी होने की धमक से पंचायतों को भी पीछे छोड़ दिया।पीड़ितों की सुनवाई कही न होने पर न्यायालय की शरण ली।न्यायालय के आदेश पर भाजपा नेताओं के खिलाफ हाइवे पुलिस ने जमीन दिलाने के नाम पर एक करोड़ से ज्यादा की धोखाधड़ी के अलग अलग प्रकरणों में संबंधित धाराओं में अभियोग दर्ज कर जाँच में जुट गई हैं।

ओपन स्कूली बैडमिंटन प्रतियोगिता 2024 बालक एवं बालिका का उद्घाटन

लखनऊ। गोपीनाथ लक्ष्मण दास रस्तोगी इंटर कालेज ऐशबाग लखनऊ के प्रधानाचार्य श्री अलोक कुमार मिश्र जी द्वारा तीन दिवसीय प्रतियोगिता का उद्घाटन किया गया। स्कूली खेलो के स्तर को बढ़ावा देने व सभी स्कूली खिलाड़ियों को अवसर प्रदान करने के लिए गोपीनाथ लक्ष्मण दास रस्तोगी कालेज की एक अच्छी शुरुआत के साथ की।बैडमिंटन प्रतियोगिता में छात्र–छात्राओं ने दिखाया दम और सबको रोमांचित कर दिया प्रतियोगिता में बालक एवं बालिका वर्ग के लखनऊ के विभिन्न स्कूलों से लगभग १०० खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया। लखनऊ के साथ ही अन्य जिले कानपुर, सुल्तानपुर, अमेठी, अम्बेडकर नगर के खिलाड़ियों ने भी प्रतिभाग किया।

बेसिक शिक्षा मंत्री का फोन नहीं उठाते एबीएसए

लखनऊ। बेसिक शिक्षा विभाग के खंड शिक्षा अधिकारी अपने ही विभागीय मंत्री का फोन नहीं उठाते हैं। इस संबंध में नाराज मंत्री ने बेसिक शिक्षा अधिकारी को कार्रवाई के आदेश जारी किया है। मंत्री की ओर से विभाग में पत्र पहुंचा तो विभागीय अधिकारी व कर्मचारी भी हैरान रह गए।लखनऊ के नगर क्षेत्र में पिछले करीब पांच साल से खंड शिक्षा अधिकारी प्रमेंद्र शुक्ला तैनात हैं। बेसिक शिक्षा मंत्री संदीप सिंह ने बीएसए राम प्रवेश को पत्र भेजकर नाराजगी जाहिर की है। मंत्री का कहना है कि खंड शिक्षा अधिकारी प्रमेंद्र शुक्ला के कार्यालय व मोबाइल नंबर पर उन्होंने कई बार फोन किया लेकिन एक बार भी फोन नहीं उठाया।

एक दिवसीय रोजगार मेले में 1164 युवाओं को मिली नौकरी

-मिल्कीपुर में लगा वृहद रोजगार मेला, 52 कंपनियां हुई शामिल

मिल्कीपुर–अयोध्या(एजेंसी)। मिल्कीपुर तहसील क्षेत्र के विद्या मंदिर इंटर कॉलेज प्रांगण में श्रम एवं रोजगार विभाग की तरफ से एक दिवसीय रोजगार मले का आयोजन किया गया। कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही एवं श्रम व सेवायोजन मंत्री अनिल राजभर ने रिबन काट कर मेले का उद्घाटन किया। मुख्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया, अटल आवासीय विद्यालय के बच्चों ने सरस्वती वंदना के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। मेले में हाईस्कूल, इंटरमीडिएट, स्नातक, आईटीआई, डिप्लोमा पास अभ्यर्थी शामिल हुए कुल 2682 पंजीकरण हुए इसके सापेक्ष 1164 युवाओं का विभिन्न कंपनियों में चयन हुआ, लगभग एक दर्जन चयनित युवाओं को कृषि मंत्री एवं श्रम मंत्री ने नियुक्ति पत्र बांटे। कार्यक्रम के दौरान 50 श्रमिकों को 2–2 लाख रुपए का स्वीकृति पत्र दिया गया।कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने कहा कि जिले में सरकार श्रम विभाग समेत अन्य विभागों के माध्यम से जन कल्याणकारी योजनाएं चलाई जा रही है। जो श्रमिक अपना श्रम विभाग में पंजीयन कराए हुए हैं, उन्हें 60 वर्ष के बाद पेंशन देने की भी योजना बनाई जा रही है। उन्होंने कहां की संभल में पीडीए के लोगों द्वारा हनुमान और शिव मंदिर पर कब्जा करके मस्जिद का रूप देने का प्रयास किया जा रहा था। ये पीडीए के लोग जहां पर हैं वहां पर अराजकता ही फैला रहे हैं। श्रम एवं रोजगार राज्य मंत्री अनिल राजभर ने कहा कि आज हमारे प्रदेश और देश के मजदूर देश दुनिया में काम कर रहे हैं। हमारे देश और प्रदेश में विदेशी मुद्रा बड़े पैमाने पर आ रही है। हमारे मजदूरों परिवारों के साथ हमारा प्रदेश और देश भी मजबूत हो रहा है। उन्होंने कहा कि इस रोजगार मेले में आई हुई कंपनियों का 11 हजार बेरोजगारों को नौकरियां देने का लक्ष्य है। रोजगार मेले में योगेंद्र कुमार सिंह, विद्याधर, श्याम सिंह ,अभिषेक तिवारी, दीपशिखा, सुरजीत कुमार ,नीरज कुमार ,सूरज, गया प्रसाद ,अख्तर समेत 11 युवाओं को नियुक्ति पत्र मंत्री द्वारा दिया गया। रोजगार मेला में निजी क्षेत्र की कई प्रतिष्ठित 52 कंपनियां शामिल हुईं, जिसमें जीफोरएस सिक्योरिटी इण्डिया प्रालि, यशस्वी स्किल लि, एस.एन स्टफिंग सोल्यूशन, डिजिटल एजूकेशन एण्ड टेक्नालॉजी, एसपीएनएन बिजनेस, ब्राइट फ्यूचर, शिव शक्ति एग्रीटेक लि, अनुदीप फाउंडेशन, पुखराज हेल्थ केयर, कारस कृपा, एसके इले, टीम प्लस एचआर सर्विसेज आदि शामिल हुई। इस मौके पर भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष संजीव सिंह, मंडल अध्यक्ष मिल्कीपुर अजय तिवारी, अर्जुन सिंह, जिला पंचायत सदस्य बबलू पासी, अशोक मिश्रा, भाजपा नेत्री शान्ती पासी, एसपी ग्रामीण बलवंत, पुलिस क्षेत्राधिकारी मिल्कीपुर श्रीयस त्रिपाठी, थानाध्यक्ष इनायत नगर देवेंद्र पाण्डेय, थाना अध्यक्ष कुमारगंज अमरजीत सिंह सहित भारी संख्या में युवा एवं पार्टी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

शिक्षको को 'ख' श्रेणी का नगर प्रतिकर भत्ता देने की मांग

अयोध्या(एजेंसी)। समाजवादी शिक्षक सभा जिला इकाई की बैठक लोहिया भवन पर दान बहादुर सिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक का संचालन महासचिव डॉ. घनश्याम यादव ने किया। बैठक को सम्बोधित करते हुए दान बहादुर सिंह ने कहा कि अयोध्या नगर निगम का दूसरा कार्यकाल चल रहा है परन्तु शिक्षकेंध्कर्मचारियों को मकान किराया भत्ता नगर पालिका का मिल रहा है जबकि हाउस टैक्स, वाटर टैक्स लखनऊ की श्रेणी का वसूला जा रहा है। सरकार शहर की श्रेणी बदल 'ख' श्रेणी का नगर प्रतिकर भत्ता प्रदान करे। अयोध्या शिक्षा भवन प्राथमिक से माध्यमिक तक वसूली का अड्डा बन चुके हैं। अधिकारी सरकार के नियन्त्रण से बाहर हैं। अवध विश्वविद्यालय केवल परीक्षा संस्था बन कर रह गया है। विश्वविद्यालय में शिक्षक कल्याण निधि में सबसे अधिक धन स्ववित्त पोषित शिक्षकों का जमा होता है जबकि सहायता न के बराबर है। वित्तविहीन शिक्षकों से

सरकार का कोई मतलब नहीं रह गया है। पुरानी पेंशन का वर्तमान सरकार नाम नहीं ले रही है। शिक्षकेंध्कर्मचारियों की समस्याओं का निराकरण 2027 में समाजवादी सरकार बनने पर ही सम्भव है। मिल्कीपुर विधान सभा उप चुनाव में शिक्षक सभा जिला इकाई प्रत्येक अवकाश पर प्रचार प्रसार करेगी। जिससे उपचुनाव जीत कर सरकार पर नियन्त्रण हो सके। आज की मासिक बैठक में सपा जिला उपाध्यक्ष जे0पी0 यादव जी ने शिक्षकों की समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए हर संघर्ष में साथ रहने की बात कही। वहीं सपा जिलाध्यक्ष पारसनाथ यादव जी ने कहा शिक्षकों की समाज में सबसे ज्यादा जिम्मेदारी है कि वह समाज को जागरूक कर तानाशाह सरकार को बदलने का काम करे। जिससे आउट सोर्सिंग नौकरियाँ समाप्त हों। लोगों को नियमित नौकरी मिले एवं वित्त विहीन शिक्षकों को उचित मानदेय मिले। तदर्थ शिक्षकों की बहाली हो। बैठक में शिक्षक सभा के दलसिंगार गौड़, मृत्युंजय सिंह, डॉ. विनोद यादव, डॉ. चन्द्र प्रकाश वर्मा, अमर नाथ सिंह, संत प्रसाद मिश्रा, तहसीलदार सिंह, प्रदीप कुमार तिवारी, सुरेश कुमार, प्रेम जी आनन्द, डॉ. हनुमान प्रसाद मिश्रा, आनन्द शुक्ला, लालचन्द्र यादव, राम चेत यादव, अमन वर्मा, राम कैलाश यादव, विशाल चौधरी, आशीष कुमार वर्मा, जिलाध्यक्ष जी ने शिक्षक सभा के जिला सचिव आनन्द शुक्ला जी को मिल्कीपुर चुनाव में शिक्षक सभा का प्रभारी नियुक्त किया।

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन

लालगंज, मीरजापु(एजेंसी)र। श्रीमती इंदिरा गांधी राजकीय पीजी कॉलेज में 16 दिसंबर सोमवार को वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम का उद्घाटन उत्तर प्रदेश के उच्च शिक्षा निदेशक, प्रोफेसर डॉक्टर अमित भारद्वाज करेंगे। इस अवसर पर 100 मीटर और 400 मीटर दौड़, लंबी कूद, ऊंची कूद, चक प्रक्षेप, गोला प्रक्षेप, भाला प्रक्षेप, कुर्सी दौड़ और धीमी गति साइकिल रेस जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी।कॉलेज के प्राचार्य डॉक्टर के. के. गिरी ने बताया कि यह आयोजन छात्रों के शारीरिक और मानसिक विकास के साथ उनकी खेल प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के लिए किया जा रहा है।

पत्रकार के पौत्र प्रथम ने सेना में लेफ्टिनेंट बन बढ़ाया मान, जाने कौन हैं प्रथम

मीरजापुर(एजेंसी)। जिले के एक साधारण से परिवार में जन्म लेने वाले बेटे ने सेना में लेफ्टिनेंट बन गांव परिवार का मान बढ़ाया है। मिर्जापुर नगर के बेलखरिया का पूरा निवासी सुभाष पांडेय के पुत्र प्रथम पांडेय (22) वर्ष की तैनाती सेना में लेफ्टिनेंट के पद पर हुई है। उनकी इस कामयाबी पर घर परिवार सहित पूरे नगर में हर्ष का माहौल है। उनकी इस कामयाबी पर उनको और उनके परिवार वालों को बधाई देने वालों का तांता लगा हुआ है। प्रथम की शिक्षा–दीक्षा मिर्जापुर में ही हुई है। शुरू से ही उनकी सेना में जाने की हसरत रही है। जो आज साकार हुआ है। उनके परिवार में उनकी तैनाती पर हर्ष–उल्लास भरा माहौल बना हुआ है। प्रथम ने अपनी इस कामयाबी पर अपने माता–पिता सहित अपने गुरु को अपना आदर्श मानते हुए कहा कि भारत माता की सरहदों की सुरक्षा के माध्यम से सेवा करने का उनको जो अवसर मिला है वह उनके लिए काफी गर्व का पल है जिसे वह शब्दों में नहीं प्रकट कर सकते हैं। बताते चलें कि प्रथम पांडेय के

दादा केमिकल इंजीनियरिंग अमरनाथ पांडेय एवं जनपद के वरिष्ठ पत्रकार भोलानाथ पांडेय हैं जिनका सर उन्होंने गर्व से ऊंचा कर दिया है। उनके परिजनों को बधाई देने वालों का उनके नगर स्थित आवास पर तांता लगा रहा है।

मरीजों का खून चूंस रहे हैं प्राइवेट अस्पतालों के संचालक, सुने पीड़ित तीमारदार की दास्तान

मीरजापुर(एजेंसी)। नीम हकीम खतरे जान की कहावत को चरितार्थ करते निजी अस्पताल गरीब मरीजों के आर्थिक शोषण का केन्द्र बन जिला प्रशासन और स्वास्थ्य विभाग को खुली चुनौती दे रहे हैं। नियम विरुद्ध तरीके से संचालित हो रहे निजी अस्पतालों पर संबंधित महकमें की कृपा दृष्टि होने से इनका कोई भी बाल बांका नहीं हो पा रहा है। यह न केवल शासन–प्रशासन के नियमों को दरकिनार कर रहे हैं बल्कि मरीजों के लिए खतरे जान भी साबित हो जा रहें है। और तो और इनके संचालकों द्वारा मरीजों से मनमाना वसूली भी की जा रही है। गरीब मरीजों के शोषण का केन्द्र बने मिर्जापुर जिले के राजगढ़ विकास खंड क्षेत्र में इन दिनों धड़ल्ले से अवैध चिकित्सा सेंटरों का संचालन किया जा रहा है। बताया जा रहा है कि खून जांच, डायग्नोस्टिक सेंटर एवं हास्पिटलों की क्षेत्र में बाढ़ सी आ गई है। जिनके संचालकों की चांदी कट रही है। ऐसा ही एक मामला राजगढ़क्षेत्र के एक हास्पिटल से जुड़ा हुआ बताया जा रहा है जहां डिलीवरी के नाम पर मरीज को भर्ती किया गया और अब डिलीवरी के बाद जांच–पड़ताल व दवा के नाम पर 61 हजार रुपये की मांग की जा रही है। पीड़ित परिवार ने अस्पताल संचालक पर गंभीर आरोप लगाएं है। पैसे के अभाव में मरीज हलकान हो रहा है। उसने अधिकारियों से न्याय व सुरक्षा की गुहार लगाई है। मामला सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। मजे कि बात है कि जिला प्रशासन ने अब तक मामले को जहां संज्ञान में नहीं लिया है वहीं पीड़ित परेशान हो भटकता फिर रहा है।पीड़ित राजगढ़ निवासी रामानंद बताते हैं कि वह ददरा स्थित एक निजी अस्पताल में महिला के प्रसव के लिए आए हुए थे जहां 44 हजार बोला गया था, अब 61 हजार की डिमांड की जा रही है। पूरा पैसा देने पर ही मरीज को छोड़ने की बात कहीं जा रही है। रामानंद का आरोप है कि अस्पताल संचालक धमकी दे रहे है कि पूरा पैसा जमा करना ही होगा उनका कुछ बिगड़ने वाला नहीं है क्योंकि उनकी पहुंच उपर तक है। बहरहाल मामले का वीडियो वायरल होने के बाद क्षेत्र में हड़कंप मचा हुआ है वहीं पीड़ित अस्पताल के बाहर मनुहार गुहार लगाते हुए भटकता लिखाई दे रहा है।

देश के संविधान को तोड़ना चाहती है भाजपा सरकार :अवधेश प्रसाद

-मिल्कीपुर उपचुनाव में जनता भाजपा को दिखाएगी आईना
-बूथों पर मजबूती से जुटे सपा के कार्यकर्ता- पारसनाथ यादव

मिल्कीपुर–अयोध्या(एजेंसी)। रविवार को मिल्कीपुर विधानसभा के विकासखंड अमानीगंज स्थित बाबा खाकी दास कुटी नंदौली में समाजवादी पार्टी द्वारा संविधान बचाओ, खेती बचाओ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बतौर मुख्य अतिथि कार्यक्रम में शिरकत करने पहुंचे फैजाबाद,अयोध्या के सांसद अवधेश प्रसाद ने कहा कि आज पूरे देश की निगाहें मिल्कीपुर विधानसभा के उपचुनाव पर लगी हुई है।भारतीय जनता पार्टी हार के डर से घबराई हुई थी इसलिए अन्य नौ विधानसभा सीटों के साथ मिल्कीपुर का उपचुनाव नहीं कराया। जिस प्रकार से लोकसभा के चुनाव में फैजाबाद,अयोध्या की महान जनता ने ऐतिहासिक मतों से समाजवादी पार्टी को जीत दिला कर इतिहास बनाया था। ठीक उसी प्रकार से मिल्कीपुर विधानसभा के उपचुनाव में भी समाजवादी पार्टी की ऐतिहासिक जीत होगी। आज बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर जी द्वारा निर्मित देश का संविधान खतरे में है। आज किसान, नौजवान,महिलाएं, बुजुर्ग समाज का हर वर्ग भारतीय जनता पार्टी की केंद्र व प्रदेश सरकार की जन्म विरोधी नीतियों से त्रस्त हो गया है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार देश की सभी सरकारी संस्थाओं को बेच रही है। रेलवे,हवाई अड्डा,बिजली जैसे महत्वपूर्ण सरकारी विभागों को सरकार निजी हाथों में सौंप रही है। सरकार द्वारा बाबा साहब द्वारा निर्मित संविधान को तोड़ा जा रहा है। भारतीय जनता पार्टी देश में अशांति का माहौल पैदा कर रही है धर्म के नाम पर जाति के नाम पर संप्रदाय के नाम पर लोगों को लड़ाने का काम कर रही है मिल्कीपुर की महान जनता उपचुनाव में भारतीय जनता पार्टी को आईना दिखाने का काम करेगी और 2027 में उत्तर प्रदेश से भारतीय जनता पार्टी का सफाया हो जाएगा। मुख्यमंत्री जी खुद मिल्कीपुर से डरे हुए हैं। और सात–सात बार मिल्कीपुर का दौरा कर चुके हैं। सरकार के 16–16 मंत्री मिल्कीपुर में रात दिन लगे हुए हैं। लेकिन मिल्कीपुर की महान जनता उपचुनाव में भाजपा का सफाया कर देगी।कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सपा जिला अध्यक्ष पारसनाथ यादव ने कहा कि मिल्कीपुर के उपचुनाव से कोई मुख्यमंत्री बनेगा या कोई मुख्यमंत्री हटेगा यह कोई सवाल नहीं है। सवाल यह है कि संविधान बचेगा कि नहीं, डॉ भीमराव अंबेडकर जी के सपने जो अधूरे हैं पूरा करने के लिए समाजवादी साथियों मै कहना चाहता हूं हम सभी की जिम्मेदारी बनती है की बाबा साहब के सपने को पूरा करें। हमें अग्निवीर जैसी नौकरी नहीं चाहिए सरकार बनने पर हम अग्निवीर जैसी नौकरी को खत्म कर देंगे। लोकसभा चुनाव के तरीके से मिल्कीपुर विधानसभा के उपचुनाव में सपा प्रत्याशी को जीत दिला कर सपा कार्यकर्ता इतिहास बनाने का काम करें। कार्यक्रम को डॉ माखनलाल यादव,रामजी पाल,अनूप सिंह, सिराज अहमद,राम लहू यादव, रामतेज यादव, वेद प्रकाश यादव, अवधेश सिंह, सुभाष रावत, सहित दर्जनों नेताओं ने संबोधित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पृथ्वीराज यादव व संचालन यदुनाथ यादव ने किया कार्यक्रम में बड़ी संख्या में समाजवादी पार्टी के नेता व कार्यकर्ताओं के अलावा ग्रामीण भी मौजूद रहे।

विकास सिंह बने उत्तर प्रदेश एक्साइज कांस्टेबल एसोसिएशन के अध्यक्ष

अयोध्या। नाका स्थित जिला आबकारी भवन में उत्तर प्रदेश एक्साइज कांस्टेबल एसोसिएशन के मंडलीय द्विवार्षिक अधिवेशन एवं चुनाव का कार्यक्रम संपन्न हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में उप आबकारी आयुक्त व अयोध्या प्रभारी सुधीर सिंह शामिल हुए। चुनाव कार्यक्रम में अध्यक्ष पद के लिए तीन दावेदार विकास सिंह, अभय प्रताप सिंह, पवन कुमार तिवारी रहे। वही महामंत्री पद के लिए अंकुर गौतम सिद्धार्थ सोमवंशी दावेदार है जिसमे अध्यक्ष पद के लिए विकास सिंह 51 मत पाकर निर्वाचित विजय हुए वहीं महामंत्री पद के लिए अंकुर गौतम 82 मत पाकर विजयी रहे अध्यक्ष पद के लिए दो नंबर पर पवन कुमार तिवारी 42 मत व तीन नंबर पर अभय प्रताप सिंह को 24 मत मिले और महामंत्री पद के लिए सिद्धार्थ सोमवंशी को 34 मत मिले इस दौरान विभाग के सभी मतदाताओं ने जीते हुए प्रत्याशी को माला पहनाकर खुशी जाहिर की इस अवसर पर अध्यक्ष विकास सिंह ने अपने बयान में विभाग के सभी समस्याओं को पूरी तरह से दूर करने का आश्वासन दिया और इसके साथ–साथ कई सुविधाएं अपने साथियों को दिलाने का भी भरोसा जताया वही जीते हुए महामंत्री अंकुर गौतम ने भी सभी का भार व्यक्त करते हुए सबको बहुत–बहुत धन्यवाद दिया और कहां की मैं अपने साथियों के हक लिए लड़ता रहूंगा। वहीं चुनाव कार्यक्रम के दौरान आए हुए मुख्य अतिथि को माला पहनाकर व बुके देकर स्वागत किया गया। चुनाव का आयोजन नवीन गुप्ता, राजेंद्र सिंह, घनश्याम व प्रताप की देखरेख में संपन्न हुआ।

एएनएम व जीएनएम की छात्राओं ने फेयरवेल पार्टी का किया आयोजन

अयोध्या(एजेंसी) । शहर के चिरंजीव नर्सिंग इंस्टीट्यूट में ए. एन. एम व जी. एन. एम की छात्राओं ने फेयरवेल पार्टी पर संस्कृति नृत्य का आयोजन किया। जिसका शुभारम्भ मुख्य अतिथि चिरंजीव हॉस्पिटल एवं नर्सिंग इन्स्टीट्यूट के चेयरमैन डॉ. उमेश चौधरी व निदेशिका डॉ. जयन्ती चौधरी द्वारा दीप प्रज्वलित कर मां सरस्वती के प्रतिमा पर माल्यार्पण कर किया गया । विदाई समारोह में सीनियर बैच की छात्राओं ने पढ़ाई के दौरान अपने अनुभव को साझा करते हुए जूनियर छात्राओं से कहा कि नर्सिंग कोर्स अपने आपमें लोगों की सेवा है। हम निजी या सरकारी किसी भी संस्थान में काम करें हम सीधे लोगों के संपर्क में आते हैं। विदाई समारोह को यादगार बनाने सांस्कृतिक कार्यक्रम में रैम्प वॉक, गेम्स, एकल गीत, सामूहिक नृत्य जी.एन.एम व ए. एन. एम की छात्राओं ने प्रस्तुत किया।

उसी कार्यक्रम में नर्सिंग इन्स्टीट्यूट के चेयरमैन डॉ. उमेश चौधरी व निदेशिका डॉ. जयन्ती चौधरी ने अपने सम्बोधन में नर्सिंग की छात्राओं को कर्त्तव्य निष्ठा, ईमानदारी, मेहनत व अच्छे ज्ञानोपार्जन के साथ जीवन में आगे बढ़ाने हेतु प्रेरित किया एवं उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी, नर्सिंग इन्स्टीट्यूट के प्रधानाचार्य डॉ. विशाल अलवर्ट ने छात्राओं को उनके उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी। छात्राओं में एक ओर जहां कार्यक्रम को लेकर जोश व उत्साह नजर आ रहा था, वहीं सीनियर की विदाई को लेकर उनके मन में उदासी थी। इस मौके पर नर्सिंग इंस्टिट्यूट के प्रशासनिक अधिकारी रविमणि चौधरी, प्रबंधक के. पी. मिश्र, रिंकी शुक्ला, आशुतोष, प्रियम्वदा, गायत्री, अंकिता, सुचिता , सुषमा,प्रीति, अनुराधा सार्थक ,विजेन्द्र सहित अन्य सभी की सभी छात्राएं मौजूद रही।

सम्पत्ति बटवारे के विवाद मे भतीजे ने चाचा पर ज्वलनशील पदार्थ डालकर जलाया

-हालत नाजुक, इलाज को लखनऊ रिफर
-रामपुर भगन बाजार की हैं सनसनीखेज घटना

अयोध्या(एजेंसी)। तारुन थाना क्षेत्र के रामपुर भगन बाजार मे सम्पत्ति बटवारे के विवाद को लेकर रविवार की प्रातःभतीजे ने चाचा से हुई लड़ाई झगड़ा के बाद गुस्से मे उन पर ज्वलनशील पदार्थ डालकर आग लगा दी। जिससे आग की लपटो से घिरे चाचा गंभीर रूप से झुलस गये। घटना के बाद परिजन उन्हे एम्बुलेंस बुलाकर घायल अवस्था मे इलाज को तारुन सीएचसी ले गये,जहां मौके पर मौजूद डॉक्टर संतोष कुमार यादव ने तत्कालिक इलाज के बाद घायल की हालत नाजुक देखते हुये उन्हे जिला अस्पताल रिफर कर दिया। वहाँ पहुंचने पर घायल को लखनऊ ट्रामा सेंटर इलाज को भेज दिया गया। सीएचसी तारुन के डॉक्टर संतोष कुमार यादव व जिला अस्पताल के डॉक्टर आशीष पाठक की माने तो व्यापारी 95 प्रतिशत झुलस चुका हैं जिसकी हालत नाजुक बनी हुई हैं। मिली जानकारी के अनुसार रामपुर भगन बाजार निवासी मृतक राम नेवाज हेलवाई के तीन बेटे हैं। जिनमे रोशनलाल मोदनवाल, सोहनलाल मोदनवाल तथा राम चरन मोदनवाल हैं। तीनो भाइयो ने पिता की बाजार की काफी जमीन बेचकर फैजाबाद अयोध्या शहर मे जमीन खरीदकर वहाँ मकान बनाकर रहते हैं। सूत्रों की माने तो रामपुर भगन चराँवा मार्ग पर कमरे बने हैं। जिनकी किराये की वसूली घायल की जगह अन्य भाई करते थे। इन्ही सभी बातो को लेकर तीनो भाइयो मे विवाद झगड़ा लड़ाई हुआ करती थी। रविवार की प्रातः करीब 10 बजे भाई राम चरन के बेटे सत्यम से चाचा रोशनलाल का विवाद हो गया। आरोप है कि विवाद के बाद चाचा की पिटाई करने के बाद उन पर ज्वलनशील पदार्थ डालकर आग लगा दी। जिससे वे गंभीर झुलस

गये। बताया गया की दो तीन दिन पहले घायल के बेटे व आरोपी के परिवार के मध्य विवाद हुआ था। रविवार को रामपुर भगन चौकी पर दोनो पक्षों का मामला सुलझाने को बुलाया गया था।इसके पहले यह घटना हो गयी। घटना कि सूचना पर तारुन थाना प्रभारी सुमित कुमार श्रीवास्तव ने सीएचसी पहुंच घटना स्थल का स्टॉफ के साथ जायजा लिया।सीओ बीकापुर पीयूष कुमार ने बताया कि आरोपी को कस्टडी में लेकर पूछताछ की जा रही है, तहरीर लेकर मुकदमा दर्ज कर विधिक कार्रवाई की जायेगी।

चेतना महोत्सव मीरजापुर में विजेता बच्चों को किया गया पुरस्कृत

मीरजापुर(एजेंसी)। साहित्य चेतना समाज की मीरजापुर इकाई के तत्वावधान में विंध्यवासिनी महाविद्यालय के क्रिस्टल हाल में रविवार को चेतना महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ अध्यक्षता कर रहे डॉ नीरज त्रिपाठी, मुख्य अतिथि पद्मश्री उर्मिला श्रीवास्तव, विशिष्ट अतिथि राजपति ओझा और सुभाष वर्मा ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। प्रसिद्ध गायक देवा ने सरस्वती वंदना व देवी गीत से सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रारंभ किया। आचार्य राम चन्द्र शुक्ल विद्यालय के बच्चों ने सरस्वती वंदना, स्वागत गान और बाल विवाह अपराध है विषय पर नाटक प्रस्तुत किया। गायिका कल्पना गुप्ता ने गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ नीरज त्रिपाठी ने अपने वक्तव्य में कहा कि प्रतियोगिताओं से बच्चों का व्यक्तित्व निर्माण होता है। जो उनके जीवन के लिए उपयोगी है। मुख्य अतिथि पद्मश्री उर्मिला श्रीवास्तव ने कहा कि बच्चे देश का भविष्य हैं उन्हें अच्छे कार्य के लिए प्रोत्साहित करना हमारा दायित्व है। वरिष्ठ साहित्यकार भोलानाथ कुशवाहा ने संदेश दिया कि जीवन एक परीक्षा है। जरूरी है हिम्मत और जोश बनाये रखने की। साहित्य चेतना समाज के संस्थापक अमरनाथ तिवारी ने संस्था के बारे में जानकारी दी। अतिथियों को अंगवस्त्र, माल्यार्पण और स्मृति चिह्न देकर संगठन सचिव सुधाकर त्रिपाठी व सासाराम से आये संस्था के निर्णायक मनोज ने सम्मनित किया। संचालन आनंद अमित, पूजा यादव व सृष्टि राज ने संयुक्त रूप से किया। स्वागत भाषण कुल भूषण पाठक ने दिया। ज्ञात होकि गत तीन नवम्बर को आयोजित सामान्य ज्ञान एवं निबन्ध प्रतियोगिता में चयनित प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। इन प्रतियोगिताओं में नगर सहित सुदूर ग्रामीण अंचल के 15 से अधिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।चार वर्गों में आयोजित इन प्रतियोगिताओं के कनिष्ठ वर्ग में कक्षा चार से छह, मध्यम वर्ग में कक्षा सात व आठ,ज्येष्ठ वर्ग में कक्षा नौ व दस एवं वरिष्ठ वर्ग में कक्षा ग्यारह व बारह के विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया था। सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के कनिष्ठ वर्ग में खूशबू कान्वेंट स्कूल के दीपक कुशवाहा,मध्यम वर्ग में गुरुनानक इण्टर कॉलेज के संकल्प दूबे,ज्येष्ठ वर्ग में इसी विद्यालय की कुवर्षा प्रजापति एवं वरिष्ठ वर्ग में इसी विद्यालय की कुप्रतिभा यादव ने टॉप किया। निबन्ध प्रतियोगिता के कनिष्ठ वर्ग में ओपस इण्टरनेशनल स्कूल की कुशुक्तिका सिंह,वर्धमान पब्लिक स्कूल की कुजिया प्रजापति,ज्येष्ठ वर्ग में दिव्यांश इंस्टिट्यूट के अजित पाल एवं वरिष्ठ वर्ग में गुरुनानक इण्टर कॉलेज की कुसौम्या गोयल टॉपर रहीं। प्रथम द्वितीय व तृतीय के साथ–साथ प्रत्येक वर्ग से पांच–पांच प्रशंसित बच्चों को भी पुरस्कृत किया गया। इन 49 बच्चों को मुख्य अतिथि पद्मश्री उर्मिला श्रीवास्तव, अध्यक्ष डॉ नीरज त्रिपाठी, विशिष्ट अतिथि राजपति ओझा, सुभाष वर्मा, अमरनाथ तिवारी, साहित्यकार केदारनाथ सविता, प्रमोद गुप्ता, सारिका चौरसिया, नंदिनी वर्मा, जय कुमार, आनंद केसरी, शंकर राय ने अपने कर कमलों से मंच पर मोमेंटो और प्रमाण पत्र देकर पुरस्कृत किया। कार्यक्रम में सीताराम, मेवालाल, मिलन, रमेश प्रजापति, राकेश शुक्ल, स्कूलों के प्रधानाचार्य और अनेक अभिभावक उपस्थित रहे।

भाजपा कार्यालय में मनाई गई लौह पुरुष की पुण्यतिथि

अयोध्या(एजेंसी)। भाजपा महानगर कार्यालय सहादतगंज में भारत रत्न सरदार बल्लभ भाई पटेल की पुण्य तिथि मनाई गई। महानगर अध्यक्ष कमलेश श्रीवास्तव तथा महानगर उपाध्यक्ष राम प्रीत वर्मा द्वारा उनके चित्र पर मार्ल्यापर्ण कर श्रद्धासुमन अर्पित किया। इस दौरान संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया।

संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए महानगर अध्यक्ष ने कहा कि देश की एकता व अखण्डता के लिए शिल्पकार की भूमिका में उन्हें याद करते है। स्वतंत्रता के बाद रियासतों के बटे भारत को एक करके उसे आंतरिक रुप से उन्होंने मजबूत किया। अखंड भारत निर्माण में उनके योगदान कभी विस्मृत नही किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि सरदार वल्लभ भाई पटेल के जीवन चरित्र का अध्ययन हमें अखण्डता व एकता का पाठ पढ़ाता है। हम उन्हे लौह पुरुष के रुप में याद करते है। महानगर उपाध्यक्ष राम प्रीत वर्मा ने कहा कि आज के इस अवसर पर हम भारत की एकता व अखंडता के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करने का संकल्प लेते है। इस दौरान महानगर महामंत्री शैलेन्द्र कोरी, उपाध्यक्ष तिलकराम मौर्या, काशीराम रावन, राकेश मणि त्रिपाठी, शशि प्रताप सिंह, वरुण चौधरी, लक्ष्मण वर्मा, राजकुमार वर्मा, राम भजन वर्मा, स्वप्निल श्रीवास्तव, पार्षद अनूप श्रीवास्तव, देवता पटेल, कपिल देव वर्मा, चंदन कसेरा, कार्यालय मंत्री सुशील मिश्र बब्लू सहित पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे

वन नेशन वन इलेक्शन लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत बनाने की दिशा में बढ़ता कदम

हालांकि मोदी सरकार आने के बाद से ही 2014 से एक देश एक चुनाव पर चर्चा का सिलसिला चल निकला था। 2017 में नीति आयोग ने इसे उपयुक्तबताया और 2018 में संसद के संयुक्तसत्र को संबोधित करते हुए तत्कालीन राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने इसे सही दिशा बताया।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा ।

17 दिसंबर को लोकसभा में केन्द्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल द्वारा एक देश एक चुनाव से संबंधित विधेयक पेश करने के साथ ही देश में लोकसभा और सभी राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव एक साथ होने की दिशा में एक कदम और बढ़ जाएगा। हांलाकि सरकार इस विधेयक को संसदीय समिति को भेजने की मंशा व्यक्त करती रही है ताकि इस पर सांसदीय समिति के माध्यम से गंभीर मंथन और चिंतन हो सके। हांलाकि अभी एक देश एक चुनाव की दिशा में बढ़ते कदमों में स्थानीय निकायों के चुनावों की प्रकिया बाकी है जिस पर सरकार ने अभी गंभीरता नहीं दिखाई है और उसका कारण भी है कि उस प्रस्ताव के विधेयक को विधानसभाओं से भी पारित करवाया जाना होगा। खैर लोकसभा और विधानसभा के चुनाव एक साथ होते हैं तो भले ही कांग्रेस सहित विपक्ष विरोध कर रहे हो पर माना जाना चाहिए कि यह सही दिशा में बढ़ता कदम होगा। ऐसा नहीं है कि भारतीय लोकतंत्र के लिए यह कोई नई बात हो बल्कि आजादी के समय से ही देश में एक साथ चुनाव कराने पर बल दिया जाता रहा है। 1952, 1957, 1962 और 1967 के चुनाव इसके उदाहरण है। 1968 से विधानसभाओं को भंग करने का जो सिलसिला चला उसने पूरे हालात ही बदल दिए और उसके बाद लोकसभा और विधानसभा के चुनाव अलग अलग होने लगे। केवल सहूलियत ही मानलो अन्यथा अलग अलग चुनावों के दुष्परिणाम अधिक ही सामने आते हैं। यह केवल चुनावों पर होने वाले सरकारी और गैरसरकारी खर्चों तक ही सीमित ना होकर अलग अलग चुनाव होने से एक नहीं अनेक समस्याओं का कारण बन रहे हैं। लोकसभा और विधानसभाओं के चुनाव अलग अलग होने से करीब एक साल तक चुनी हुई सरकार पंगु ही बन कर रह जाती है। इसको राजस्थान सहित अन्य प्रदेशों के चुनावों से इस तरह से समझा जा सकता है। हांलाकि यह उदाहरण मात्र है और सभी प्रदेशों पर समान तरीके से लागू होता है। नवंबर दिसबंर में राजस्थान की विधानसभा के चुनाव होते हैं। सरकार बनते ही अपनी प्राथमिकता भी तय कर पाती है जब तक बजट की तैयारी में जुटना पड़ता है क्योंकि अब फरवरी में ही बजट सेशन होने लगे हैं। मई जून में लोकसभा के चुनाव के कारण अप्रेल से ही आचार संहित लगने की तलवार लटक जाती है और फिर करीब डेढ़ माह का समय आचार संहिता को समर्पित हो जाता है। इसके कुछ समय बाद ही या यों कहे कि परिवर्तित बजट से निपटते निपटते सरकार के सामने स्थानीय निकायों व पंचायतीराज संस्थाओं के चुनाव का समय हो जाता है और उसके कारण लंबा समय इन चुनावों के कारण आचार संहिता के भेंट चढ़ जाता है। इस बीच में कोई कोई ना कोई उप चुनाव आ जाते हैं तो उसका असर भी चुनी हुई सरकार को भुगतना पड़ता है। जैसे तैसे चौथा साल पूरा होने को होता है कि सरकार ताबड़तोड़ निर्णय करने लगती है और इनके क्रियान्वयन का समय आते आते चुनाव आचार संहिता लग जाती है। इस तरह से एक बात तो साफ हो जाती है कि पांच साल के लिए चुनी हुई लोकतांत्रिक सरकार का कमोबेस करीब एक साल का समय तो चुनाव आचार संहिताओं के ही भेंट चढ़ जाता है। यह तो केवल लोकतांत्रिक जनता द्वारा चुनी हुई सरकार के कार्यों के प्रभावित होने का एक उदाहरण मात्र है। अब अलग अलग चुनाव होने से चुनाव पर होने वाले सरकारी और गैर सरकारी खर्चों पर भी ध्यान दिया जा सकता है। 1952 के पहले चुनाव में सरकारी व गैरसरकारी जिसमें राजनीतिक दलों और चुनाव लड़ने वालों का खर्च भी शामिल है वह करीब 10 करोड़ के आसपास रहा। 2010 के आमचुनाव में 10 हजार करोड़ रु. का व्यय माना जा रहा है जो 2019 में 55 हजार करोड़ और 2024 के आमचुनावों में एक लाख करोड़ को छू गया है। इसमें चुनाव आयोग, प्रशासनिक व्यवस्थाओं के साथ ही राजनीतिक दलों, प्रत्याशियों द्वारा होने वाला खर्च शामिल है। हालांकि मोदी सरकार आने के बाद से ही 2014 से एक देश एक चुनाव पर चर्चा का सिलसिला चल निकला था। 2017 में नीति आयोग ने इसे उपयुक्त बताया और 2018 में संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित करते हुए तत्कालीन राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने इसे सही दिशा बताया। सितंबर 2023 में पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में 6 सदस्यीय कमेटी बनाई गई और 65 बैठके कर 18626 पन्नों की रिपोर्ट इसी साल मार्च, 24 में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु को पेश की गई। यदि इन सभी सिफारिशों को लागू किया जाता है तो 18 संसोधनों की आवश्यकता होगी। हांलाकि सरकार ने अभी एक हिस्से यानी कि लोकसभा और विधानसभाओं के चुनाव एक साथ करने की दिशा में कदम बढ़ाती लग रही है। और माना जा रहा है कि 2029 के चुनाव नई व्यवस्था यानी कि एक देश एक चुनाव वन नेशन वन इलेक्शन से हो। हांलाकि इसके लिए चुनाव आयोग व सरकारों को काफी मशक्कत करनी पड़ेगी पर यदि एक बार यह सिलसिला चल निकलेगा तो इसे लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत ही माना जाएगा।

राजनीतिक दलों द्वारा यह शंका व्यक्त की जा रही है कि इससे छोटे व स्थानीय दलों के अस्तित्व पर ही संकट आ जाएगा। इसके साथ ही वोटिंग पेटर्न प्रभावित होगा। चुनाव में कानून व्यवस्था बनाए रखने और चुनाव के लिए मशीनरी भी अधिक लगाने की बात की जाती है तो खर्चे व आधारभूत सुविधाओं यथा ईवीएम मशीन, वीवीपेट मशीन, उनके रखरखाव सहित अन्य आवष्यक संसाधनों की आवश्यकताओं को लेकर भी शंका व्यक्त की जा रही हैं। हालांकि जिस तरह से चुनाव आयोग ने संसाधनों का आकलन कर अपनी आवश्यकताएं सरकार को बता दी है उससे लगता है कि चुनाव आयोग भी वन नेशन वन इलेक्शन के लिए मानसिक रुप से पूरी तरह से तैयार है। 2029 के चुनाव में चुनाव आयोग द्वारा 7951 करोड़ रुपए का खर्च अनुमानित किया गया है। राजनीतिक दलों और प्रत्याशियों सहित अन्य खर्च अलग होंगे। वन नेशन वन इलेक्शन के सकारात्मक पक्ष भी है और उन्हें हल्के में नहीं लिया जा सकता। वन नेशन वन इलेक्शन हमारे देश के लिए कोई नई बात नहीं है उसी तरह से दुनिया के अन्य देशों जर्मनी, जापान, दक्षिणी अफ्रीका, स्वीडन, इंडोनेशिया, फिलिपिंस आदि में भी एक साथ चुनाव होते रहे हैं। कोविंद कमेटी ने जर्मनी के चुनाव पेटर्न को बेहतर व अनुकरणीय भी माना है। खैर यह अलग बात है।

एक बात साफ हो जानी चाहिए कि एक साथ चुनाव होने से संसाधन तो एक बार जुटाने होंगे पर उसके बाद व्यवस्था सुनिश्चित हो जाएगी। आजादी के 75 साल से भी अधिक समय हो जाने के बाद जिस तरह से मतदाताओं की उदासीनता देखी जा रही है वह निश्चित रुप से कम होगी। राजनीतिक दल भले ही आज विरोध कर रहे हैं पर एक साथ चुनाव से उन्हें भी कम मशक्कत व एक बार ही मशक्कत करनी होगी। प्रचार सामग्री से लेकर प्रचार अभियान को आसानी से संचालित किया जा सकेगा। योजनाबद्ध प्रयासों से विधानसभा व लोकसभा प्रत्याशियों का एक साथ प्रचार अभियान संचालित हो सकेगा जिससे अलग अलग चुनाव होने से बार बार होने वाले व्यय में कुछ हद तक राजनीतिक दलों को भी कम खर्च करना पड़ेगा। चुनी हुई सरकारों को बार बार आचार संहिता के संकट से गुजरना नहीं पड़ेगा और सरकार को काम करने का अधिक समय मिल सकेगा। दोनों चुनाव एक साथ होने से भले ही पोलिंग बूथ अधिक बनाने पड़े, मशीनरी अधिक लगानी पड़े पर मतदाताओं और चुनाव कराने वाली मषीनरी के लिए भी सुविधाजनक होगा। एक बात यह भी कि असामाजिक तत्वों की गतिविधियां भी काफी हद तक कम हो सकेगी। इससे सरकारी संसाधनों की बचत, मानव संसाधन को बार बार नियोजित करने से होने वाले सरकारी कार्य में बाधा में बचत और प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रुप से बार बार चुनाव के स्थान पर एक साथ चुनाव होने से खर्चों में भी कमी आएगी। देखा जाए तो वन नेशन वन इलेक्शन लोकतंत्र और लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं को मजबूत करने की दिशा में बढ़ता कदम माना जा सकता है।

सम्पादकीय

अडानी मुद्दे पर कुछ दिखावे के लिए राहुल व कांग्रेस के साथ जुड़े

यह संयोग है या प्रयोग कि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की पार्टी ने संसद के शीतकालीन सत्र में कांग्रेस के कन्नी काटी और अडानी मुद्दे पर संसद ठप्प करने में शामिल होने से इनकार किया। उसके बाद ममता बनर्जी के विपक्षी गठबंधन का नेता बनने की चर्चा शुरू हो गई? यह सही है कि ममता बनर्जी ने खुद ही चर्चा शुरू कराई। उन्होंने कहा कि, इंडिया' ब्लॉक का गठन उन्होंने किया है और इसलिए मौका मिले तो उसका नेतृत्व करना चाहेंगी। हालांकि हकीकत यह है कि विपक्ष का गठबंधन बनाने का ममता का, के चंद्रशेखर राव का और अरविंद केजरीवाल का प्रयास विफल था। अभी जो विपक्षी गठबंधन है वह नीतीश कुमार का बनाया है, जिसमें ममता बनर्जी भी थीं और बाद में नीतीश व ममता दोनों बाहर हो गए। परंतु पहले ममता की पार्टी तृणमूल कांग्रेस ने कहा कि वह अडानी के मसले पर संसद ठप्प करने के पक्ष में नहीं है और उसके सांसदों ने कांग्रेस व दूसरी विपक्षी पार्टियों के प्रदर्शन में शामिल होना बंद किया। उसके बाद ममता ने इंडिया' ब्लॉक का नेता बनने की इच्छा जाहिर की और फिर एक एक करके तमाम विपक्षी पार्टियां उनका समर्थन करने लगीं।

उद्धव ठाकरे की शिव सेना के नेता संजय राउत ने भी उनका समर्थन किया तो शरद पवार ने भी उनका साथ दिया। कांग्रेस के ऑल वेदर फ्रेंड माने जाने वाले लालू यादव ने तो यहां तक कहा कि ममता बनर्जी को नेता बना देना चाहिए और कांग्रेस अगर विरोध करती है तो उस पर ध्यान देने की जरुरत नहीं है। इनमें से उद्धव ठाकरे एकमात्र नेता हैं, जिन्होंने खुल कर अडानी का विरोध किया था लेकिन ऐसा लग रहा है कि उनका विरोध महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव तक सीमित था और वह भी अडानी के एक धारावी प्रोजेक्ट को लेकर था। सिद्धांत रूप से वे अडानी, अंबानी विरोधी नहीं माने जाते हैं। आखिर अंबानी के यहां शादी में बाराती बन कर जितने नेता शामिल हुए थे उनमें राहुल या नेहरू गांधी परिवार के अलावा बाकी सारे विपक्षी नेता शामिल ही थे। ममता भी थीं और लालू प्रसाद का पूरा परिवार भी था और अखिलेश यादव भी सपरिवार पहुंचे थे। लेफ्ट के नेता जरूर नहीं गए थे लेकिन संभवतरू उनको बुलाया भी नहीं गया हो। लेकिन सोनिया गांधी के परिवार को न्योता देने तो मुकेश अंबानी खुद पहुंचे थे।

सो, पहले ममता बनर्जी की पार्टी ने अडानी के नाम पर संसद ठप्प करने इनकार किया और उसके बाद अखिलेश यादव की समाजवादी पार्टी ने भी यही लाइन पकड़ी। सपा प्रमुख अखिलेश यादव की सांसद पत्नी डिंपल यादव ने कहा कि अडानी मामले से सपा का कोई लेना देना नहीं है। सवाल है कि कांग्रेस का भी क्या लेना देना है? फिर भी कांग्रेस ने इसे बड़ा मुद्दा बनाया है क्योंकि एक के बाद एक अंतरराष्ट्रीय मीडिया समूह, पत्रकारों का संगठन और विदेशी सरकारें या उनकी एजेंसियां अडानी समूह को कठघरे में खड़ा कर रही हैं। अडानी दुनिया में क्रोनी कैपिटलिज्म के प्रतीक बने हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ उनके संबंधों को उछालने से बड़ा राजनीतिक नैरेटिव बनता है। इसलिए कांग्रेस और राहुल गांधी यह मुद्दा उठा रहे हैं। लेकिन बाकी विपक्षी पार्टियां या तो इससे अलग हो रही हैं या दिखावे के लिए कांग्रेस के विरोध प्रदर्शन में शामिल हो रही हैं।ममता बनर्जी और अखिलेश यादव की पार्टी विपक्ष के विरोध प्रदर्शन से अलग हो गई लेकिन लालू प्रसाद और शरद पवार की पार्टी विरोध प्रदर्शन में शामिल है। एक और सत्य कि शरद पवार का तो अडानी विरोध कभी रहा ही नहीं है। फिर उनकी पार्टी के अडानी के खिलाफ प्रदर्शन में शामिल होने का कोई मतलब नहीं है क्योंकि वह सिर्फ दिखावा है। आखिर चाचा भतीजे यानी शरद पवार और अजित पवार ने स्वीकार किया है कि 2019 में महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के बाद सरकार गठन में गतिरोध पैदा हुआ था तो ये सभी लोग अडानी के साथ बैठे थे सरकार बनाने के लिए।

बांग्लादेश मामले में कूटनीति व राजनीति पर एक कदम आगे निकली ममता बनर्जी

जगदीश यादव ।

भारत हमेशा से विश्व में शांति का प्रतीक रहा है। ममता बनर्जी ने कहा कि इस समय बांग्लादेश में टकराव का माहौल बन गया है। इसे निपटाने के लिए अंतरिम युनुस सरकार नाकाम नजर आती है। ऐसे में शांति सेना भेजकर वहां पर शांति स्थापित की जाए।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर केंद्र की भाजपा नीत सरकार के द्वारा अल्पसंख्यकों को लेकर तुष्टीकरण से लेकर बंगाल में बांग्लादेशियों को शरण देने का आरोप लगाया जाता रहा है। लेकिन इन दिनों बांग्लादेश में हिंदू अल्पसंख्यकों पर लगातार अत्याचार हो रहे हैं और मीडिया में उक्त खबरें हर रोज आ रही है। ऐसे में भले ही देश के पीएम नरेंद्र मोदी का उक्त मुद्दे पर कोई बयान नहीं आया है लेकिन ममता बनर्जी ने सशक्त तौर पर इस अंतरराष्ट्रीय मुद्दे को उठाया है और बांग्लादेश की मोहम्मद यूनुस सरकार को नाकाम तक करार दिया है। ममता बनर्जी ने बांग्लादेश से उपजे एक बयान का जवाब देते हुए साफ कहा कि, अगर वह लोग बिहार, बंगाल ओडिशा जैसे हमारे देश के राज्यों पर कब्जे की बात करेंगे तो वह बैठकर लॉलीपॉप नहीं चूसेगी। साथ ही मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बेहद गंभीर और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बात कही। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने आज राज्य विधानसभा में कहा कि, बांग्लादेश के हालात पर यूएन हस्तक्षेप करे और वहां विशेष शांति सेना भेजे।भारत हमेशा से विश्व में शांति का प्रतीक रहा है। ममता बनर्जी ने कहा कि इस समय बांग्लादेश में टकराव का माहौल बन गया है। इसे निपटाने के लिए अंतरिम युनुस सरकार नाकाम नजर आती है। ऐसे में शांति सेना भेजकर वहां पर शांति स्थापित की जाए। ममता बनर्जी ने उक्त अंतरराष्ट्रीय मुद्दे पर मोदी सरकार के साथ खड़े होने की बात करते हुए यह साबित कर दिया है कि वह राजनीति से लेकर कूटनीति के मामलों में एक सफल नेता हैं और उन्हें पता है कि कब क्या करना चाहिए। साथ ही तृणमूल प्रमुख ने समाज को यह भी संदेश दिया कि, कुछ लोग आपसी सद्भावना को खराब कर सकते हैं ऐसे में शांति और सूझबूझ से काम लेना चाहिए। देखा जाए तो बांग्लादेश के मामले पर मोदी सरकार से हिंदू समाज जिस तरह की प्रतिक्रिया की उम्मीद कर रहा था वह नहीं दिखा। यह अलग बात है कि पीएम भले ही सामने नहीं आए हों लेकिन केन्द्र ने बंग्लादेश को संकेत में बता दिया है कि मामले पर भारत की आंखें बंद नहीं है। जबकि आरएसएस ने बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे हमलों को लेकर चिंता जाहिर की है। साथ केंद्र सरकार से सख्त कदम उठाने की अपील की है। कांग्रेस ने भी मुद्दे पर अपना पक्ष सामने रख दिया है। लेकिन देखा जाए तो बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे हमलों को लेकर बंगाल की सीएम ममता बनर्जी राजनीति से लेकर कूटनीति के मामलों में एक कदम आगे निकल गईं है।

इसे भी पढ़ेंरू ठंदहसंकमेी में हिंदुओं पर हमले, मोहम्मद यूनुस से नोबेल पुरस्कार वापस लेने की मांग, प्रभासाक्षी के सवाल पर विदेश मंत्रालय ने जानें क्या कहा

ममता बनर्जी जब सांसद थी तब भी बंगाल में वाममोर्चा के शासन के दौरान बंगाल में अवैध बांग्लादेशियों का मुद्दा उठा चुकी है। लेकिन ममता बनर्जी की सरकार बनने के बाद भी बंगाल में अवैध बांग्लादेशियों का मुद्दा उठता रहा है। वैसे देखा जाए तो भाजपा के केन्द्रीय नेताओं के मुकाबले में बांग्लादेश में हिंदू अल्पसंख्यकों पर लगातार अत्याचार के मामले पर बंगाल भाजपा के नेता भी लगभग मौन ही है। लेकिन बंगाल में नेता प्रतिपक्ष व भाजपा नेता शुभेंदु अधिकारी जोरदार तौर पर उक्त मामले पर विरोध व्यक्त कर रहें हैं और बांग्लादेश को चेता भी रहे है। हलांकि अब जाकर बांग्लादेश ने यह माना कि शेख हसीना सरकार के अपदस्थ होने के बाद देश में अल्पसंख्यकों विशेषकर हिंदुओं पर हिंसा की 88 घटनाएं हुई हैं। अंतरिम सरकार के प्रमुख मोहम्मद यूनुस के प्रेस सचिव शफीकुल आलम ने कहा कि, इन घटनाओं में 70 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। पांच अगस्त से 22 अक्टूबर के दौरान अल्पसंख्यकों से संबंधित घटनाओं को लेकर कुल 88 मामले दर्ज किए गए। उन्होंने कहा कि मामलें और गिरफ्तारियां और बढ़ सकती है, क्योंकि कई क्षेत्रों में हिंसा की नई घटनाएं सामने आई हैं। देखा जाए तो दरअसल, बांग्लादेश में हो रहे अल्पसंख्य हिन्दू उत्पीड़न कोई नई बात नहीं हैं। वहां कोई भी सरकार हो निशाने पर हिन्दू महेशा रहे है।

बात बांग्लादेश में तत्कालीन घटना की करें तो इस्कॉन के संन्यासी चिन्मय कृष्ण दास के गिरफ्तारी से शुरु हुई। पहले इन्हें राष्ट्रद्रोह के आरोप मे फिर इनके सहयोगियों को हिरासत में लिया गया है। यहां तक कि जेल में इन साधुओं को बाहर से भोजन उपलब्धा कराने के नाते भी गिरफ्तारियां हुई है, क्योंकि अपने भोजन संबंधित नियमों के नाते ये कुछ भी और कही का भी खाना नहीं खा सकते हैं। फिर जब हिन्दू समाज ने विरोध शुरु किया तो उनके उपर हमलें शुरु हो गए और हिंदू समुदाय को आज वहां यातना झेलनी पड़ रही है। बहरहाल दो देशों को सामने रख कर अगर सरल शब्दों में राजनीति व कूटनीति की बात करे तो कहा जा सकता है कि राजनीति में कब क्या बदल जाए कोई कह नहीं सकता। यहां कुछ भी दावे के साथ स्थायी नहीं होता है। लेकिन कूटनीति की बात करे तो कहा जा सकता है कि जब बात देश व उससे जुड़े लोग और मुद्दों की बात हो तो वहां राजनीति नहीं की जा सकती बरन वहां कूटनीति ज्यादतर कारगर होती है। देखा जाए तो उपरोक्त मुद्दे पर ममता बनर्जी एक कदम आगे निकली दिख रहीं है।

सुप्रीम कोर्ट की नेक सलाह

देश की सबसे बड़ी अदालत अर्थात् सुप्रीम कोर्ट कई बार नेक सलाह दे चुकी है लेकिन वोट की राजनीति के चलते सरकार उन पर ध्यान नहीं देती। सुप्रीम कोर्ट ने आरक्षण को लेकर एक सुझाव दिया था कि अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के उन लोगों के परिजनों को आरक्षण का लाभ नहीं मिलना चाहिए जिसके परिवार में आईएएस, पीसीएस जैसे पदों पर विद्यमान हैं। कोर्ट का आशय था कि आरक्षण की समीक्षा होनी चाहिए और एससी–एसटी में भी कितने ही लोग अभी सामान्य सुविधाओं से भी वंचित हैं, उनको विशेष सहायता मिलनी चाहिए। सुप्रीम कोर्ट का यह सुझाव मानने से केन्द्र सरकार ने इनकार कर दिया। हालांकि सरकार में शामिल कुछ घटक आरक्षण की समीक्षा के पक्ष में थे। बड़ी संख्या में विरोध हुआ और वोट की राजनीति के चलते ही इस सुझाव को किनारे कर दिया गया। अब सुप्रीम कोर्ट ने एक और नेक सलाह दी है। केन्द्र से लेकर राज्य सरकारें तक कथित गरीबों को मुफ्त राशन दे रही हैं। मुफ्त राशन लेने वालों की संख्या 81 करोड़ बताई जा रही है। कोर्ट का सुझाव है कि सरकार इन कथित गरीबों को मुफ्त राशन देने पर ही नहीं बल्कि उन्हें कोई काम धंधा देने का प्रयास करे। यह सच है, शायद कड़वा सच है कि मुफ्त राशन लेने वाले अकर्मण्य और काहिल हो गये हैं। उन्हें रोजगार दिया जाए तो समाज में एक सकारात्मक बदलाव आएगा। सुप्रीम कोर्ट के इस सुझाव पर भी अमल होगा, यह आसार नहीं दिखते क्योंकि चुनाव के समय खटाखट, मां–बहना योजना और बेरोजगारी भत्ता से वोट मिल रहे हैं तो मुफ्त राशन को कैसे बंद किया जाएगा?

सुप्रीम कोर्ट ने सरकार से कहा कि गरीब लोगों को केवल मुफ्त राशन देने पर ही नहीं बल्कि उन्हें रोजगार दिए जाने पर भी सरकार को काम करना चाहिए। कोर्ट ने प्रवासी मजदूरों को फ्री राशन की व्यवस्था पर सवाल उठाया और कहा लोगों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने की जरूरत है।

उच्चतम न्यायालय ने 9 दिसंबर को खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत भोजन उपलब्ध कराने से संबंधित मामले की सुनवाई करते हुए यह बात कही। कोर्ट ने कहा कि लोगों को कब तक मुफ्त चीजें दी जा सकती हैं? दरअसल जस्टिस सूर्यकांत और मनमोहन की बेंच के सामने एक एनजीओ की ओर से पेश हुए वकील प्रशांत भूषण ने कहा कि ई–श्रम पोर्टल पर पंजीकृत सभी प्रवासी श्रमिकों को मुफ्त राशन उपलब कराने के लिए निर्देश जारी किए जाने की आवश्यकता है। दलील में केंद्र सरकार ने कोर्ट को बताया कि राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013 के तहत 81 करोड़ लोगों को मुफ्त राशन दिया जा रहा है। इस पर कोर्ट ने कहा कि कब तक मुफ्त चीजें दी जा सकती हैं? हम इन प्रवासी श्रमिकों के लिए रोजगार के अवसर और क्षमता निर्माण पर क्यों नहीं काम करते? प्रशांत भूषण ने कहा कि अदालत ने समय–समय पर सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को प्रवासी श्रमिकों को राशन कार्ड जारी करने के निर्देश जारी किए हैं, ताकि वे केंद्र द्वारा प्रदान किए जाने वाले मुफ्त राशन का लाभ उठा सकें। मगर नवीनतम आदेश में कहा गया है कि यदि किसी के पास राशन कार्ड नहीं है और अगर वह इंसान ई–श्रम पोर्टल पर रजिस्टर्ड है, तो उसे भी केंद्र सरकार द्वारा मुफ्त राशन दिया जाएगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जबसे सत्ता में आए हैं, अभियान और योजनाओं की लंबी फेहरिस्त तैयार कर दी है। मेक इन इंडिया हो या वोकल फॉर लोकल अथवा एक जिला एक उत्पाद, इन सभी योजनाओं ने देश के छोटे कारोबारी से लेकर बड़े उद्योगपतियों तक को अपना बिजनेस बढ़ाने का मौका उपलब्ध कराया है। मोदी सरकार की सफल योजनाओं की बात करें तो इसकी सूची काफी लंबी हो जाएगी, लेकिन हम यहां 3 सबसे सफल स्कीम की चर्चा करेंगे। इसमें से दो योजनाएं तो ऐसी हैं, जिसका फायदा देश की करीब आधी जनसंख्या को मिल रहा है। पीएम मोदी ने साल 2014 में पहली बार सत्ता संभालने के बाद 15 अगस्त, 2014 को लाल किले की प्राचीर से सबसे पहले जिस योजना का ऐलान किया था, उसे आज पूरी दुनिया में सराहा जा रहा है। यह योजना न सिर्फ गरीब परिवारों के लिए बड़ा आर्थिक हथियार साबित हुई, बल्कि देश की महिलाओं को भी मजबूत बनाने का काम किया। हम बात कर रहे हैं जनधन योजना की। 28 अगस्त, 2014 को लागू हुई जनधन योजना का फायदा अब तक करीब 53 करोड़ लोगों को मिल चुका है। यह आंकड़ा अपने आप में सफलता की पूरी कहानी बयां करता है। योजना का सबसे ज्यादा लाभ महिलाओं को मिला, क्योंकि अभी तक उनके पास आर्थिक आजादी के लिए कोई विकल्प या टूल नहीं था। इस योजना के तहत सबसे ज्यादा खाते महिलाओं के ही खोले गए। देश के दूरदराज क्षेत्रों में रहने वाले गरीबों के पास अपना बैंक खाता होने से आर्थिक आजादी की राह खुल गई। आज सरकार की सभी योजनाओं का लाभ सीधे उनके बैंक खाते में पहुंच रहा है। इससे बिचौलियों का धंधा तो बंद हुआ ही, गरीबों के हाथ में आ रहे पैसे की सुरक्षा भी सुनिश्चित हो गई। इस खाते में लोगों को 10 हजार रुपये की ओवरड्राफ्ट सुविधा भी मिलती है। जाहिर है कि अब उन्हें इमरजेंसी में किसी के सामने हाथ फैलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। आपको बता दें कि इस योजना की तारीफ वर्ल्ड बैंक और आईएमएफ भी कर चुके हैं।

सबसे सफल योजनाओं की बात की जाए तो मोदी सरकार की मुफ्त राशन योजना ने देश के 80 करोड़ लोगों को संभाल रखा है। यह भारत की आधी जनसंख्या से भी बड़ा आंकड़ा है। इस योजना की शुरुआत उस समय हुई थी, जब भारत सहित पूरी दुनिया कोरोना महामारी से जूझ रही थी। देश में लगे 76 दिन लंबे लॉकडाउन में लोगों का कामकाज ठप पड़ गया था। तब पीएम मोदी ने देश के 80 करोड़ लोगों को घर बैठे मुफ्त राशन बांटने का जिम्मा उठाया और करीब 4 साल से यह योजना सफलतापूर्वक चल रही है, ।

आउटसोर्स कर्मचारियों को शोषण से मिलेगी मुक्ति

'मुख्यमंत्री से मिला राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद का प्रतिनिधिमंडल

मीरजापुर(एजेंसी)। आर्थिक प्रताड़ना के साथ तंगहाली भरी जिंदगी जीते हुए भी बराबर ड्यूटी बजाते आएं आउटसोर्स कर्मचारियों के लिए अच्छी खबर है, उन्हें अब शोषण से मुक्ति मिलेगी. इसके लिए राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद ने पहल तेज करने के साथ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने से लखनऊ में मुलाकात कर आउटसोर्स कर्मचारियों की समस्याओं को भी सामने रखा है. बताते चलें कि केंद्र सरकार द्वारा लिए गए निर्णयों के क्रम में उत्तर प्रदेश में आउटसोर्सिंग के लिए जेम पोर्टल के माध्यम से मैन पावर क्रय की व्यवस्था लागू है. उत्तर प्रदेश शासन के कार्मिक– 2 के शासनादेश संख्या– 8ध्2019ध् 20ध्1– 19– का–2ध् 2019 18 दिसंबर 2019 के माध्यम से उत्तर प्रदेश के शासकीय विभाग एवं उनके अधीनस्थ संस्थानों में केवल जेम पोर्टल के माध्यम से मैनपॉवर आउटसोर्स किए जाने के दिशा निर्देश जारी किए गए हैं. उक्त शासनादेश के बिंदु 7 में यह प्रावधान किया गया है कि ष्सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम तथा सेवायोजन विभागों द्वारा जेम पोर्टल व्यवस्था को सुचार रूप से चलाने के लिए शासनादेश के निर्गत किए जाने की तिथि से 45 दिन के अंदर प्रत्येक दशा में संगत कार्यवाही सुनिश्चित कराई जाएगी.ष कार्मिक अनुभाग– 2 के शासनादेश 18 दिसंबर 2019 की व्यवस्था के अंतर्गत यह समझा जा रहा था कि सूक्ष्म लघु मध्यम उद्यम एवं सेवायोजन विभाग आउटसोर्स पर कार्यरत कर्मियों के लिए सुसंगत नियमावली का प्रख्यापन कर उनकी सेवा शर्तों को संरक्षित करेंगे एवं न्यूनतम मानदेय का निर्धारण भी करेंगे, परंतु शासनादेश जारी होने के पांच साल बाद भी आउटसोर्स कर्मचारियों लिए ना तो नियमावली जारी की गई है और ना ही उनका न्यूनतम मानदेय ही निर्धारित किया गया है, जो सेवा प्रदाता एजेंसियों के लिए खुली छूट है. सेवा प्रदाता एजेंसी आउटसोर्स कर्मियों का आर्थिक सामाजिक एवं श्रम शोषण कर रही है. आउटसोर्स कर्मी नियुक्ति से लेकर भुगतान तक आर्थिक शोषण के शिकार है. सेवा प्रदाता एजेंसियां नियुक्ति के समय प्रत्येक आउटसोर्स कर्मी से नियुक्ति के नाम पर लाखों रुपए का लेनदेन करती है, वहीं समय से मानदेय का भुगतान नहीं किया जाना, निर्धारित मानदेय से कम का भुगतान किया जाना, आउटसोर्स कर्मी के मानदेय से सेवा कर वसूला जाना (ळैज) तथा निर्धारित घंटों से अधिक काम लिया जाना भी शोषण का जरूरी हिस्सा है. हालांकि सूक्ष्म लघु मध्यम उद्यम विभाग ने आउटसोर्स कर्मचारियों को शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए 2020 में एक आदेश जारी किया है, लेकिन संगत नियमावली ना होने के कारण सेवा प्रदाता एजेंसियां निरंकुश है. राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के प्रांतीय अध्यक्ष जेएन तिवारी के नेतृत्व में संयुक्त परिषद के प्रतिनिधिमंडल मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात कर बताया कि संगठन ने पूर्व में भी उन्हें (मुख्यमंत्री) आउटसोर्स कर्मचारियों के शोषण से अवगत कराया था. तब मुख्यमंत्री जी ने आउटसोर्स कर्मचारियों को शोषण से मुक्ति दिलाने, न्यूनतम मजदूरी निर्धारित करने एवं नियमावली बनाने के निर्देश भी जारी किए थे, परंतु अभी तक न्यूनतम मजदूरी का निर्धारण नहीं हो सका है एवं नियमावली भी प्रकाशित नहीं हो सकी है. आउटसोर्स कर्मियों को शोषण से बचाने के लिए राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद की तरफ से निम्नवत सुझाव प्रस्तुत करते हुए कार्यवाही का अनुरोध किया गया है जिनमें मुख्य रूप से आउटसोर्स कर्मियों के चयन के लिए आउटसोर्स कर्मचारी चयन आयोग का गठन किया जाए, जिसके माध्यम से पद के अनुरूप योग्यता धारक उम्मीदवारों का चयन हो सके तथा सरकारी कार्यों में गुणवत्ता पूर्वक कार्य हो सके. निजी कंपनियां चयन में निर्धारित योग्यता का ध्यान नहीं रखती हैं जिसके कारण कार्य की गुणवत्ता प्रभावित होती हैनियमावली कार्मिक अनुभाग– 2 के शासनादेश 18 दिसंबर 2019 के क्रम में आउटसोर्स कर्मियों के लिए सुसंगत नियमावली का प्रख्यापन कराया जाए, जिसमें उनकी सेवा शर्तें न्यूनतम मजदूरी एवं अन्य कल्याणकारी प्रावधान निहित हो तथा निम्न प्रावधानों को नियमावली में रखा जाए. संशोधनरू नियमावली 1 अप्रैल 2024 से लागू मानी जाए।लाभार्थीरू उत्तर प्रदेश सरकार के प्रतिष्ठानों में कार्यरत श्रमिक को इसका लाभ दिया जाय। क्षेत्ररू निर्माण, लोडिंग, अनलोडिंग, वॉच एंड वार्ड, हाउसकीपिंग, खनन, कृषि, जन स्वास्थ्य, समाज कल्याण, शिक्षा को इस क्षेत्र इसकी परिधि में रखा जाय। वर्गीकरणरू श्रमिकों का वर्गीकरण कौशल स्तर, कार्य उत्तरदायित्व एवं भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर किया जाए। उद्देश्यरू आउटसोर्स कर्मियों को महंगाई से राहत दिलाया जाना, शोषण से मुक्ति दिलाया जाना सेवा संरक्षित किया जाना है. संशोधन की आवृत्तिरू वर्ष में दो बार 1 अप्रैल एवं 1 अक्टूबर को न्यूनतम मजदूरी, आउटसोर्स कर्मियों की न्यूनतम मजदूरी निम्न प्रकार निर्धारित की जाए

शराब की बोतल से सेल्समैन पर जानलेवा हमला

बड्डूपुर, बाराबंकी (एजेंसी)। कोतवाली बड्डूपुर अन्तर्गत एक व्यक्ति को शराब उधार न देना सेल्समैन को काफी महंगा पड़ गया। दबंग व्यक्ति ने शराब की बोतल से हमला करके सेल्समैन को गम्भीर रुप से घायल कर दिया। पीड़ित ने प्रभारी निरीक्षक को नामजद तहरीर देते हुए कार्यवाही की मांग की है। पुलिस ने जांच पड़ताल शुरु कर दी है। जानकारी के अनुसार, कोतवाली बड्डूपुर क्षेत्र के कस्बा रीवा–सीवां में अंग्रेजी शराब की दुकान स्थित है। दुकान पर सेल्समैनी का काम सीतापुर जनपद के हुसैनगंज थाना क्षेत्र के नेपाल पुर गांव निवासी अनूप जायसवाल पुत्र राम चन्द्र जायसवाल सेल्समैन के पद पर कार्यरत है। रविवार की दोपहर को कस्बा रीवां सीवां के निवासी करन वर्मा शराब की दुकान पर पहुंचा और सेल्समैन से एक शराब की बोतल मांगी। जब सेल्समैन ने कहा कि पहले पैसा दो फिर तुमको शराब देंगे।

मण्डल अध्यक्षों के चुनाव के लिए बूथ अध्यक्षों ने किया मतदान

बड्डूपुर और निन्दूरा मण्डल के लिए 14 लोगों ने प्रस्तुत की दावेदारी

बड्डूपुर, बाराबंकी (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी का बड्डूपुर व निन्दूरा मंडल अध्यक्ष चुनाव सकुशल संपन्न हुआ। जिसमें वर्तमान निदूरा मंडल अध्यक्ष विनय मौर्य सहित कुल 14 लोगों ने मंडल अध्यक्ष के लिए अपनी दावेदारी हेतु नामांकन किया, वहीं बड्डूपुर मंडल चुनाव अधिकारी रचना श्रीवास्तव व निदूरा मंडल चुनाव अधिकारी सतीश जायसवाल रहे। संगठनात्मक चुनाव की प्रक्रिया से गुजर रही भारतीय जनता पार्टी इस बार पार्दर्शिता प्रदर्शित करने की पुरी कवायत में जुटी है पार्टी में दो बार मंडल अध्यक्ष रह चुके को तीसरा मौका देने के मूड में नहीं है। मंडल अध्यक्षों के मामले में पार्टी पहले ही यह व्यवस्था कर चुकी है कि मंडल अध्यक्ष के नए दायित्व के लिए अधिकतम आयु 45 वर्ष से कम हो साथ में वह भाजपा सक्रिय सदस्य हो वही इस चुनाव में भाग ले सकता है। फिलहाल मंडल अध्यक्षों की चुनाव प्रक्रिया चल रही है उसका समय 15 दिसंबर निर्धारित था परिणाम 20 दिसंबर को आने है। इस दौरान बड्डूपुर मंडल में योगेंद्र पटेल, राजेश मिश्रा, अरविंद मौर्य, धर्मेंद्र गुप्ता, आशीष कुमार वर्मा, राम सेवक पुजारी, शिव नंदन भार्गव सहित कुल 11सदस्यों ने अपना नामांकन पत्र चुनाव अधिकारी रचना श्रीवास्तव को दाखिल किया। वहीं रविवार को अशोक विद्या मंदिर के प्रांगण में मंडल चुनाव अधिकारी सतीश जायसवाल के नेतृत्व में 14 सदस्यों ने नामांकन पत्र दाखिल किया। जिसमे विनोद सिंह, राजन सिंह, विनय मौर्य, श्रीश रावत, प्रमोद रावत, मदन सिंह, नरेंद्र सिंह, अमिता सिंह, विशाल सिंह, प्रदीप रावत,हिमांशु विष्वकर्मा, विवेकपाल, दीपक यादव, नितिन मौर्य नामांकन किया। इस नामांकन में मंडल निन्दूरा के सभी 116 बूथ अध्यक्षों ने भाग लिया। चुनाव बाद पांच लोगों ने नामांकन वापस लिया जिसमें विशाल सिंह, नितिन मौर्य, मदन सिंह, प्रमोद रावत, नरेंद्र सिंह दावेदारों ने अपना पर्चा वापस लिया।

आधुनिक भारत के शिल्पी थे सरदार पटेल:संजय राय

74 वीं पुण्य तिथि पर याद किए गए सरदार पटेल

बाराबंकी (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री संजय राय ने कहा कि सरदार पटेल आधुनिक भारत के शिल्पी थे। उन्होंने 562 से अधिक रियासतों को एकीकृत करके भारत को आकर दिया। संजय राय सरदार पटेल की 74वीं पुण्य तिथि पर कोऑपरेटिव सभागार में रविवार को आयोजित पद यात्रा कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा वर्तमान भारत का स्वरूप सरदार पटेल की दूरदृष्टि और सशक्त नेतृत्व का परिणाम है।उन्होंने चंपारण आंदोलन, नमक सत्याग्रह, भारत छोड़ो आंदोलन समेत आजादी से जुड़े सभी महत्वपूर्ण आंदोलनों में सरदार की भागीदारी की विस्तार से चर्चा की। बताया कि आंदोलन के दौरान सरदार को जेल की यातना भी झेलनी पड़ी थी। अन्नदाता किसानों की समृद्धि व उत्थान के लिए सरदार पटेल के जनजागरण कार्यक्रमों के लिए उन्हें हमेशा याद किया जाएगा। सहकारिता क्षेत्र में भारत की ऐतिहासिक सफलता की पृष्ठभूमि में भी सरदार पटेल का ही विजन है। प्रदेश महामंत्री ने कहा कि एक तरफ भारत मां के इस महान सपूत ने देश के एकीकरण के लिए अभियान को आगे बढ़ाया तो दूसरी तरफ गुलामी के कालखंड में जिन मान बिंदुओं का अपमान हुआ था, उनकी पुनर्स्थापना के लिए कई कार्यक्रम संपन्न करवाए। सोमनाथ मंदिर के पुनरुद्धार को हाथों में लेकर सांस्कृतिक भारत की स्थापना का जो अभियान चलाया था, उसी का परिणाम है कि सरदार पटेल के प्रति श्रद्धा व कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए पीएम मोदी के नेतृत्व में नया भारत पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रहा है।कहा, पीएम मोदी और सीएम योगी सरदार पटेल के सपनों को पूरा करने में जुटे हैं। एमएलसी व जिला प्रभारी अवनीश सिंह ने कहा कि सरदार जीवित होते तो पंडित जवाहर नेहरू कश्मीर में धारा 370 कभी नहीं लगा पाते। कहा धारा 370 हटाकर पीएम मोदी ने सरदार के एक भारत श्रेष्ठ भारत के सपने को पूरा किया है। जिलाध्यक्ष अरविंद मौर्य ने अतिथियों का स्वागत किया। भाजपा नेता जंग बहादुर पटेल ने संचालन किया। श्रद्धांजलि कार्यक्रम के उपरांत पद यात्रा निकाली गई जिसमें सैकड़ों लोग शामिल हुए। पटेल चौराहा स्थित प्रतिमा पर माल्यार्पण करके सरदार पटेल को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। प्रदेश महामंत्री ने पटेल प्रतिमा तक पहुंच सुगम करने के लिए सीढ़ियां बनवाने का सुझाव जिला प्रभारी को दिया। इस अवसर पर अजीत प्रताप सिंह, पूर्व एमएलसी हरगोविंद सिंह, गुरुशरण लोधी, विजय आनंद बाजपेई, प्रमोद तिवारी, नवीन राठौर, रोहित सिंह, संदीप वर्मा, गुड्डू चौहान, बृजेश वर्मा, अरुण वर्मा, अनिल रावत, सर्वेश वर्मा, विनय वर्मा मौजूद रहे।

लौह पुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल के निर्माण दिवस पर सरदार पटेल संस्थान के अध्यक्ष धीरेन्द्र कुमार वर्मा के नेतृत्व में स्थानीय पटेल चौराहे पर सरदार पटेल श्रृद्धा व समर्पण कार्यक्रम गुरुवार को किया गया। सरदार पटेल की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर संस्थान के अध्यक्ष धीरेन्द्र वर्मा ने उपस्थित लोगों को सरदार बल्लभभाई पटेल के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके द्वारा दिए गए विचारों पर चलने की अपील की। इस मौके पर संस्थान के उपाध्यक्ष दिनेश चन्द्र वर्मा, कोषाध्यक्ष अमर सिंह वर्मा, उपमंत्री अनिल वर्मा, जनसम्पर्क प्रमुख लाखू राम पटेल सहित भारी संख्या में लोग मौजूद रहे और लोगों ने पटेल के विचारों पर चलने का संकल्प लिया।

धनुष यज्ञ मेले का भाजपा नेता ने किया उद्घाटन

डीडीसी ने उतारी भगवान श्रीराम की आरती

रामसनेहीघाट बाराबंकी (एजेंसी)। तहसील रामसनेहीघाट इटहुवा में रानी फूल कुवाँरि के स्थान पर एक दिवसीय धनुष यज्ञ श्रीराम विवाह मेले का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में पहुचे भाजपा नेता जवाहरलाल वर्मा व डीडीसी अभिषेक वर्मा ने श्रीराम की आरती करके कार्यक्रम का शुभारंम्भ किया। तहसील रामसनेहीघाट मुख्यालय से करीब 6 किमी दूर इटहुवा गांव के बाहर स्थिति रानी फूल कुवांरी के स्थान और हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी श्रीराम राम विवाह मेले का आयोजन किया गया कार्यक्रम में राम विवाह सहित तमाम लीलाओं का मंचन हुआ। कार्यक्रम में सीता स्वयंबर की सूचना मिलने के बाद विश्वामित्र राम लक्ष्मण को लेकर जनकपुर के लिए निकलते है, जनकपुर पहुचकर अमराईबाग में उन्हें ठहराया जाता है, जिसके बाद नगर दर्शन, बाजार लीला, फुलवारी, जनक चिंता, लक्ष्मण क्रोध, रावण वाणासूर संवाद के बाद श्रीराम द्वारा जंगक के प्रण को पूरा करने के लिए रखा गया धनुष का खंडन किया जाता है और धनुष के खंडन होते है सीता जी श्रीराम के गले मे वरमाला पहनाती है। राम सीता विवाह के दृश्य पर आतिशबाजी व पूरा पांडाल तालियों की गडगड़ाहत से गूंज उठता है। इसके बाद परसुराम लक्ष्मण व श्रीराम कलेवा का भी आयोजन किया गया। रामलीला का मंचन करने के लिए जय बाबा रामसनेहीदास आदर्श रामलीला व नाटक मंडल ग्राम टडिया महुलारा के कलाकारो को बुलाया गया था, कलाकारों द्वारा किये गए मंचन की दर्शको ने प्रशंसा की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा नेता जवाहरलाल वर्मा व जिला पंचायत सदस्य अभिषेक वर्मा नयन मौजूद रहे। इस दौरान कार्यक्रम के आयोजक डॉ आदर्श वर्मा, कल्लू वर्मा सहित बिमल तिवारी, कथा व्यास पंडित दुर्गेश तिवारी, कपिल तिवारी, सतीश कुमार सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

निजीकरण हुआ तो 77 हजार विद्युत कर्मी होगे बेरोजगारः सुमन

बाराबंकी (एजेंसी)पूर्वांचल और दक्षिणांचल विद्युत वितरण निगम के निजीकरण से लागू हुआ तो 77 हजार से ज्यादा कर्मचारी नौकरी से हाथ धो बैठेंगे और डेढ़ करोड़ उपभोक्ताओं की बिजली महंगी हो सकती है। यह बात उत्तर प्रदेष बिजली कर्मचारी संघ के संरक्षक रणधीर सिंह सुमन ने प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि मध्यांचल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के निजी करण से लाखों कर्मचारी बेरोजगार हो जाएगे। पूर्वांचल डिस्कॉम में कर्मचारियों के कुल 44,330 पद हैं। इनमें 27000 संविदा कर्मी हैं और 17330 नियमित कर्मचारी हैं। अगर निजीकरण हुआ, तो 27000 संविदा कर्मी बेरोजगार हो जाएंगे। बड़े पैमाने पर लोगों तो रिवर्ट किया जाएगा और छंटनी भी होगी। दक्षिणांचल डिस्कॉम में कर्मचारियों के कुल 33,161 पद हैं. इनमें 23,000 संविदा कर्मी हैं और 10,161 नियमित कर्मचारी हैं. दक्षिणांचल का निजीकरण होने के बाद भी यह पद अपने आप खत्म हो जाएंगे। 23000 संविदा कर्मी यहां भी बेरोजगार होंगे। दक्षिणांचल में 8582 कर्मचारी हैं. यह कर्मचारी दक्षिणांचल डिस्कॉम के कर्मचारी हैं, इसलिए पावर कॉरपोरेशन में किसी नियम के तहत इनका प्रत्यार्पण नहीं हो सकता है। इनकी सेवाएं भी निजी कंपनियों के रहमो करम पर रहेंगी। बिजली कर्मचारी संघ अन्य संगठनों के साथ मिलकर एक बडा आंदोलन करने जा रही है। जिससे निजीकरण का कार्य रुकेगा और सत्तारूढ़ दल के दलाल बेनकाब होगें। इस अवसर पर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य परिषद सदस्य परवीन कुमार जिला सचिव बृजमोहन वर्मा कोषाध्यक्ष शिवदर्शन वर्मा किसान सभा के जिला अध्यक्ष विनय कुमार सिंह व बिजली कर्मचारी नेता आदि मौजूद रहे।

दबंग युवकों ने छेड़खानी का विरोध करने पर कुनबे को पीटा

चायल, कौशाम्बी। एयरपोर्ट थाना क्षेत्र के विलासपुर गांव में छेड़खानी का विरोध करने पर दबंग युवकों ने एक कुनबे की जमकर पिटाई कर दी। पिटाई से चार लोगों को चोटें आई। मौके पर जुटे लोगों ने बीच बचाव कर मामला शांत कराया। घायलों ने थाने जाकर दो आरोपियों के खिलाफ घटना की तहरीर दी। तहरीर मिलने के बाद पुलिस शिकायत की जांच में जुट गई है। विलासपुर गांव निवासी एक युवक ने बताया कि शनिवार की शाम परिवार के लोग घरेलू काम में व्यस्त थे।इसी दौरान गांव के दो युवक उसके घर में घुसकर किशोरी बहन के साथ छेड़खानी करने लगे। किशोरी के शोर मचाने पर दोनों युवक मौके से भाग गये। किशोरी के बताने पर परिजनों ने युवकों के घर जाकर मामले का उलाहना दिया। इसी बात से खुन्नस खाए दबंगों ने परिजनों के साथ मिलकर किशोरी,उसके माता–पिता और भाभी की जमकर पिटाई कर दी। पिटाई से उन सभी को काफी चोटें आई। शोर सुनकर मौके पर जुटे लोगों ने बीच बचाव कर मामला शांत कराया। घायलों ने थाने जाकर दोनों युवकों के खिलाफ छेड़खानी का उलाहना देने पर मारपीट करने की तहरीर दी। तहरीर मिलने के बाद पुलिस शिकायत की जांच में जुट गई है। विलासपुर गांव निवासी एक युवक ने बताया कि शनिवार की शाम परिवार के लोग घरेलू काम में व्यस्त थे।इसी दौरान गांव के दो युवक उसके घर में घुसकर किशोरी बहन के साथ छेड़खानी करने लगे। किशोरी के शोर मचाने पर दोनों युवक मौके से भाग गये। किशोरी के बताने पर परिजनों ने युवकों के घर जाकर मामले का उलाहना दिया। इसी बात से खुन्नस खाए दबंगों ने परिजनों के साथ मिलकर किशोरी,उसके माता–पिता और भाभी की जमकर पिटाई कर दी। पिटाई से उन सभी को काफी चोटें आई।शोर सुनकर मौके पर जुटे लोगों ने बीच बचाव कर मामला शांत कराया। घायलों ने थाने जाकर दोनों युवकों के खिलाफ छेड़खानी का उलाहना देने पर मारपीट करने की तहरीर दी। तहरीर मिलने के बाद पुलिस शिकायत की जांच में जुट गई है।

पलिया पषु मेले का विधायक और महंत ने किया उद्घाटन

हैदरगढ़ बाराबंकी (एजेंसी)। हर साल की भांति इस साल भी तहसील हैदरगढ़ क्षेत्र के अंतर्गत नगर पंचायत सुबेहा कस्बा स्थित पशु पलिया मेला नुमाइश का शुभारंभ कर दिया गया है। मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे गेरावा मठ के महंत कृष्णानंद भारती क्षेत्रीय विधायक दिनेश रावत प्रमुख प्रतिनिधि रामदेव सिंह, सपा नेता चौधरी अदनान हुसैन ने सयुक्त रूप से फीता काट कर मेला का शुभारंभ किया। इस अवसर पर मेला प्रबंधक जावेद आलम ने विस्तृत चर्चा करते हुए बताया कि 15 दिसम्बर से मेला शुरु हुआ है जो आगामी 30 दिसंबर तक चलेगा मेला में अच्छी नस्ल पंजाब की पाडिया, अमृतसर की नस्लदार गाय, हरियाणा की भैंस, काबुल के बलोथरा नस्ल के चालबाज घोड़े, जयपुर के बकरी के बच्चे की खेप पहुंचना शुरू हो गई है सहारनपुर की फर्नीचर की मशहूर की दुकानें तिब्बत की ऊनी वस्त्र के भंडार मेला में मौजूद रहेगी बच्चो के मनोरंजन हेतु मौत का कुआं, झूले सर्कस की व्यवस्था है। मेला में 18 व 19 तारीख को कठपुतली एवं बाइसकॉप कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे तो वही 25 व 26 को कुश्ती दंगल प्रतियोगिता में देश के प्रसिद्ध पहलवान जावेद गनी, देवा थापा, सहित अन्य कई पहलवान कुश्ती दाव पेंच की आजमाइश करेंगे। मेला प्रबंधक जावेद आलम ने क्षेत्रीय लोगो से मेला देखने की अपील किया है। मेला प्रबंधक जावेद आलम ने मुख्य अतिथि के रूप में आए हुए अतिथियों का जोरदार स्वागत करते हुए आभार व्यक्त किया। इस मौके पर प्रभारी निरीक्षक संजीव कुमार यादव, चेयरमैन अध्यक्ष आलोक तिवारी, मंडल अध्यक्ष रामसागर मौर्य, जिलाध्यक्ष भारतीय यूनियन राष्ट्रीयतावादी विधि चंद यादव, प्रधान प्रतिनिधि सोनू सिंह, समाजसेवी बबलू सिंह, करुणा शंकर तिवारी, इस्तखार, प्रमुख प्रतिनिधि हारून खान, अतुल सिंह, सभासद प्रतिनिधि गिरजा रावत आदि मौजूद रहे।

'जरूरतमंदो में गर्म कपड़े किया वितरित'

दुद्धी, सोनभद्र (एजेंसी)प्रगति फाउंडेशन द्वारा गरीबों एवं जरूरतमंदो में ठंड से बचने के गर्म कपड़े वितरित किए गए। इस कड़ाके की ठंड मे कंबल और वस्त्र पाकर गरीबों के चेहरे खिल उठे। बता दें कि प्रगति फाउंडेशन के विकास अग्रहरी द्वारा जरूरतमंदो को ब्लड दान के साथ–साथ गर्म कपड़े का वितरण पिछले कुछ सालो से लगातार किया जा रहा हैं।दुद्धी ब्लड डोनेट एक्सप्रेस के माध्यम से लगातार रक्त दान भी करवाते है जिसके लिए उनको कई जगहों पे सम्मानित भी किया जा चुका है। उन्होंने बताया कि दुद्धी के सम्मानित लोगो से प्राप्त कपड़े और कंबल प्रतिदिन गरीब एवं असहाय व्यक्ति को प्रगति फाउंडेशन वस्त्र बैंक द्वारा वितरण किया जाता है। आज रविवार को अलसूबह करीब 60 से ज्यादा लोगो को कपड़ा वितरित किया गया है।इस कार्य को देख कर दुद्धी नगर पंचायत अध्यक्ष कमलेश मोहन ने भी हर संभव मदद का आश्वासन दिया है इस मौके प्रगति फाउंडेशन के सदस्य राम बाबू , अशफाक,अनुराग,नीतीश सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

'कांग्रेस भेदभाव पूर्ण वातावरण और उससे संबंधित बातों पर सहमत नहीं-आशु'

सोनभद्र (एजेंसी)।राबर्ट्सगंज ब्लाक में तियारनायक ग्राम में कांग्रेस पार्टी द्वारा 26 नवंबर 2024 से 26 जनवरी 2025 तक अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने 60 दिवसीय राष्ट्रव्यापी अभियान ष संविधान रक्षक अभियान ष को लेकर आम जनमानस के बीच में जाकर उनसे चर्चा की और साथ ही उनकी बातों में परेशानियों को भी सुना ।कांग्रेस नेता आशुतोष कुमार दुबे (आशु) ने कहा कि वर्तमान सरकार द्वारा जिस प्रकार का भेदभावपूर्ण वातावरण बनाया रहा है, उसके उन्मूलन को खत्म करने एवं संवैधानिक मूल्यों के साथ लोगो को अधिकार दिलाने का कार्य पार्टी करेगी । जहां कांग्रेस पार्टी अल्पसंख्यकों,एससी ,एसटी ,ओबीसी को लक्षित करने वाली वर्तमान सरकार की विभाजनकारी राजनीति की लगातार बात कर रही है और वह चाहती हैं कि विभाजन की बातें जातिगत स्थिति में ना हो, वह सबको साथ लेकर चलना चाहती है। कांग्रेस पार्टी वर्तमान सरकार की विभाजनकारी मानसिकता को उजागर करने का काम करेगी । इसके लिए हर संभव लड़ाई लड़ेगी और लोगों को अधिकार, न्याय दिलाने का काम भी करेगी, पार्टी लगता जातिगत जनगणना की बात भी कर रही है सड़क से लेकर संसद तक गरीब, बेरोजगार, महिलाएं ,आदिवासी, दलित सब की लड़ाई लड़ने का न्याय दिलाने का काम पार्टी ने हमेशा किया है और आगे भी करेगी ।

मुख्य रूप से उपस्थित रहने वालों में कांग्रेस नेता मनोज मिश्रा ,युवा कांग्रेस के जिला उपाध्यक्ष सूरज वर्मा, राष्ट्रीय छात्र संगठन के जिला अध्यक्ष अंशु गुप्ता, कांग्रेस नेता श्रीकांत मिश्रा, जवाहिर भारती, राजू भारती, राम प्रवेश ,प्रभु भारती, रामजी वाजपेई, जुड़ा देवी, पिंटू भारती, कुसुम भारती, मौजी देवी रहे ।

टेंडर वोटिंग के लिए 16 दिसंबर तक करें आवेदनः मुख्य चुनाव अधिकारी'

सोनभद्र (एजेंसी)। सोनभद्र बार एसोसिएशन सोनभद्र के निर्वाचन सत्र 2024ध्25 के लिए हो रहे मतदान के लिए सिर्फ पांच पदों अध्यक्ष, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, महामंत्री, कोषाध्यक्ष व सदस्य कार्यकारिणी 15 वर्ष से नीचे पद पर मुकाबला होगा जिसके लिए कुल 18 प्रत्याशी अपना भाग्य आजमा रहे हैं। 16 दिसंबर को मतदाता सूची प्रत्याशियों को वितरित की जाएगी, जबकि टेंडर वोटिंग के लिए 16 दिसंबर तक वकील मतदाताओं को अपना आवेदन करना होगा, तभी 17 दिसंबर को टेंडर वोटिंग में शामिल किया जाएगा। 20 दिसंबर को मतदान व 21 दिसंबर को मतगणना होगी। उधर प्रत्याशी समर्थकों के साथ वकील मतदाताओं से संपर्क में जुट गए हैं। जिसकी वजह से चुनावी सरगर्मी तेज हो गई है।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी शशि कुमार मिश्र ने बताया कि पांच पदों पर 18 प्रत्याशियों के बीच मुकाबला है जिसके लिए मतदान होगा। जिसमें अध्यक्ष पद के लिए तीन प्रत्याशी अरुण कुमार मिश्र, अशोक प्रसाद श्रीवास्तव व ओम प्रकाश पाठक, वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद के लिए दो प्रत्याशी गोविंद प्रसाद मिश्र व शारदा प्रसाद मौर्या, महामंत्री पद के लिए तीन प्रत्याशी अखिलेश कुमार पांडेय,अरुण कुमार सिंघल व योगेश कुमार द्विवेदी, कोषाध्यक्ष पद के लिए तीन प्रत्याशी आशीष कुमार मिश्र उर्फ मंटू, वंशीधर पांडेय व वीरेंद्र कुमार सिंह एवं सदस्य कार्यकारिणी 15 वर्ष से नीचे के लिए 7 प्रत्याशी अविनाश रंजन त्रिपाठी, आशीष कुमार पाल, कंचन, प्रमोद कुमार सिंह, रमाशंकर चौधरी, राहुल जैन व श्याम किशोर मिश्र शामिल हैं। उन्होंने यह भी बताया कि 16 दिसंबर को 18 प्रत्याशियों को मतदाता सूची का वितरण किया जाएगा। इसके अलावा टेंडर वोटिंग करने के लिए 16 दिसंबर को आवेदन करना होगा, अन्यथा 17 दिसंबर को टेंडर वोटिंग में शामिल नहीं किया जाएगा। 20 दिसंबर को मतदान तथा 21 दिसंबर को मतगणना होगी। उधर प्रत्याशी समर्थकों के साथ वकील मतदाताओं से संपर्क में जुट गए हैं। जिसकी वजह से चुनावी सरगर्मी तेज हो गई है।

आयुक्तविन्ध्याचल मण्डल मीरजापुर का आगमन आज

सोनभद्र (एजेंसी) ।उप जिला निर्वाचन अधिकारी,सोनभद्र ने अवगत कराया है कि अर्हता तिथि 01 जनवरी,2025 के आधार पर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों की निर्वाचक नामावलियों का विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण–2025 के अन्तर्गत आयुक्त विन्ध्याचल मण्डल मीरजापुर डॉ0 मुथुकुमार स्वामी बी0 द्वारा द्वितीय भ्रमण 16 दिसम्बर,2024 को किया जायेगा। इस दौरान मण्डलायुक्त द्वारा 16 दिसम्बर,2024 (सोमवार) को प्रातः 10.00 बजे से स्थलीय सत्यापन तथा सायं 05.00 बजे कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में बैठक करेंगें। निर्वाचन कार्य से जुड़े सम्बन्धितों को उक्त तिथि को आयोजित बैठक में अपने से सम्बन्धित समस्त सूचनाओं के साथ ससमय प्रतिभाग करना सुनिश्चित किया गया है।

'जनपद न्यायाधीश, जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक ने सलखन फासिल्स पार्क का किये औचक निरीक्षण'

सोनभद्र। जनपद न्यायाधीश रवीन्द्र विक्रम सिंह,जिलाधिकारी बी0एन0 सिंह व पुलिस अधीक्षक अशोक कुमार मीणा द्वारा रविवार को फासिल्स पार्क सलखन का औचक निरीक्षण किया गया। इस दौरान अमूल्य धरोहर के रूप में फासिल्स पार्क को संरक्षित करने, पर्यटन के दृष्टि से पर्यटको के लिए बेहतर ढंग से विकसित करके पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु बन सकें, इसके लिए बेहतर तरीके से कार्ययोजना तैयार करने पर बल दिया गया। जिलाधिकारी ने बताया की फासिल्स पार्क के सौन्दर्यीकरण हेतु पर्यटन विभाग द्वारा डेढ़ करोड़ की धनराशि स्वीकृति की गयी है, जिसके माध्यम से पर्यटकों के बैठने हेतु दो ग्लोवर, नेचर ट्रेलर, प्रकृति चित्रण केन्द्र, सुरक्षा व्यवस्था के आवश्यक प्रबन्ध, गेट का निर्माण आदि कार्य कराये जाने की कार्ययोजना तैयार की गयी है।फासिल्स पार्क के प्रचार–प्रसार करने हेतु छोटे–छोटे वीडियो क्लीप बनाकर उसे प्रकृति चित्रण केन्द्र में चलाये जायेगा, जिससे कि अधिक से अधिक संख्या में लोग फासिल्स पार्क के ईतिहास को जान सकेगें और उसे देखने हेतु जनपद में आयें।

महिला को बहला फुसलाकर भगा ले जाने को लेकर आरोपियों पर केस

लालगंज, प्रतापगढ़। घर में बाक्स का ताला तोडकर उन्तालिस हजार नकद तथा लाखों के जेवरात गायब होने तथा महिला को बहला फुसलाकर भगा ले जाने के मामले मे लीलापुर पुलिस ने आरोपियों पर केस दर्ज किया है। थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी पीड़ित ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि उसकी पुत्री के पति की मृत्यु हो चुकी है। वह अपने दो बच्चों के साथ उसके घर पर रहती थी। तहरीर में आरोप लगाया गया है कि पडोस की एक महिला जेठवारा थाना क्षेत्र के गोपालपुर निवासी आरोपी समशाद पुत्र अब्दुल हक से उसकी पुत्री की फोनिक वार्ता के साथ मुलाकात भी कराया करती थी। पीडित का कहना है कि बीती तीन दिसंबर को घर के सदस्य मिटटी मे शामिल होने गये थे। लौटने पर घर में उसकी पुत्री नदारद मिली। बच्चों ने बताया कि वह बैग लेकर अपनी सहेली के साथ कहीं चली गयी है। घर में बाक्स का ताला टूटा हुआ मिला। पीडित के मुताबिक ढाई लाख के जेवरात व उन्तालिस हजार नकदी बाक्स के गायब मिला। पीडित का कहना है कि पडोसी आरोपित महिला से पूछताछ करने पर वह पीडित से गालीगलौज करने लगी। तहरीर के आधार पर पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज किया है। पीडित के घर से नकदी व लाखों के जेवरात गायब होने से हडकंप का माहौल दिखा है। प्रभारी निरीक्षक अरूण सिंह का कहना है कि केस दर्ज किया गया है, जांच कर आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

अज्ञात पिकप चालक के खिलाफ गैरइरादतन हत्या का केस

लालगंज, प्रतापगढ़। अज्ञात पिकप चालक के खिलाफ लीलापुर पुलिस ने महिला की दुर्घटना में मौत को लेकर गैरइरादतन हत्या का केस दर्ज किया है। लीलापुर थाना के कोडरा मांदूपुर निवासी सलाउददीन की पत्नी जमीला बानो ने तहरीर मे कहा है कि दस दिसंबर को उसकी बहन जरीना बानो दिन में लगभग पौने दो बजे हण्डौर स्थित पावर हाउस में बिजली का बिल जमा करने गयी थी। जरीना बिल जमा कर घर वापस आ रही थी तभी प्रतापगढ़ की ओर से आ रही पिकप ने लापरवाहीपूर्वक उसे टक्कर मार दिया। दुर्घटना में पीडिता की बहन की मौत हो गयी। तहरीर के आधार पर पुलिस ने अज्ञात पिकप चालक के खिलाफ केस दर्ज किया है।

संचालक व कर्मचारियों की पिटाई पर आधा दर्जन के खिलाफ मुकदमा

लालगंज, प्रतापगढ़। मैरिज हॉल में विवाद को लेकर संचालक की पिटाई के मामले मे लालगंज पुलिस ने आधा दर्जन आरोपियो के खिलाफ गंभीर धाराओ मे केस दर्ज किया है। सांगीपुर वार्ड के विवेक द्विवेदी पुत्र राजेश द्विवेदी ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि वह गांव में श्रीरामजानकी मैरिज हाल का संचालक है। बीती तेरह दिसंबर को लडकी पक्ष की ओर से मैरिज हाल की बुकिंग करायी गयी थी। तहरीर मे कहा गया है कि कर्मचारी व्यवस्था देख रहे थे कि तभी पार्किंग मे कन्या पक्ष से आये लडकी के भाई व उसके चार साथी कहासुनी करने लगे। इस पर मना करने पर लड़की के भाई व आरोपी विनोद के पुत्र प्रांशू सिंह व तीन अन्य ने उस पर लोहे के सामान से जानलेवा हमला कर दिया। आरोपियो ने गालीगलौज करते हुए पीडित तथा मैरिज हाल के कर्मचारी शिव जायसवाल, मनीष जायसवाल व रवि यादव आदि के साथ भी मारपीट की। तहरीर के आधार पर पुलिस ने सांगीपुर थाना के गोड़वा निवासी अंशू जायसवाल पुत्र कृपाशंकर तथा आरोपी प्रांशू सिंह सुत विनोद व चार अज्ञात समेत आधा दर्जन के खिलाफ केस दर्ज किया है।

उत्पीड़न पर अधिवक्ताओं ने एसडीएम तथा सीओ से की वार्ता, हड़ताल स्थगित

लालगंज, प्रतापगढ़। उदयपुर पुलिस द्वारा साथी अधिवक्ता के उत्पीडन को लेकर सोमवार को अधिवक्ताओं ने एसडीएम व सीओ से संयुक्त वार्ता कर समाधान की मांग उठाई। सीओ कार्यालय में एसडीएम तथा सीओ के साथ हुई वार्ता में अधिवक्ताओं ने उदयपुर थाना के पूरे जियन तिवारी निवासी अधिवक्ता अंकुर त्रिपाठी के विरूद्ध क्रास केस दर्ज करने को लेकर नाराजगी जतायी। संघ के अध्यक्ष संदीप सिंह तथा महामंत्री सूर्यकांत निराला की अगुवाई मे अधिवक्ताओं की हुई वार्ता में अधिकारियों ने निष्पक्ष कार्रवाई कराए जाने का भरोसा दिलाया। इसके बाद संयुक्त अधिवक्ता संघ के पदाधिकारियों ने बैठक कर रणनीतिक चर्चा की। वार्ता में वरिष्ठ उपाध्यक्ष विभाकर नाथ शुक्ल, राममोहन सिंह, अनिल महेश, देवी प्रसाद मिश्र, ज्ञानप्रकाश शुक्ल, विकास मिश्र, अजय शुक्ल गुडडू संतोष पाण्डेय, धीरेन्द्र मिश्र, सिंटू मिश्र आदि शामिल रहे। संघ के महामंत्री सूर्यकांत निराला ने बताया कि उदयपुर एसओ के स्थानांतरण की मांग को लेकर उच्चाधिकारियों से वार्ता का क्रम जारी रखा जाएगा। वही उन्होने बताया कि अधिवक्ताओ की हडताल स्थगित कर दी गयी है। मंगलवार से तहसील तथा दीवानी अदालत में न्यायिक कामकाज सुचारू बनाया जाएगा।

छात्रा के साथ छेडछाड के तीन आरोपी धराये, गये जेल

लालगंज, प्रतापगढ़। छात्रा के साथ छेडछाड एवं उसके चाचा तथा एक शिक्षक की पिटाई के मामले मे कोतवाली पुलिस ने सोमवार को तीन आरोपियो को धर दबोचा। इन्हें पुलिस ने दोपहर बाद जेल भेज दिया। पुलिस इस मामले मे अभी दो नामजद तथा कुछ अज्ञात आरोपियो की तलाश में जुटी हुई बतायी जाती है। लालगंज कोतवाली के एक गांव की छात्रा के साथ छेडछाड तथा उसके चाचा एवं स्कूली शिक्षक की पिटाई को लेकर पुलिस ने शनिवार को गंभीर धाराओं मे केस दर्ज किया था। पुलिस मामले मे आधा दर्जन संदिग्धों से पूछताछ मे जुटी हुई थी। सोमवार को कोतवाली के दरोगा दीपक यादव फोर्स के साथ गश्त पर निकले थे। दोपहर महिमापुर मोड़ पर मुकदमे मे आरोपी लालगंज के तकिया खानापटटी निवासी आफताब आलम पुत्र मो. कासिम तथा बबलू पुत्र मैना उर्फ मोईनुददीन एवं इसी गांव के तौफीक पुत्र बबलू को पुलिस ने धर दबोचा। आरोपियो को पुलिस ने दोपहर बाद जेल भेज दिया। प्रभारी निरीक्षक नीरज यादव का कहना है कि मुकदमे के दो नामजद आरोपियो के साथ कुछ अज्ञात की तलाश पुलिस कर रही है। शीघ्र ही नामजद आरोपियो के साथ अज्ञात की पहचान कर इन्हें भी जेल भेजा जाएगा।

क्रिकेट एकेडमी में चौवन खिलाड़ियों का प्रशिक्षण एवं छात्रवृत्ति के लिए हुआ चयन, खुशी

तारा देवी क्रिकेट एकेडमी में अर्न्तजनपदीय प्रतियोगिता में चयनित खिलाड़ियों की समारोहपूर्वक हुई हौसला आफजाई

लालगंज, प्रतापगढ़। अझारा स्थित तारा देवी क्रिकेट एकेडमी मे हुए दो दिवसीय ट्रायल क्रिकेट प्रतियोगिता में चौवन खिलाडियो का प्रशिक्षण के लिए चयन किया गया। भागवतदत्त समग्र विकास समिति के तहत आयोजित ट्रायल क्रिकेट प्रतियोगिता में प्रतापगढ़ समेत लखनऊ, कानपुर, प्रयागराज, मिर्जापुर, वाराणसी समेत कई जनपदों से एक सौ छः खिलाडियो ने प्रतिभाग किया। सोमवार को जारी परिणाम के तहत इनमें से चौवन खिलाड़ियों का चयन किया गया। एकेडमी के कोच हर्ष पाल ने बताया कि चयनित खिलाडियो को तीन माह का क्रिकेट प्रशिक्षण दिया जाएगा। वही हेड कोच नारायण मुकेश ने बताया कि चयनित खिलाडियो को विशेष छात्रवृत्ति भी प्रदान की जाएगी। कार्यक्रम में एकेडमी के संस्थापक समाजसेवी रमेशचंद्र मिश्र एवं गौरव मिश्र तथा रीमा मिश्रा ने प्रतियोगिता में चयनित खिलाड़ियों की हौसला आफजाई की। सेवानिवृत्त आईएएस रमेशचंद्र मिश्र ने कहा कि इस प्रतियोगिता का उददेश्य क्रिकेट के क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रतिभाओं को प्रशिक्षित कर उन्हें मजबूत कैरियर प्रदान करना है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए समाजसेवी प्रकाशचंद्र मिश्र ने एकेडमी के उददेश्य की सराहना की। प्रबंधक सुनीता मिश्रा ने एकेडमी की प्रगति आख्या प्रस्तुत की। संचालन कोच हर्ष पाल एवं स्वागत राज सोनकर ने किया। समारोह में महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. पूनम त्रिपाठी, प्रधानाचार्य एसएन त्रिपाठी, प्राचार्य राहुल सिंह, प्राचार्य शारदा प्रसाद विश्वकर्मा भी मौजूद रहे।

जनपद स्तरीय करियर गाइडेंस मेले का हुआ आयोजन

सुलतानपुर(एजेंसी)। आज सोमवार के दिन राजकीय शिल्पकार अनुदेशक प्रशिक्षण संस्थान पयागीपुर सुल्तानपुर में समग्र शिक्षा माध्यमिक सुल्तानपुर के अंतर्गत राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के लिए जनपदीय करियर गाइडेंस मेले का आयोजन किया गया। जिसमें जनपद के सभी 26 राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं ने अपने नोडल शिक्षक की उपस्थिति में अपने विद्यालय के स्टाल लगाए। कार्यक्रम का प्रारंभ जिला सेवायोजन अधिकारी दिनकर कुमार और जिला विद्यालय निरीक्षक रविशंकर, सह जिला विद्यालय निरीक्षक जटाशंकर, डॉ बी के झा, पूर्व विभागाध्यक्ष वाणिज्य के एन आई पी एस एस,सुल्तानपुर और प्रतिष्ठित व्यवसाय संदीप श्रीवास्तव, संस्थान के अधिष्ठाता महेंद्र प्रताप सिंह की उपस्थिति में सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलन कर किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए डॉ बी के झा ने करियर के विभिन्न क्षेत्रों के विषय में उपस्थित छात्र–छात्राओं को जानकारी दी और करियर में गुणवत्ता बढ़ाने के विषय पर विभिन्न आई टोल से अवगत कराया। जिला विद्यालय निरीक्षक रवि शंकर ने कार्यक्रम में आए हुए प्रधानाचार्य का धन्यवाद करते हुए छात्रों के भविष्य के लिए करियर मेला के महत्व को रेखांकित किया। सह जिला विद्यालय निरीक्षक जटाशंकर ने माध्यमिक शिक्षा में कैरियर गाइडेंस के पंख पोर्टल के विषय में जानकारी दी। सेवायोजन कार्यालय से संबंध कंचन पांडे ने करियर विकल्पों के विषय में विस्तृत

रूप से बताया तथा माध्यमिक शिक्षा के उपरांत संगम पोर्टल के विषय में अवगत कराया। जिला संयोजन अधिकारी डॉ दिनकर कुमार ने बच्चों को कार्यालय द्वारा किए जा रहे सेवायोजन कार्य के विषय को विस्तार में बताया। संदीप श्रीवास्तव ने हॉस्पिटैलिटी और रेस्टोरेंट होटल मैनेजमेंट के विषय पर जानकारी प्रदान की। डॉ राजीव त्रिपाठी ने चिकित्सा क्षेत्र में डॉक्टर, नर्सिंग व पैरामेडिकल आदि क्षेत्रों के विषय में जानकारी साझा की। संस्था के अधिष्ठाता धर्मेंद्र कुमार ने संस्था में हो रहे अनुदेशक परीक्षण के विषय में विस्तार से जानकारी दी और छात्रों को इस दिशा में करियर बनाने की मार्गों का तरीका बताया। स्टॉल प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार राजकीय हाई स्कूल कनौरा, द्वितीय पुरस्कार केश कुमारी राजकीय बालिका इंटर कॉलेज सुल्तानपुर तथा तृतीय पुरस्कार राजकीय हाई स्कूल सलाहपुर को प्राप्त हुआ। जनपद स्तरीय करियर मेले में भाषण प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार पंडित दीनदयाल उपाध्याय राजकीय मॉडल इंटर कॉलेज इमलिया सिकरा के सुमित अग्रहरि, द्वितीय पुरस्कार अनुकल्प सिंह राजकीय हाई स्कूल कनकपुर शिकवा तथा तृतीय पुरस्कार राजकीय हाई स्कूल सलाहपुर शाहपुर नानेमऊ के प्रतिभा पांडे ने प्राप्त किया। कार्यक्रम का संचालन प्रवक्ता शैलेंद्र चतुर्वेदी तथा संयोजन जिला समन्वयक अखिलेश पांडे ने किया। इस अवसर पर विभिन्न विद्यालयों के प्रधानाचार्य तथा नोडल शिक्षक उपस्थित रहे। जिसमें मो0 रफीक , नसरीन, अब्दुल कादिर, राकेश सिंह, संजय मिश्रा, विजय प्रकाश मौर्य, सूर्यभान, धर्मेंद्र मिश्रा, रोहित सिंह, संदीप कुमार, पंकज सिंह, जयप्रकाश साधना त्रिपाठी, शालिनी सिंह, ज्योति मिश्रा, मंजू सोनी आदि उपस्थितरहे।

जिले में निखरेंगी ग्रामीण खेल प्रतिभाएं

सुलतानपुर(एजेंसी)। युवा कल्याण विभाग जनपद सुल्तानपुर के तत्वाधान मे आयोजित उत्तर प्रदेश ग्रामीण लीग के अंतर्गत विकास खंड स्तरीय सब जूनियर, जूनियर एवं सीनियर वर्ग के बालक और बालिकाओं की खेल प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी जिसमें एथलेटिक्स, वॉलीबाल कुश्ती, कबड्डी, बैटमिंटन, जुड़ो, भरोत्तोलन, फुटबॉल के खेल संपन्न होंगे। इस बार ये प्रतियोगिताएं सभी खेल संघों के साथ समन्वय स्थापित कर की जा रही हैं, शासन द्वारा निर्देश के क्रम में विभाग इन संघों के सहयोग से प्रतियोगिता संपन्न करेगा।

दिनांक 18, 19 दिसम्बर को सुबह 09 बजे से बिकवाजितपुर मेला बाग ग्राउंड, विकास खंड भदैया, दिनांक 20, 21 दिसम्बर, को सर्वोदय इंटर कॉलेज के बगल ग्राउंड में विकास खंड लंभुआ एवं दिनांक 24, 25 दिसम्बर को ग्राम पंचायत मझवारा विकास खंड ध ानपतगंज के खेल प्रांगण मे आयोजित होंगी। तीनों विकास खंड की प्रभारी क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी पूजा यादव ने बताया कि सभी प्रतिभागी अपने साथ आध ार की फोटोकॉपी ले कर समय से प्रतिभाग करें।

शराब की लत ने महिला की छीनी जिंदगी

बल्दीरायध्सुलतानपुर(एजेंसी)। हलियापुर थाना क्षेत्र के एक गांव में नशे की आदी एक महिला की मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने पंचनामा करवा कर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। बल्दीराय तहसील क्षेत्र के हलियापुर थाना क्षेत्र के पूरे झूरहू मजरे हलियापुर में रविवार रात लगभग नौ बजे नशे की आदी राजकुमारी (उम्र लगभग 45 वर्ष) शराब के नशे मे किसी काम से छत गई थी वहां से वह अचानक नीचे गिर गई। छत से नीचे गिरने पर महिला बेहोश होकर रात भर ठंड में पड़ी रही जब घर में सो रहे महिला के पति सुबह उठे तो अपनी पत्नी को आवाज लगाई लेकिन जबाब न मिलने पर वह ढूढ़ने लगा बाहर देखा तो पत्नी राजकुमारी पुवाल पर पड़ी थी, पति ने नजदीक से देखा तो राजकुमारी की मृत्यु हो चुकी थी। पति रामस्वरूप ने आशंका जताई कि उसकी मौत ठंड में पड़े रहने से हुई है। मौत की खबर सुनते ही परिजनों में कोहराम मच गया। मृतका का पति रामस्वरूप विदेश में रहकर मजदूरी का काम करता है। अभी नौ दिसंबर को वह वापस अपने घर आया था मगर होनी को कुछ और ही मंजूर था। इस संबंध में थाना अध्यक्ष प्रदीप कुमार सिंह ने बताया कि मृतका के पति रामस्वरूप ने थाने में तहरीर दी है जिसमें उसने नशे में छत से गिरकर ठंड में पड़े रहने से मौत की आशंका जताई है। थानाध्यक्ष ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है रिपोर्ट आने पर मौत के कारणों का पता चल पायेगा। रविवार की रात घटित हुई घटना की सूचना जैसे ही मृतका के मायके वालो को मिली तत्काल उन लोगो ने इसकी सूचना सांसद के पी आर ओ सुरेन्द्र निषाद को दी। पीआरओ मे तत्काल इस सूचना को हलियापुर पुलिस को देकर कार्यवाही के लिए कहा मायके वालो ने कहा है कि राजकुमारी की हत्या की गई है। फिलहाल खबर लिखे जाने तक मायके वालो ने थाना हलियापुर में तहरीर नही दी थी।

19 से 24 दिसंबर तक चलेगा ''सुशासन सप्ताह 2024-प्रशासन गांव की ओर'' अभियान-जिलाधिकारी

श्रावस्ती 16 दिसम्बर(एजेंसी)। जिलाधिकारी अजय कुमार द्विवेदी ने बताया है कि शासन के निर्देशानुसार ''सुशासन सप्ताह 2024–प्रशासन गांव की ओर'' अभियान (दिनांक 19 दिसम्बर से 24 दिसम्बर) के आयोजन किया जाना प्रस्तावित हैं। उक्त के अन्तर्गत जनपद के तहसील मुख्यालय, समस्त खण्ड विकास अधिकारी, समस्त एडीओ पंचायत, ग्राम सचिव के माध्यम से पंचायत समितियों इत्यादि में सुशासन सप्ताह 2024–प्रशासन गांव की ओर अभियान (दिनांक 19 दिसम्बर से 24 दिसम्बर 2024) के तहत विशेष कैम्पों कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा। विशेष कैम्पों कार्यकमों के अन्तर्गत विभिन्न कार्यवाहियां की जानी हैं। जिसमे विशेष कैम्पोंध्कार्यक्रमों के अन्तर्गत प्राप्त जनशिकायतों, भारत सरकार के पोर्टल सीपीग्राम्स के माध्यम से प्राप्त जनशिकायतों आईजीआरएस जनसुनवाई पोर्टल के माध्यम से प्राप्त जनशिकायतों का त्वरित एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण किया जाएगा।

ऑनलाइन सेवाओं हेतु प्राप्त आवेदनों का त्वरित निस्तारण किया जाएगा। जनशिकायतों के सफल निस्तारण के अन्तर्गत सफलता की कहानी, जिसमें (शिकायत पंजीकरण संख्या, शिकायतकर्ता का नाम, मोबाइल नम्बर, ई–मेल, पता, शिकायत प्रस्तुत करने का दिनांक, शिकायत निस्तारण का दिनांक, शिकायतकर्ता की समस्या, शिकायत का विवरण, कृत कार्यवाहीध्निस्तारण का विवरण, शिकायतकर्ता की प्रतिकिया संतुष्टि, निस्तारण से सम्बन्धित दस्तावेज) अनिवार्य रूप से अंकित किया जायेगा। इसके लिए जिलाधिकारी ने समस्त उपजिलाधिकारियों, तहसीलदारों, जिला पंचायतराज अधिकारी, खण्ड विकास अधिकारियों, सहायक विकास अधिकारियों (पंचायत) को निर्देशित किया है कि उक्त निर्देशों के अर्न्तगत अभियान का व्यापक प्रचार–प्रसार कराते हुये सुशासन सप्ताह 2024–प्रशासन गांव की ओर अभियान (दिनांक 19 दिसम्बर से 24 दिसम्बर) के अर्न्तगत विशेष कैम्पों कार्यक्रमों का आयोजन कराकर दैनिक सूचना उपलब्ध कराना सुनिश्चित करेंगे।

जिलाधिकारी ने अपर जिलाधिकारी एवं उपजिलाधिकारी भिनगा न्यायालय का किया औचक निरीक्षण

श्रावस्ती (एजेंसी))। जिलाधिकारी अजय कुमार द्विवेदी ने अपर जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचकर अपर जिलाधिकारी न्यायालय का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होने विभिन्न पत्रावलियों नकल पंजिका, दाखिला चिट्ठा, आर0सी0 पंजिका, वाद पत्रावली, ऑनलाइन केस डायरी आदि का निरीक्षण किया और पंजिकाओं का बेहतर ढंग से रख–रखाव का निर्देश दिया। उन्होने पत्रावलियों का दाखिला समय से करने हेतु सम्बन्धित को निर्देशित किया। इसके अलावा उन्होने ऑनलाइन केस डायरी का निरीक्षण कर आनलाइन वादों की सूची का भी निरीक्षण किया और वादों को ससमय निस्तारित करने हेतु निर्देशित किया। उन्होने न्यायालय में साफ–सफाई बेहतर ढंग से रखने हेतु सम्बन्धित को निर्देश दिया।चूंकि उपसंचालक चकबन्दी का कार्य भी अपर जिलाधिकारी द्वारा किया जाता है, इसलिए उपसंचालक चकबन्दी न्यायालय का भी जिलाधिकारी ने निरीक्षण किया। जिसमें उन्होने ऑनलाइन केस डायरी, आनलाइन मिसिलबन्द आदि पत्रावलियों के रख–रखाव का निरीक्षण किया तथा पत्रावलियों का दाखिला समय से पूर्ण करने हेतु निर्देशित किया।तदोपरान्त जिलाधिकारी ने तहसील भिनगा पहुंचकर उपजिलाधिकारी न्यायालय में प्रतिदिन की जाने वाली विभिन्न न्यायालय के लंबित वादों एवं जनसुनवाई पत्रावालियो का निरीक्षण कर जायजा लिया। इस दौरान जिलाधिकारी ने उपजिलाधिकारी को न्यायालय पर लम्बित वादों का निराकरण करने का निर्देश दिया। उन्होने यह भी निर्देश दिया कि तहसील में आने वाले हर फरियादियों की समस्याओं को सूचीबद्ध किया जाए ।

गजेन्द्रमणि दुबे को मिले स्वर्णपदक व प्रशस्ति पत्र, जतायी गयी खुशी

लालगंज, प्रतापगढ़। क्षेत्र की प्रतिभा को शैक्षिक क्षेत्र में सफलता का परचम लहराने पर यहां लोगों मे खुशी देखी गयी। लक्ष्मणपुर क्षेत्र के रघवापुर निवासी गजेन्द्रमणि दुबे बीएचयू में हिन्दी परास्नातक की परीक्षा में प्रशस्ति पत्र व स्वर्ण समेत विशिष्ट पदकों से सम्मानित हुआ है। गजेन्द्रमणि गांव के शिवपवन दुबे का पुत्र है। वह काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से हिन्दी विषय में परास्नातक परीक्षा में सभी छः सेमेस्टरों में टॉपर का कीर्तिमान अपने नाम करने में सफल हुआ है। सफलता पर बीएचयू की ओर से उसे स्वर्ण पदक समेत मेडल व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया है। मेधावी की सफलता की जानकारी गांव पहुंची तो खुशी का माहौल देखा गया। गांव के कैप्टन शिव त्रिपुरारि पाण्डेय, लेंफ्टीनेंट घनश्याम पाण्डेय, साहित्यकार राधेश पाण्डेय, शिक्षक नितिन पाण्डेय, आचार्य रमापति दुबे, आचार्य शिवदर्शन पाण्डेय, शिव नारायण, उमेश पाण्डेय व गौरीशंकर त्रिपाठी ने खुशी जतायी है।

अवैध कच्ची शराब के साथ एक गिरफ्तार

सुल्तानपुर(एजेंसी)। आबकारी आयुक्त के आदेश पर उपजिलाधिकारी कादीपुर के निर्देशन में आबकारी व पुलिस टीम के द्वारा संयुक्त रूप से अवैध कच्ची शराब की धर पकड़ हेतु दबिश की कार्यवाही की गई। दबिश के दौरान कादीपुर खुर्द तिराहे पर झारखंड निवासी एक व्यक्ति को 10 लीटर अवैध कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार किया गया। जो अवैध रूप से शराब बेचने काम करता है। जिस पर अभियोग पंजीकृत कर थाने में सुपुर्द किया गया। आबकारी टीम का नेतृत्व गिरिराज सिंह आबकारी निरीक्षक द्वारा किया गया। टीम में सूर्यकांत द्विवेदी हेड कांस्टेबल, सूबेदार यादव कांस्टेबल, शैलेंद्र प्रताप सिंह कांस्टेबल आदि थे।

विधानसभा घेरे कांग्रेसी हो पूरी तैयारी-.राजेश तिवारी

सुल्तानपुर(एजेंसी)। आगामी बुधवार को विधानसभा घेराव के कार्यक्रम की तैयारी बैठक को लेकर कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव व प्रभारी राजेश तिवारी उपाध्यक्ष प्रभारी मनीष मिश्रा व प्रदेश सचिव व जिले के प्रभारी अर्जुन पासी ने संगठन के पदाधिकारियो के साथ मैराथन बैठक की। सभी कांग्रेसियों को ज्यादा से ज्यादा संख्या में लखनऊ पहुंचने का आवाहन किया । आगामी बुधवार को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के आवाहन पर उत्तर प्रदेश में भ्रष्ट कानून व्यवस्था किसानों पर बढ़ रहे अत्याचार वक्त प्रदेश सरकार के कुशासन के खिलाफ कांग्रेस विधानसभा घेरने जा रही है। जिला अध्यक्ष अभिषेक सिंह राणा शहर अध्यक्ष शकील अंसारी ने पदाधिकारी के साथ नेताओं का स्वागत किया। यहां राजेश तिवारी ने कहा पुराने संगठन और कमेटी को भंग करने का उद्देश्य नई ऊर्जा साथ वहां साथियों को समाहित कर मजबूत संगठन बनाने का है उन्होंने ब्लॉक और न्याय पंचायत पर मजबूत साथियों की तैनाती की वकालत की आगामी 18 तारीख को विधानसभा गर्ने के लिए सभी कांग्रेसियों का आवाहन किया प्रदेश उपाध्यक्ष मनीष मिश्रा ने कहा उत्तर प्रदेश में नए सिरे से संगठन खड़ा करने की जरूरत है आगामी पंचायत व विधानसभा चुनाव लड़ने के लिए तैयारी कर रहे नेता अभी से ही अपनी तैयारी में जुड़ जाए जिसे बेहतर परिणाम दिया जा सके।

सारस पक्षी के गणना का दो दिवसीय अभियान शुरु

सुलतानपुर(एजेंसी)। डीएफओ अमित सिंह की मौजूदगी में सारस पक्षी गणना अभियान का शुभारंभ हुआ। गणना के साथ स्कूली छात्र–छात्राओं को सारस के संरक्षण एवं प्राकृतिक संतुलन में महत्व से परिचित कराया जाएगा । इसके पूर्व हुई गणना में 137 सारस के जिले में होने की यूचना है। डीएफओ अमित सिंह ने बताया कि पर्यावरण संरक्षण एवं संतुलन में सारस पक्षी का अहम योगदान है।

हरियाली पर चल रहा आरा वन विभाग मौन

कुड़वारध्सुल्तानपुर(एजेंसी)। थाना कुड़वार के अंतर्गत कुड़वार बाजार में पानी की टंकी मां सरस्वती क्लासेज के बगल दो सूखे तीन हरे कुल पांच पेड़ आम के रविवार कै काटे गये। गूंथे मौके पर मौजूद है।

एक तरफ सरकार वन संरक्षण को लेकर प्रत्येक वर्ष लाखों वृक्ष लगाए जाते हैं दूसरी तरफ बन माफियाओ द्वारा धड़ल्ले से प्रतिबंधित वृक्षों को लगातार काटा जा रहा है। जिले के वन अधिकारी की या तो मिली भगत है या तो वन विभाग से चोरी कर बन माफिया बेखौफ होकर अंजाम दे रहे हैं। देखना यह होगा कि जिले के वन अधिकारी क्षेत्र में हो रहे बनकटान को रोक पाने में सफल होते हैं या नहीं।

मोस्ट प्रतिभा सम्मान समारोह को अभूतपूर्व बनाने का संकल्प

सुलतानपुर(एजेंसी)। मोस्ट कल्याण संस्थान के प्रधान कार्यालय निषाद भवन, विनोवापुरी में 03 जनवरी 2025 को माता सावित्री बाई फूले जयंती पर आयोजित मोस्ट प्रतिभा सम्मान समारोह 2025 की तैयारी एवं समीक्षा हेतु वरिष्ठ पदाधिकारियों की मीटिंग की गई। उक्त अवसर पर सर्वसम्मति से पूर्व विधायक भगेलू राम, समाजसेवी मो. मकबूल अहमद, एमएसबी इंटर कालेज की प्रवक्ता शीला भारती, इ. राममूर्ति चौरसिया, अनूप आकाश वर्मा (आज तक), समाजसेवी मस्तराम गौतम, बालिका इंटर कालेज की प्रधानाचार्य ममता निषाद को प्रमुख अतिथि चयनित किया गया तथा कार्यक्रम को अभूतपूर्व बनाने का संकल्प लिया गया। इस मौके पर मोस्ट संरक्षक भारत राम, मोस्ट डायरेक्टर शिक्षक श्यामलाल "गुरूजी", मोस्ट प्रदेश निर्णायक कमेटी पेरियार समभोले वर्मा, मोस्ट प्रदेश प्रमुख जीशान अहमद, जनरल सेक्रेटरी राम उजागिर यादव, जिला प्रमुख डा. गोविंद भगत, डा. अमरीश वर्मा आदि लोग मौजूद रहे।

हमारा समाज पार्टी के जिलाध्यक्ष का जोरदार स्वागत

सुलतानपुर (एजेंसी)। अखिल भारतीय हमारा समाज पार्टी के जिलाध्यक्ष अपने समर्थकों एवं पदाधिकारियो के साथ जिले के आगमन पर कटका बाजार पहुँचे प्रदेश अध्यक्ष शैलेन्द्र गुप्ता का जोरदार स्वागत किया। श्री गुप्ता जी के साथ आजमगढ जिले जोन सयोजक अखिलेश अग्रहरि , एडवोकेट नीरज वैश्य अन्य लोगो का स्वागत किया । स्वागत कार्यक्रम में जिलाध्यक्ष सुनील कसौधन प्रधान जयसिंहपुर, नगर अध्यक्ष अनुज अग्रहरि , जिला उपाध्यक्ष राहुल कसौधन, नगर मंत्री अंकुर अग्रहरि, जिला महामंत्री अनिल कसौधन, ब्लाक अध्यक्ष अखण्डनगर पवन अग्रहरि, प्रदेश महामंत्री राज अग्रहरि, युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष दीपक गुप्ता , युवा मोर्चा जिला उपाध्यक्ष मोहित अग्रहरि, कार्यकारणी सदस्य मनीष अग्रहरि, दोस्तपुर ब्लाक अध्यक्ष मुकेश अग्रहरि आदि पदाधिकारी मौजूद रहे।

आस्ट्रेलिया में बुमराह के 50 विकेट लेने के बाद एलन बार्डर ने सराहा

ब्रिस्बेन, 16 दिसंबर। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व टेस्ट कप्तान एलन बॉर्डर ने भारतीय तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को वेस्टइंडीज के महान तेज गेंदबाज मैल्कम मार्शल जितना ही ऊंचा दर्जा दिया है और कहा है कि उन्होंने बुमराह जैसा कोई गेंदबाज नहीं देखा है, जो शायद ही कभी विकेट लिए बिना गेंदबाजी करता हो।

2024 में अपने उल्लेखनीय प्रदर्शन को जारी रखते हुए, जसप्रीत बुमराह ने कपिल देव के बाद ऑस्ट्रेलिया में 50 टेस्ट विकेट लेने वाले केवल दूसरे भारतीय गेंदबाज बनकर एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की।यह उपलब्धि तब हासिल हुई जब उन्होंने चल रहे बॉर्डर–गावस्कर ट्रॉफी के तीसरे टेस्ट के तीसरे दिन मिशेल स्टार्क को आउट किया। उल्लेखनीय है कि 20वीं सदी की शुरुआत से, ऑस्ट्रेलिया में कम से कम 20 विकेट लेने वाले किसी भी गेंदबाज ने बुमराह के असाधारण 17.82 से बेहतर गेंदबाजी औसत नहीं बनाए रखा है।

बुमराह ने 6–76 के शानदार आंकड़े हासिल किए, जिससे मेजबान टीम ने सोमवार को गाबा टेस्ट के तीसरे दिन अपने अंतिम तीन विकेट सिर्फ 40 रन पर गंवा दिए।

बॉर्डर ने न्यूज कॉर्प से कहा, मैं उनकी तुलना मार्शल से ठीक से नहीं कर सकता क्योंकि मैंने कभी बुमराह का सामना नहीं किया, लेकिन उन्हें देखकर लगता है कि दोनों में बहुत अंतर नहीं है। बुमराह असाधारण हैं। वह शायद ही कभी विकेट लिए बिना कोई स्पैल फेंकते हैं। वह अलग हैं।उन्होंने कहा, अपने एक्शन की वजह से, वह गेंद को बाद में छोड़ देते हैं। और वह हर समय मुस्कुराते रहते हैं। वह लगातार तीन बार बल्लेबाज को चकमा दे सकते हैं और हर बार मुस्कुराते हैं। मैंने उनके जैसा कोई नहीं देखा।इससे पहले दूसरे दिन, 31 वर्षीय तेज गेंदबाज ने ऑस्ट्रेलिया में अपना तीसरा टेस्ट पांच विकेट हॉल दर्ज किया। भारतीय गेंदबाजों में, केवल कपिल देव ने ऑस्ट्रेलिया में पांच बार पारी में पांच विकेट हॉल दर्ज किए हैं, जबकि अनिल कुंबले ऑस्ट्रेलियाई धरती पर चार बार पांच विकेट के साथ सूची में दूसरे स्थान पर हैं।टेस्ट क्रिकेट में बुमराह का यह 12वां और एसईएनए देशों (दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया) में आठवां पांच विकेट हॉल था। ऐसा करने वाले वह पहले भारतीय बन गए हैं। बुमराह ने कपिल देव का रिकॉर्ड तोड़ा, जो 7 बार पांच विकेट लेकर इस सूची में दूसरे स्थान पर हैं।ऑस्ट्रेलियाई धरती पर 50 विकेट के साथ बुमराह ऑस्ट्रेलिया में कपिल देव के 51 विकेट के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ सकते हैं। वह बॉर्डर–गावस्कर ट्रॉफी सीरीज के एक संस्करण में सबसे ज्यादा विकेट लेने का रिकॉर्ड भी तोडने की राह पर हैं।मौजूदा सीरीज में उन्होंने दो मैच बाकी रहते 18 विकेट लिए हैं। इससे वह 2001 में भारत में तीन टेस्ट मैचों की सीरीज में हरभजन सिंह के 32 विकेट के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ सकते हैं।

सब्जियों के भाव कम होने से तीन महीने के निचले स्तर पर थोक महंगाई

नई दिल्ली, 16 दिसंबर। नवंबर में थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) आधारित महंगाई नवंबर 2024 में तीन महीने के निचले स्तर 1.89 फीसदी पर आ गई, जबकि अक्टूबर में यह 2.36 फीसदी थी. नवंबर में खाद्य वस्तुओं, खासकर सब्जियों की कीमतों में कमी आने के कारण डब्ल्यूपीआई महंगाई में गिरावट आई है. बता दें कि पिछले साल नवंबर में थोक महंगाई 0.39 फीसदी थी.सरकार ने सोमवार 16 दिसंबर को नवंबर महीने के लिए थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) के आंकड़े जारी किए. कोर महंगाई महीने–दर–महीने 0.3 फीसदी के मुकाबले 0.5 फीसदी रही. अक्टूबर में थोक महंगाई 2.36 फीसदी और सितंबर में 1.84 फीसदी रही.सरकार ने नवंबर में सकारात्मक महंगाई रेट का श्रेय खाद्य पदार्थों, खाद्य उत्पादों, अन्य विनिर्माण, कपड़ा, मशीनरी और उपकरण आदि की कीमतों में बढ़ोतरी को दिया.अक्टूबर 2024 की तुलना में नवंबर 2024 में खनिजों (2.10 फीसदी), गैर–खाद्य वस्तुओं (0.56 फीसदी) और खनिज तेलों (0.72 फीसदी) की कीमतों में बढ़ोतरी हुई. दूसरी ओर, खाद्य वस्तुओं (–1.83 फीसदी), कच्चे पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस (–0.41 फीसदी) और बिजली उत्पादन (–0.07 फीसदी) की कीमत में पिछले महीने की तुलना में नवंबर में गिरावट आई.

थोक मूल्य सूचकांक या डब्ल्यूपीआई थोक व्यापारियों द्वारा अन्य कंपनियों के साथ थोक में बेची और कारोबार की गई वस्तुओं की कीमतों में बदलाव को मापता है. सीपीआई के उलटा जो उपभोक्ताओं द्वारा खरीदी गई वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों को ट्रैक करता है, डब्ल्यूपीआई फैक्ट्री गेट कीमतों और खुदरा कीमतों को ट्रैक करता है.

भारत 51/4, मैच बचाने के लिए बारिश का सहारा

ब्रिस्बेन, 16 दिसंबर। भारत बारिश से प्रभावित तीसरे टेस्ट के तीसरे दिन सोमवार को अपने चार विकेट मात्र 51 रन पर गंवाकर गहरे संकट में फंस गया है। भारत अभी ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी के 445 रन से 394 रन पीछे है। भारत की मैच बचाने की सारी उम्मीदें अब बारिश पर टिकी हुई हैं।वर्षा प्रभावित तीसरे दिन मौसम और खराब रौशनी के कारण अंपायर्स ने स्टंप्स का फैसला ले लिया है। तीसरे दिन का खेल समाप्त होता है। भारतीय टीम मुश्किल में जरूर है लेकिन कल अगर वे कम से कम 60 ओवर की भी बल्लेबाजी कर लेते हैं तो उनके पास यह मैच बचाने का अच्छा खघसा मौका होगा। सबसे जरूरी बात – कल भी बारिश की संभावना है। उससे भी जरूरी बात –परसों भी बारिश की संभावना है।

बारिश के कारण चाय के समय भारत ने 14.1 ओवर में 48ध्4 रन बनाए थे। लगातार बारिश के कारण लंच जल्दी ले लिए जाने के बाद, 11 गेंदों पर पंत और केएल राहुल ने स्ट्राइक रोटेट की, लेकिन फिर से बूंदाबांदी शुरू हो गई। खेल फिर से शुरू होने के बाद, पंत और राहुल ने 4.3 ओवर तक खेला, लेकिन फिर से बारिश ने उन्हें मैदान से बाहर जाने पर मजबूर कर दिया।

बारिश के रुकने के बाद, राहुल ने कमिंस की गेंद पर शानदार ड्राइव लगाकर चौका लगाया। लेकिन कमिंस ने वापसी की और पंत को नौ रन बनाकर एलेक्स कैरी को कैच देने के लिए मजबूर किया।

यह तीसरी बार था जब कमिंस ने इस श्रृंखला में पंत को आउट किया, इससे पहले टेस्ट मैचों में उनका विकेट नहीं लिया था। राहुल ने स्टार्क पर कवर के ऊपर से चौका लगाया, इससे पहले कि वह निराश दिखें और स्टार्क निराश दिख रहे थे क्योंकि बारिश फिर से आ गई और चाय का ब्रेक लेना पड़ा।

स्टंप्स के समय केएल राहुल 64 गेंदों में 33 और कप्तान रोहित शर्मा छह गेंदों में खाता खोले बिना क्रीज पर थे।

इससे पहले मिशेल स्टार्क और जोश हेजलवुड ने भारत के शीर्ष क्रम को एक बार फिर ध्वस्त कर दिया और मेहमान टीम को मुश्किल में डाल दिया।

बारिश के कारण जल्दी लिए गए लंच तक भारत ने 7.2 ओवर में 22ध्3 रन बना लिए थे। भारत की पारी की शुरुआत मिशेल स्टार्क की गेंद पर यशस्वी जायसवाल के बल्ले के बाहरी किनारे पर चौका लगने के साथ हुई। लेकिन अगली ही गेंद पर जायसवाल ने हाफ–वॉली को सीधे स्क्वायर लेग पर फ्लिक किया और चार रन बनाकर आउट हो गए। इस सीरीज में यह तीसरा मौका है जब जायसवाल बाएं हाथ के तेज गेंदबाज स्टार्क का शिकार हुए।

ऑस्ट्रेलिया के गेंदबाजों ने अपनी लंबाई का अच्छा इस्तेमाल किया और असमान उछाल हासिल किया, क्योंकि जोश हेजलवुड ने केएल राहुल को बाएं हाथ पर एक लंबी गेंद डाली। स्टार्क ने शुभमन गिल को वाइड डिलीवरी पर अपने शरीर से दूर जाने दिया और गेंद का बाहरी किनारा मिशेल मार्श ने गली में अपने बाएं तरफ छलांग लगाकर लपक लिया।

विराट कोहली शुरू से ही सहज नहीं दिखे, हेजलवुड ने उन्हें शुरुआत में छकाया, लेकिन स्टार्क की तेज बाउंसर को उन्होंने झेला। हेजलवुड को राहुल ने दो बाउंड्री लगाने के बाद, तेज गेंदबाज ने कोहली को ऑफ–स्टंप के बाहर की गेंद पर शरीर से दूर जाने के लिए प्रेरित किया और गेंद कैरी के पास पहुंच गई, और बारिश के कारण लंच जल्दी लेना पड़ा।

इससे पहले, ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी 445 रन पर समाप्त हुई, जिसमें एलेक्स कैरी ने 70 रन बनाए। जसप्रीत बुमराह ने अपना छठा विकेट लिया, जबकि मोहम्मद सिराज और आकाश दीप ने एक–एक विकेट लेकर ऑस्ट्रेलिया की पारी का अंत किया।

सुबह, बारिश के कारण खेल शुरू होने में पांच मिनट की देरी के बाद, कैरी ने रवींद्र जडेजा को बैकवर्ड स्क्वायर लेग पर चौका लगाकर अपना अर्धशतक पूरा किया।

स्टार्क ने जडेजा और बुमराह की गेंदों पर स्लॉग–स्वीपिंग और बाउंड्री लगाकर कुछ मौज–मस्ती की, लेकिन बाद में बुमराह की गेंद पर विकेट के पीछे कैच आउट हो गए। इससे बुमराह ने ऑस्ट्रेलिया में अपना 50वां टेस्ट विकेट भी हासिल किया, कपिल देव के बाद यह उपलब्धि हासिल करने वाले वे दूसरे भारतीय तेज गेंदबाज बन गए। कैरी ने 15 मिनट की बारिश के व्यवधान के दोनों तरफ आकाश दीप की गेंदों पर बाउंड्री लगाई, इससे पहले सिराज ने नाथन लियोन को फुल और स्ट्रेट डिलीवरी से आउट किया। कैरी ऑस्ट्रेलिया के लिए आउट होने वाले आखिरी खिलाड़ी थे, जिन्होंने आकाश की गेंद पर मिड–विकेट पर पुल किया, जिसे शुभमन गिल ने लपक लिया। कैरी ने 88 गेंदों पर 70 रन बनाये।

संक्षिप्त स्कोररू ऑस्ट्रेलिया 117.1 ओवर में 445 रन (ट्रैविस हेड 152, स्टीव स्मिथ 101य जसप्रीत बुमराह 6–76, मोहम्मद सिराज 2–97), भारत 17 ओवर में 51ध्4 (केएल राहुल नाबाद 33य मिशेल स्टार्क 2–25)

वित्त वर्ष 2025 में भारत का राजकोषीय घाटा बजट अनुमान से कम रहेगा

नई दिल्ली, 16 दिसंबर। वित्त वर्ष 2025 में केंद्र सरकार का राजकोषीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद का 4.8 फीसदी रहने का अनुमान है, जो बजट अनुमान 4.9 फीसदी से थोड़ा कम है. केयरएज रेटिंग्स की एक रिपोर्ट के अनुसार कुछ कमियों के बावजूद इस मामूली सुधार का क्रेडिट हेल्थ टैक्स कलेक्शन को जाता है. रिपोर्ट में बताया गया है कि राजकोषीय घाटे को सकल घरेलू उत्पाद के 4.8 फीसदी पर अनुमानित करते हैं, जो बजट अनुमान 4.9 फीसदी से थोड़ा कम है.रिपोर्ट के मुताबिक सकल कर राजस्व में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) और इनकम टैक्स कलेक्शन में मजबूत प्रदर्शन देखा गया है. इन लाभों ने कॉर्पोरेट टैक्स और केंद्रीय उत्पाद शुल्क में कमजोर संग्रह के प्रभाव को कम करने में मदद की हैहालांकि, केंद्र का पूंजीगत खर्च (कैपेक्स) अपने लक्ष्य से 1.5 ट्रिलियन डॉलर कम रहने की उम्मीद है, जो दीर्घकालिक बुनियादी ढांचे के विकास को प्रभावित कर सकता है. साथ ही पहले सप्लीमेंट ग्रांट के तहत अतिरिक्त आवंटन के कारण राजस्व खर्च बजट अनुमानों से अधिक हो सकता है.रिपोर्ट में कहा गया है कि जीएसटी और आयकर संग्रह में स्वस्थ प्रदर्शन से सकल कर राजस्व को समर्थन मिला है. इससे कॉर्पोरेट कर और केंद्रीय उत्पाद शुल्क संग्रह में कमजोरी को आंशिक रूप से दूर करने में मदद मिली है.रिपोर्ट में कहा गया है कि नाममात्र जीडीपी बढ़ोतरी वित्त वर्ष 25 के लिए बजट में निर्धारित 10.5 फीसदी की तुलना में 9.9 फीसदी कम रहने का अनुमान है. इस नरमी के बावजूद भारत की वास्तविक जीडीपी वृद्धि वित्त वर्ष 25 में 6.5 फीसदी पर स्वस्थ रहने की उम्मीद है.रिपोर्ट में फूड कीमतों के स्थिर होने के साथ उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) महंगाई में नरमी की भी भविष्यवाणी की गई है.

बिना परफ्यूम के भी आपके बाडी से आएगी अच्छी खूशबू, इन टिप्स को करें फालो

कहीं से भीनी–भीनी खुशबू आती है, तो हमारा मन उसकी ओर खुद ही खिंचने लगता है. खुशबू नेचर का हिस्सा है, और हर नेचुरल चीज हमें अपनी ओर आकर्षित करती है. यही वजह है कि एक अच्छी महक हमारे मूड को सुधारने के साथ–साथ हमारे पर्सनालिटी को भी दर्शाती है. अब जरा सोचिए, अगर कोई व्यक्ति महंगे कपड़े पहनता हो, लेकिन उससे गंदी बदबू आ रही हो, तो क्या आप उसके पास खड़े रहना चाहेंगे? शायद नहीं. वहीं, साधारण कपड़े पहनने वाले किसी व्यक्ति से अच्छी खुशबू आती हो, तो वह तुरंत ही आपको प्रभावित कर सकता है.

सुगंध का चलन युगों पुराना है. पहले के समय में लोग फूलों और प्राकृतिक जड़ी–बूटियों का इस्तेमाल करके नहाने के पानी को महकदार बनाते थे. इसके अलावा, सुगंधित लकडियों को जलाकर उनके धुएं से बालों और वातावरण को महकाया जाता था. पुदीना, गुलाब, नींबू और चमेली जैसे फूलों और हर्ब्स का इस्तेमाल त्वचा और वातावरण को खुशबूदार बनाए रखने के लिए किया जाता था.

आजकल परफ्यूम और इत्र का चलन बढ़ गया है, लेकिन इनमें मौजूद केमिकल्स कई बार एलर्जी का कारण बन सकते हैं. ऐसे में नैचुरस तरीकों से खुशबू बने रहना न सिर्फ सेहत के लिए बेहतर है, बल्कि यह आपकी स्किन और पर्सनालिटी दोनों को संवारता है. तो हम आपको बताने जा रहे हैं नैचुरल तरीकों से खुशबूदार बनने की टिप्स

ओरल हाईजीन का रखें ध्यान

अच्छी सुगंध के लिए सबसे पहले अपनी साफ–सफाई का ख्याल रखें. दिन में दो बार ब्रश करें और माउथवॉश का इस्तेमाल करें. अगर पेट खराब हो या सर्दी–जुकाम हो, तो सही उपचार करें, क्योंकि इनसे भी मुंह से दुर्गंध आ सकती है.

पानी पिएं पर्याप्त मात्रा में

सर्दियों में पानी कम पीने की आदत पसीने से दुर्गंध का कारण बन सकती है. चाहे मौसम कोई भी हो, शरीर को हाइड्रेटेड रखना जरूरी है.

संतुलित आहार का सेवन करें

तले हुए और बाहरी भोजन से परहेज करें. हेल्दी डाइट न केवल शरीर को फिट रखती है, बल्कि शरीर से निकलने वाली गंध को भी नियंत्रित करती है.

डिओडोरेंट बाम का इस्तेमाल करें

केमिकल–फ्री डिओडोरेंट बाम पसीने की दुर्गंध रोकने में मददगार होते हैं और आपकी त्वचा पर भी कोमल रहते हैं.

खुशबूदार बॉडी ऑयल और एसेंशियल ऑयल का इस्तेमाल करें

बाजार में कई तरह के खुशबूदार बॉडी ऑयल उपलब्ध हैं. ये त्वचा को नमी देने के साथ–साथ प्राकृतिक खुशबू भी प्रदान करते हैं. आप एसेंशियल ऑयल का इस्तेमाल बालों और कपड़ों में भी कर सकते हैं.

अडाणी की संपत्ति में 40 बिलियन डालर की गिरावट, अंबानी को भी बड़ा नुकसान

नई दिल्ली, 16 दिसंबर। भारत के सबसे अमीर शख्सियत मुकेश अंबानी और गौतम अडाणी प्रमुख व्यावसायिक चुनौतियों के कारण 2024 में ब्लूमबर्ग के एलीट 100 बिलियन डॉलर क्लब से बाहर हो गए हैं. इस सूची में वे व्यक्ति शामिल हैं, जिनकी कुल संपत्ति 100 बिलियन से अधिक है. गौरतलब है कि भारत के दोनों उद्योगपतियों की संपत्ति में पिछले साल काफी कमी आई है.

रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर मुकेश अंबानी को भी झटका लगा है, क्योंकि उनके ग्रुप के एनर्जी और रिटेल डिविजन ने खराब प्रदर्शन किया है. बढ़ते कर्ज को लेकर निवेशकों की चिंताओं ने उनकी संपत्ति पर और दबाव डाला है. ब्लूमबर्ग बिलियनेयर्स इंडेक्स (बीबीआई) के अनुसार, जुलाई में उनकी संपत्ति 120.8 बिलियन डॉलर थी, जो घटकर 13 दिसंबर तक 96.7 बिलियन डॉलर रह गई.

गौतम अडाणी के लिए चुनौतियां और भी अधिक हैं. उनका साम्राज्य अमेरिकी न्याय विभाग की जांच का सामना कर रहा है. नवंबर में की गई जांच और इस साल की शुरुआत में हिंडनबर्ग रिसर्च रिपोर्ट में लगाए गए आरोपों के नतीजों ने उनकी टेंशन को और बढ़ा दिया है. नतीजतन, बीबीआई के आंकड़ों के अनुसार, अडानी की कुल संपत्ति जो जून में 122.3 बिलियन डॉलर थी वे गिरकर 82.1 बिलियन डॉलर हो गई है.

इन झटकों के बावजूद भारत के सबसे अमीर व्यक्तियों ने कुल मिलाकर लाभ देखा. देश के टॉप 20 अरबपतियों ने सामूहिक रूप से 2024 में अपनी संपत्ति में 67.3 बिलियन डॉलर जोड़े, जिसमें टेक दिग्गज शिव नादर और उद्योगपति सावित्री जिंदल सबसे बड़े लाभार्थी बनकर उभरे, जिन्होंने क्रमशरू 10.8 बिलियन और 10.1 बिलियन डॉलर की संपत्ति अर्जित की.

रिपोर्ट में वैश्विक और घरेलू फैक्टर के कारण भारतीय व्यापारिक दिग्गजों के लिए अतिरिक्त अनिश्चितता को उजागर किया गया है. अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का आगामी प्रशासन वैश्विक आर्थिक नीतियों को नया रूप दे सकता है, जबकि भारत के सैटेलाइट ब्रॉडबैंड बाजार में एलन मस्क के स्टारलिंक के संभावित प्रवेश से देश के टेलीकॉम सेक्टर के लिए एक प्रतिस्पर्धी खतरा पैदा हो सकता है.

ब्लूमबर्ग की 2024 की सबसे अमीर परिवारों की लिस्ट के मुताबिक एलोन मस्क दुनिया के सबसे अमीर शख्स हैं, जनके पास कुल 439 बिलियन डॉलर की संपत्ति है. उसके बाद जेफ बेजोस का नंबर है, जिनके पास कुल 241 बिलियन डॉलर की संपत्ति है. वहीं, लैरी एलिसन, मार्क जुकरबर्ग और बर्नार्ड अर्नाल्ट का नाम भी इस लिस्ट में शामिल है.

मानसिक स्वास्थ्य को लेकर हैं चिंतित, इन आदतों को सुधारें, नहीं तो होगा नुकसान

आजकल सबकी जिंदगी इतनी फास्ट हो गई है कि हम अपनी मेंटल हेल्थ पर ध्यान ही नहीं दे पाते हैं. जब तक कुछ बहुत बड़ा नहीं हो जाता, हम सोचते रहते हैं कि सब ठीक है. लेकिन असल में, मानसिक रुप से स्वास्थ्य रहना उतना ही जरूरी है जितना शारीरिक रुप से स्वास्थ्य रहना. अगर हम मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं हैं, तो हमारी बाकी जिंदगी भी ठीक से नहीं चल सकती. तो आइए आज हम बात करते हैं कि कैसे अपनी मानसिक सेहत का ध्यान रखें और क्या आदतें हमारी सेहत को बिगाड़ सकती हैं.

मेंटल हेल्थ की समस्याएं

हम क्या खाते हैं, हमारी दिनचर्या कैसी है, और हम कब सोते हैं, इन सबका असर हमारी मेंटल हेल्थ पर पड़ता है. अगर हम सही से नहीं सोते, हमारे मन में निगेटिव बिचार आते हैं या हम सोचते हैं और साथ मे गलत खानपान रखते हैं. तो हमारी मानसिक स्थिति बिगड़ सकती है. हमें इन आदतों को पहचानकर सुधारने की कोशिश करनी चाहिए. सही दिनचर्या और अच्छे विचारों से हम अपनी मानसिक सेहत को ठीक रख सकते हैं.

सोशल मीडिया का असर

आजकल के समय में सब लोग मोबाइल पर लगे रहते हैं, खासकर सोशल मीडिया पर. लेकिन क्या आप जानते हैं, यह हमारी मेंटल हेल्थ के लिए सही नहीं है? अधिक समय सोशल मीडिया पर बिताने से मानसिक समस्याएं बढ़ सकती हैं. सोशल मीडिया से थोड़ा दूर रहना जरूरी है.

सोच को सकारात्मक रखें

कभी–कभी हम खुद को नकारात्मक तरीके से सोचते हैं, जैसे मैं यह नहीं कर सकता या मैं अच्छा नहीं हूं. ऐसे बिचार हमारी मानसिक स्थिति को और खराब कर सकता है. इसलिए, हमें अपनी सोच को सकारात्मक रखना चाहिए. अच्छे विचारों से हम अपनी मानसिक स्थिति को बेहतर बना सकते हैं.

नींद का महत्व

क्या आप जानते हैं कि नींद भी हमारी मानसिक सेहत को प्रभावित करती है? अगर हम सही से नहीं सोते, तो हमारी याददाश्त कमजोर हो सकती है और तनाव भी बढ़ सकता है. इसलिए हमें हर दिन 7 से 9 घंटे की नींद लेनी चाहिए. सोने से पहले स्क्रीन टाइम कम करें और एक शांत वातावरण में सोने की कोशिश करें

मेंटल हेल्थ को ठीक रखना बहुत जरूरी है. इसके लिए हमें अपनी आदतों को सुधारने की जरूरत है, जैसे सही दिनचर्या अपनाना, सोशल मीडिया से थोड़ा दूर रहना और सकारात्मक सोच रखना. इससे हम मानसिक रूप से स्वस्थ रह सकते हैं और खुशहाल जिंदगी जी सकते हैं.

००

रेड जोन में खुला शेयर बाजार, सेंसेक्स 132 अंक लुढका, निफ्टी 24,753 पर

मुंबई,16 दिसंबर। कारोबारी सप्ताह के पहले दिन शेयर बाजार रेड जोन में खुला. बीएसई पर सेंसेक्स 132 अंकों की गिरावट के साथ 82,000.31 पर ओपन हुआ. वहीं, एनएसई पर निफ्टी 0.06 फीसदी की गिरावट के साथ 24,753.40 पर खुला.

जिंका लॉजिस्टिक्स सॉल्यूशंस, रिलायंस इंडस्ट्रीज, जीएमएम फॉडलर, गोदरेज एग्रोवेट, अरबिंदो फार्मा, जेएसडब्ल्यू एनर्जी, भारत फोर्ज, जयप्रकाश पावर वेंचर्स, प्रीमियर एक्सप्लोसिव्स और नवीन फ्लोरीन इंटरनेशनल जैसे स्टॉक भी आज फोकस में रहेंगे.

आज के कारोबार के दौरान निफ्टी पर हिंडाल्को, श्रीराम फाइनेंस, रिलायंस इंडस्ट्रीज, सिप्ला, टाटा स्टील के शेयर बढ़ोतरी के साथ कारोबार के दौरान, जबकि टाइटन कंपनी, जेएसडब्ल्यू स्टील, एनटीपीसी, टेक महिंद्रा, एचयूएल के शेयर गिरावट के साथ कारोबार कर रहे.

कारोबारी सप्ताह के आखिरी दिन शेयर बाजार ने सुबह की गिरावट को रिकवर कर के बंद हुआ. बीएसई पर सेंसेक्स 843 अंकों की उछाल के साथ 82,133.12 पर क्लोज हुआ. वहीं, एनएसई पर निफ्टी 0.89 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ 24,768.30 पर बंद हुआ.

कारोबार के दौरान निफ्टी पर भारती एयरटेल, कोटक महिंद्रा बैंक, आईटीसी, अल्ट्राटेक सीमेंट, टाइटन कंपनी के शेयर टॉप गेनर के लिस्ट में शामिल रहे. जबकि श्रीराम फाइनेंस, इंडसइंड बैंक, टाटा स्टील, हिंडाल्को, ट्रेंट के शेयर टॉप लूजर के लिस्ट में शामिल रहे.

बीएसई मिडकैप और स्मॉलकैप इंडेक्स सपाट कारोबार किए. सेक्टोरल फ्रंट पर ऑटो, बैंक, एफएमसीजी, टेलीकॉम में 0.5–2 फीसदी की तेजी आई, जबकि मेटल और मीडिया में 0.5 फीसदी की गिरावट आई.

दीया मिर्जा की पहली फिल्म दुबारा रिलीज

दीया मिर्जा बॉलीवुड की खूबसूरत और टैलेंटेड हीरोइनों में से एक हैं। हाल ही में उनकी पहली फिल्म 'रहना है तेरे दिल में' दोबारा रिलीज हुई, जिस पर ऑडियंस ने खूब प्यार लुटाया। इस बीच दीया मिर्जा ने कहा कि अगर उनकी सलमान खान के साथ फिल्म 'तुमको ना भूल पाएंगे' फिर से थिएटर्स में दस्तक देती है, तो उसे भी दर्शकों से बहुत प्यार मिल सकता है। एक इंटरव्यू के दौरान दीया ने सलमान के साथ काम करने का एक्सपीरियंस शेयर किया। उन्होंने बताया कि किस तरह सलमान खान सेट पर उनकी केयर करते थे क्योंकि वह फिल्म इंडस्ट्री में नई थीं।

एक इंटरव्यू में दीया मिर्जा ने 'तुमको ना भूल पाएंगे' फिल्म की शूटिंग को लेकर बात की। दीया मिर्जा ने राजस्थान में सलमान खान के साथ शूटिंग का एक्सपीरियंस शेयर किया, जहां सैकड़ों लोग उन्हें घेर लेते थे, लेकिन सलमान ने सुनिश्चित किया कि दीया सेफ रहें। दीया मिर्जा ने बताया, 'आजकल सेट पर जो जेंडर बैलेंस दिखता है, वो उन दिनों में नहीं था। जब तक सेट पर महिला डांसर नहीं होती थीं, वहां मुश्किल से ही महिलाएं होती थीं। यह एक पुरुष–प्रधान जगह थी। मुझे याद है कि सलमान बहुत ही प्रोटेक्टिव और बहुत ही केयर करने वाले थे।' उन्होंने बताया, 'हम राजस्थान में बिंदिया चमके चूड़ी खनके गाने की शूटिंग कर रहे थे। एक दिन जब हम वापस आ रहे थे, सैकड़ों लोग हमारा पीछा कर रहे थे। वे चिल्ला रहे थे और सीटी बजा रहे थे और यह काफी ज्यादा था। सलमान और मुझे सिक्योरिटी के साथ एक कार में भेजा गया ताकि हम सुरक्षित रहें क्योंकि जहां हम शूटिंग कर रहे थे, वह जगह बहुत भीड़भाड़ वाली थी। मैं कभी नहीं भूल पाऊंगी कि उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि मुझे पहले कार में बिठाया जाए। ¼fgQ½

राशि खन्ना आईएमडीबी की लोकप्रिय भारतीय सेलिब्रिटी की साप्ताहिक लिस्ट में बनाई अपनी जगह

राशि खन्ना ने इस सप्ताह आईएमडीबी की ट्रेंडिंग सूची में स्थान हासिल करके एक बार फिर अपना पैन इंडिया स्टारडम साबित किया है। यह प्रतिष्ठित फीचर वैश्विक स्तर पर धूम मचाने वाले भारतीय सितारों को उजागर करता है, जो अभिनेताओं, निर्देशकों, लेखकों और अन्य को उनके प्रभाव और अपील के लिए मान्यता देती हैं। राशि का सूची में शामिल होना उनकी बढ़ती लोकप्रियता और दर्शकों से मिली प्रशंसा को दर्शाता है। उन्होंने हाल ही में द साबरमती रिपोर्ट में निडर पत्रकार अमृता गिल की भूमिका निभाते हुए एक शक्तिशाली प्रदर्शन किया। राशी के दिलचस्प चित्रण को दर्शकों और आलोचकों से व्यापक प्रशंसा मिली, जिससे एक बहुमुखी कलाकार के रूप में उनकी स्थिति और मजबूत हो गई।

विक्रांत मैसी के साथ स्क्रीन स्पेस साझा करते हुए, जिन्होंने एक पत्रकार की भूमिका भी निभाई, उनकी ऑन–स्क्रीन केमिस्ट्री ने फिल्म की मनोरंजक कहानी में गहराई जोड़ दी। गोधरा के पास साबरमती एक्सप्रेस घटना के आसपास की दुखद घटनाओं पर आधारित, यह फिल्म इतिहास के एक महत्वपूर्ण अध्याय पर प्रकाश डालती है, जिसमें राशी का प्रदर्शन एक आकर्षण के रूप में सामने आता है। इसके अलावा राशि अपनी आगामी फिल्म तलाखों में एक में विक्रांत मैसी के साथ फिर से जुडने के लिए तैयार है, जो एक और आकर्षक सहयोग होने का वादा करती है।

इसके अतिरिक्त, वह अपनी तेलुगु फिल्म तेलुसु कड़ा की रिलीज के लिए तैयारी कर रही हैं। आईएमडीबी की ट्रेंडिंग सूची में राशी की उपस्थिति न केवल उनकी अपार प्रतिभा को रेखांकित करती है, बल्कि उन्हें भारतीय मनोरंजन परिदृश्य में सबसे अधिक मांग वाले सितारों में से एक के रूप में भी चिह्नित करती है।

जेलर 2 के प्रोमो शूट से पहले रजनीकांत का धमाका, ब्रेकिंग बैड से इंस्पायर्ड पोस्टर किए रिलीज

हैदराबादरू रजनीकांत की जेलर 2 मोस्ट अवेटेड फिल्मों में से एक है और हो भी क्यों ना जेलर ने बॉक्स ऑफिस पर शानदार प्रदर्शन किया था. सीक्वल के लिए अनुमानित प्रोमो शूट से पहले, प्रोडक्शन हाउस सन पिक्चर्स ने अब जेलर कलाकारों के लिए शानदार पोस्टरों की एक सीरीज को लॉन्च किया है, जो हिट अमेरिकी नेटफ्लिक्स सीरीज ब्रेकिंग बैड से प्रेरित है.

पोस्टर्स दिखने में वाकई कमाल के लग रहे हैं पोस्टर पर टैगलाइन लिखी है मैखतरे में नहीं हूं मैं खतरा हूं अन्य पोस्टर्स में उनके को–एक्टर्स और मोहनलाल, शिवराजकुमार, जैकी श्रॉफ और विनायकन के किलर पोज जबरदस्त लग रहे हैंरिपोर्ट्स के मुताबिक नेल्सन दिलीपकुमार 5 दिसंबर को सुपरस्टार रजनीकांत के साथ फिल्म का प्रोमो शूट करने की योजना बना रहे है रिपोर्ट्स के मुताबिक नया प्रोमो रजनीकांत के 74 वेंजन्मदिन पर रिलीज किया जाएगा. प्रोमो शूट चेन्नई में होने की उम्मीद है हालांकि फैंस यह जानने के लिए उत्सुक है कि प्रोमो में वास्तव में क्या होगा. नेल्सन दिलीपकुमार की 2023 की ब्लॉकबस्टर जेलर ने कई रिकॉर्ड तोड़े थे साथ ही फिल्म दर्शकों और क्रिटीक्स को काफी पसंद आई थी. रिपोर्ट्स के मुताबिक रजनीकांत के पूर्व दामाद धनुष से सीक्वल में एक अहम रोल के लिए कॉन्ट्रेक्ट किया गया है हालांकि ऑफिशियल पुष्टि अभी बाकी हैजेलर 2 रजनीकांत की सुपर–हिट 2023 क्राइम–थ्रिलर जेलर का सीक्वल है एक्टर ने फिल्म में एक रिटायर्ड पुलिसकर्मी की भूमिका निभाई. फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर जबरदस्त परफॉर्म करते हुए दुनियाभर में 600 करोड़ रुपये से ज्यादा का कलेक्शन किया. जो तमिलनाडु समेत सुपरस्टार के लंबे करियर की सबसे बड़ी हिट फिल्मों में से एक बन गई. फिल्म में थलाइवा के साथ मोहनलाल, शिवा राजकुमार, राम्या कृष्णन, जैकी श्रॉफ, तमन्ना भाटिया, योगी बाबू और वसंत रवि जैसे कलाकार शामिल हैं

००

शिल्पा व राजकुंद्रा के कई डिवाइस सीज

परवर्तन निदेशालय (ईडी) ने 29 नवम्बर को एक्ट्रेस शिल्पा शेट्टी और उनके पति राज कुंद्रा के मुंबई स्थित बंगले और ऑफिस में छापेमारी की। इसके अलावा, ईडी ने महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश के 15 जगहों पर छापेमारी की। इस छापेमारी में ईडी अधिकारियों डिजिटल और इलेक्ट्रोनिक डिवाइस को सीज किया, जोकि पोर्नोग्राफी मामले से जुड़े हैं। इसके अलावा उनके कुछ बैंक अकाउंट को भी फ्रीज कर दिया। यह छापेमारी उनके खिलाफ पोर्नोग्राफी नेटवर्क मामले से जुड़ी मनी लॉन्ड्रिंग जांच के सिलसिले में की गई। राज कुंद्रा को जून 2021 में कथित तौर पर अश्लील फिल्में बनाने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। बाद में दो महीने जेल में बिताने के बाद उन्हें सितंबर 2021 में जमानत मिल गई। इसके बाद से इस मामले की जांच चल रही है। ईडी ने कुछ आरोपियों के बैंक खाते को फ्रीज किया है। वह अब इन खातों से पैसों को लेनदेन नहीं कर सकते हैं। ईडी की टीम ने मुंबई लखनऊ और प्रयागराज से संयुक्त रूप से छापेमारी की।

ईडी के सूत्र के मुताबिक, कठकुइयां के रोहित चौरसिया को नोटिस जारी कर 4 दिसंबर को मुंबई ईडी कार्यालय में तलब किया गया है। रोहित चौरसिया होगी विस्तार से पूछताछ होगी। शिल्पा शेट्टी और राज कुंद्रा से जुड़े मामले में सर्च ऑपरेशन की कार्रवाई हुई पूरी लेकिन तफ्तीश जारी है। उत्तरप्रदेश के कुशीनगर में रहने वाले एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर है जांच एजेंसी के रडार पर हैं। विस्तार से पूछताछ के बाद उनके खिलाफ आज बड़ी कार्रवाई हो सकती है।

जांच एजेंसी के रडार पर अरविंद श्रीवास्तव और उससे जुड़े कई लोग भी हैं। अरविंद श्रीवास्तव मूल रूप से उत्तर प्रदेश के कानपुर इलाके का रहने वाला है। कानपुर में ईडी ने श्यामनगर में अरविंद श्रीवास्तव के घर में छापेमारी की थी। पिछले काफी समय से सिंगापुर में रह रहा अरविंद ही कुंद्रा का प्रोडक्शन हाउस संभालता था। सूत्र के मुताबिक आरोप है कि अश्लील फिल्मों की करोड़ों रुपये की काली कमाई खपाने को अरविंद श्रीवास्तव ने अपनी पत्नी व पिता के बैंक खातों का प्रयोग किया। ईडी ने राज कुंद्रा के सहयोगियों के घरों पर भी छापेमारी की और कुशीनगर से एक सॉफ्टवेयर के यहां भी सर्च ऑपरेशनल चलाया गया। कुशीनगर स्थित पडरौना की राजपूत कालोनी व कुबेरस्थान के कठकुइयां में दो संदिग्धों से 12 घंटे पूछताछ चली। हालांकि इस मामले में जांच एजेंसी के सूत्र का कहना है कि तफ्तीश जारी है। ¼fgQ½

प्रियंका चोपड़ा का सात साल की उम्र से ही छूट गया था बाबुल

प्रियंका चोपड़ा आज नहीं 7 साल की उम्र से घर से दूर हैं। एक वक्त था कि वो बेटी की याद में मां मधु चोपड़ा उसके पास दौड़ी चली जाती थी, लेकिन अब बेटी के पास जाने के लिए उन्हें प्लानिंग करनी पड़ती है। हाल ही में मधु चोपड़ा ने अपने उस फैसले के बारे में जिक्र किया, जिसका उन्हें आज भी पछतावा होता है।

दरअसल, मधु चोपड़ा 'समथिंग बिगर टॉक शो' पॉडकास्ट के होस्ट रोड्रिगो कैनेलस के साथ बातचीत कर रही थीं। उन्होंने बताया कि बेटी प्रियंका को सात साल की उम्र में बोर्डिंग स्कूल भेज दिया था, जिसको लेकर उन्हें आज भी अफसोस होता है। प्रियंका चोपड़ा अपनी मां मधु चोपड़ा के बेहद करीब हैं। दोनों अक्सर एक–दूसरे के लिए पोस्ट शेयर करती रही हैं। मां से भले प्रियंका दूर हैं, लेकिन दोनों का बॉन्ड इसी से पता चलती है कि हर बात में दोनों एक दूसरे का जिक्र करती हैं। मधु चोपड़ा ने कहा कि उनका यह फैसला गर्व और अफसोस दोनों से भरा है। हालांकि, यह एक अफसोसजनक फैसला था, लेकिन प्रियंका ठीक निकलीं और वह अपने पैरों पर खड़ी हो गईं।

ब्लैक आउटफिट पहन नेहा मलिक ने दिखाया बोल्ड अवतार, भोजपुरी क्वीन की हाटनेस देख फैंस के उड़े होश

भोजपुरी एक्ट्रेस नेहा मलिक आए दिन अपनी हॉटनेस और बोल्डनेस से सोशल मीडिया का पारा बढ़ाती रहती हैं। उनका हर एक लुक इंटरनेट पर आते ही तेजी से वायरल होने लगता है। अब हाल ही में एक्ट्रेस नेहा मलिक ने अपने लेटेस्ट किलर फोटोशूट की तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट की हैं। इन फोटोज में उनका किलर लुक देखकर फैंस के होश उड़ गए हैं।

एक्ट्रेस नेहा मलिक सोशल मीडिया पर कुछ भी पोस्ट करती है तो वो तेजी से वायरल होने लगती है। अब हाल ही में एक्ट्रेस ने अपने लेटेस्ट हॉट फोटोशूट की तस्वीरें पोस्ट की हैं।

इन फोटोज में आप देख सकते हैं एक्ट्रेस बेहद ही स्टनिंग लुक में पोज देती हुई एक से बढकर एक पोज देते हुए इंटरनेट का तापमान बढ़ा रही हैं। नेहा मलिक की इन फोटोज में आप देख सकते हैं उन्होंने ब्लैक कलर का बेहद ही स्टाइलिश जैकेट और ब्लैक पेंट पहना हुआ है।बालों की पोनीटेल बांधकर और लाइट मेकअप कर के एक्ट्रेस नेहा मलिक ने अपने आउटलुक को कंप्लीट किया है।बता दें कि नेहा मलिक जब भी अपनी फोटोज इंस्टाग्राम पर पोस्ट करती हैं तो फैंस उनकी हर एक तस्वीरों पर लाइक्स और कॉमेंट्स करते हुए नहीं थकते हैं। हालांकि इन फोटोज में भी ऐसा ही देखने को मिल रहा है।

हिन्दी दैनिक विजडम इंडिया
स्वामी,मुद्रक एवं प्रकाशक श्री शील कुमार शुक्ला द्वारा हिन्दुस्तान समाचार फीचर सेवा लि0 ,94, एम0जी0 मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ से छपवाकर 633/387,गेहमर कुंज कालोनी, फैजाबाद रोड, चिनहट, लखनऊ उ0प्र0 से प्रकाशित।
सम्पादक–शील कुमार शुक्ला
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ मान्य होगा।